इकाई v पाठ्यचर्या अध्ययन

पाठ्यचर्या की संकल्पना तथा सिद्धान्त 3

पाठ्यचर्या की संकल्पना (Concept of Curriculum) 3

पाठ्यचर्या का अर्थ एवं परिभाषाएँ 4

पाठ्यचर्या के उद्देश्य 5

पाठ्यचर्या निर्माण के आधारभूत सिद्धान्त 6

पाठ्यचर्या विकास की कार्यनीति 9

पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया की अवस्थाएँ 9

शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण 10

शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण 11

विषय-वस्तु के चयन के मापदण्ड 11

विषयवस्तु का गठन 12

अधिगम अनुभवों का चयन 12

पाठ्यचर्या का मूल्यांकन 12

छात्र मूल्यांकन 13

पाठ्यचर्या मूल्यांकन 13

पाठ्यक्रम नियोजन की आधारशिला (Foundations of Curriculum Planning) 14

पाठ्यक्रम नियोजन के दार्शनिक आधार (राष्ट्रीय लोकतन्त्रीय) 14

आदर्शवाद और पाठ्यक्रम 15

प्रयोजनवाद और पाठ्यक्रम 15

यथार्थवाद और पाठ्यक्रम 16

अस्तित्ववाद और पाठ्यक्रम 16

राष्ट्रीय एवं लोकतान्त्रिक दार्शनिक 16

पाठ्यक्रम नियोजन के समाजशास्त्रीय आधार (सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्निर्माण) 17

सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का पुनर्निर्माण 19

शिक्षा सामाजिक संस्था के रूप में 20

वर्तमान पाठ्यक्रम 20

पाठ्यक्रम नियोजन के मनोवैज्ञानिक आधार अध्येता की आवश्यकताएँ और अभिरुचियाँ) 21

पेस्टालॉजी का शैक्षणिक सिद्धान्त 21

बाल केन्द्रित शिक्षा पाठ्यक्रम 21

www.studyofeducation.com

बेंचमार्किंग तथा राष्ट्र स्तरीय सांविधिक निकायों की भूमिका 23

पाठ्यचर्या विकास में UGC की भूमिका 24

पाठ्यचर्या विकास में NCTE की भूमिका 24

पाठ्यचर्या विकास में विश्वविद्यालयों की भूमिक 25

पाठ्यचर्या अभिकल्प के मॉडल 26

पाठ्यचर्या अभिकल्प (curriculum Designs) 26

पाठ्यचर्या अभिकल्प के विभिन्न मॉडल 26

परम्परागत मॉडल (Traditional Model) 27

1. विषय केन्द्रित मॉडल 28

2. विद्यार्थी केन्द्रित मॉडल 29

3. समस्या केन्द्रित मॉडल 30

शैक्षिक एवं विषय आधारित पाठ्यक्रम मॉडल (Academic/Disciplinary Based Model) 31

सक्षमता आधारित मॉडल (Competency Base Model) 32

सामाजिक कार्य/क्रियाकलाप मॉडल (सामाजिक पुनर्निर्माण) 33

वैयक्तिक आवश्यकताएँ तथा अभिरुचि मॉडल 35

अभिरुचि पाठ्यक्रम मॉडल 35

परिणाम आधारित एकीकृत पाठ्यक्रम मॉडल 36

अध्यापक की भूमिका 37

हस्तक्षेप मॉडल (Intervention Model) 38

कांटेक्स्ट, इनपुट, प्रोसेस एण्ड प्रोडक्ट मॉडल (CIPP Model) 39

पाठ्यचर्या और अनुदेश 41

अनुदेशात्मक प्रणाली (Instructional System) 41

अनुदेशात्मक प्रणाली के सोपान 42

अनुदेशात्मक मीडिया (Instructional Media) 42

पाठ्यचर्या संव्यवहार में सहायक अनुदेशात्मक तकनीकें और सामग्री 43

प्रमुख अनुदेशात्मक तकनीकें 44

कम्प्यूटर एवं वेब आधारित अनुदेश 50

अनुदेशात्मक सामग्री 51

पाठ्यचर्या मूल्यांकन (Evaluation of Curriculum) 56

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उपागम (Approaches of Curriculum Evaluation) 56

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या और अनुदेश के उपागम (Approaches of Curriculum and Instruction) 58
सक्षमता आधारित उपागम की प्रवृत्तियाँ 60
पाठ्यचर्या मूल्यांकन के मॉडल (Models of Curriculum Evaluation) 61
टॉयलर का मॉडल 61
स्टेक का मॉडल 62
स्क्रीवेन का मॉडल 64
किर्कपैट्रिक का मॉडल 65
पाठ्यचर्या में परिवर्तन 66
पाठ्यचर्या परिवर्तन का अर्थ 66
पाठ्यचर्या परिवर्तन के प्रकार 67
पाठ्यक्रम में परिवर्तन की प्रक्रिया 68
पाठ्यक्रम परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक 69
पाठ्यचर्या परिवर्तन के उपागम (Approaches to Curriculum Change) 70
विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा शैक्षणिक प्रशासकों की भूमिका 72
विद्यार्थियों की भूमिका 72
अध्यापक की भूमिका 73
शैक्षणिक प्रशासकों की भूमिका 73
पाठ्यचर्या शोध का विषय क्षेत्र (Scope of Curriculum Research) 74
पाठ्यचर्या अध्ययनों में शोध के प्रकार 75

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या की संकल्पना तथा सिद्धान्त

पाठ्यचर्या की संकल्पना (Concept of Curriculum)

पाठ्यचर्या विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु है। विद्यालय में उपलब्ध सभी संसाधन; जैसे-विद्यालय भवन, पुस्तकालय की पुस्तकें, विद्यालय के उपकरण तथा अन्य शिक्षण सामग्री का एकमात्र उद्देश्य पाठ्यचर्या के प्रभावी क्रियान्वयन में सहयोग देना है। कक्षा की समस्त क्रियाएँ, पाठ्य सहगामी क्रियाकलाप तथा मूल्यांकन की समस्त प्रक्रियाएँ विद्यालयी पाठ्यचर्या के परिणामस्वरुप ही नियोजित की जाती हैं।

पाठ्यचर्या शिक्षा का आधार है। पाठ्यचर्या द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति होती है। यह एक ऐसा साधन है, जो छात्र तथा अध्यापक को जोड़ता है। अध्यापक, पाठ्यचर्या के माध्यम से ही छात्रों के मानसिक, सामाजिक, शारीरिक, नैतिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक विकास के लिए प्रयास करता है। पाठ्यचर्या के द्वारा छात्रों को जीवन जीने की शिक्षा प्राप्त होती है। इससे अध्यापकों को दिशा-निर्देश प्राप्त होते हैं। छात्रों के लिए दिशा-निर्देश प्राप्त होने से उनमें एकाग्रता आती है।

प्रत्येक सभ्य समाज अपनी युवा पीढ़ी के समाजीकरण हेतु एक निश्चित शैक्षिक कार्यक्रम का नियोजन करता है। इन सभी शैक्षिक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन विद्यालयों के माध्यम से किया जाता है। इन सभी शैक्षिक कार्यक्रमों का शैक्षिक व्यवहार किस प्रकार किया जाए, इस सम्बन्ध में विद्वानों में काफी मतभेद हैं। इस सन्दर्भ में अरस्तू ने कहा में था कि "जो स्थितियाँ हैं मानव समाज इनके शिक्षण के प्रति न तो एकमत हैं और न ही शिक्षण के लिए अपनाए जाने वाले साधनों के प्रति ही।"

पाठ्यचर्या में किसी भी कक्षा के निहित विषयों के अतिरिक्त स्कूल के समस्त कार्यक्रम आते हैं। पाठ्यचर्या की संकल्पना के सन्दर्भ में सबसे चर्चित परिभाषा कनिंघम की मानी जाती है।

रुपी स्कूल कनिंघम के अनुसार, "पाठ्यचर्या अध्यापक रुपी कलाकार के हाथ में वह साधन है जिसके माध्यम से वह अपने पदार्थ रुपी शिष्य को अपने कलागृह में अपने आदर्श के अनुसार रुप प्रदान करता है।" इसमें सन्देह नहीं कि कलाकार को अपने पदार्थों को अपने आदर्शों के अनुरुप ढालने की स्वतन्त्रता है, क्योंकि कलाकार का पदार्थ निर्जीव है, परन्तु स्कूल में अध्यापक का पदार्थ अर्थात् छात्र सजीव है। पुराने समय में जब आकांक्षाएँ सीमित थी, साधन सीमित थे, तब अध्यापकों को अपने छात्रों को नया रुप देने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी, परन्तु अब बदलती हुई परिस्थितियों में अध्यापक की यह भूमिका भी बदल गई है, किन्तु फिर भी निश्चय ही अध्यापक के हाथों में पाठ्यचर्या एक महत्त्वपूर्ण साधन है।

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या का अर्थ एवं परिभाषाएँ

'कुरीकुलम' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'क्यूरेरे' (Currere) से हुई है जिसका अर्थ है-दौड़ का मैदान (Race Course)। इस प्रकार पाठ्यचर्या, वह दौड़ का मैदान है, जिस पर विद्यार्थी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दौड़ता है। पाठ्यचर्या की आधुनिक अवधारणा के अन्तर्गत यह कहा जा सकता है कि किसी भी कक्षा-शिक्षण के अन्तर्गत जो सैद्धान्तिक और क्रियात्मक ज्ञान एक निश्चित सीमा में छात्रों को दिया जाता है, उसे **पाठ्यचर्या** कहते हैं।

माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार "पाठ्यचर्या का अर्थ केवल उन सैद्धान्तिक विषयों से नहीं है, जो विद्यालय में परम्परागत ढंग से पढ़ाए जाते हैं, वरन् इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता निहित है, जिसको छात्र विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, वर्कशाप, प्रयोगशाला और खेल के मैदान तथा शिक्षकों एवं शिष्यों के अनगिनत अनौपचारिक सम्पर्कों से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का समस्त

जीवन पाठ्यचर्या हो जाता है। यह छात्रों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित कर सकता है और उनके सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देता है।' पाठ्यचर्या के सन्दर्भ में कतिपय विद्वानों ने इसे निम्न प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास किया है

- **मुनरो** के अनुसार, "पाठ्यचर्या में वे समस्त अनुभव निहित हैं, जिनको विद्यालय द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग में लिया . जाता है।"
- **क्रो और क्रो** के अनुसार, "पाठ्यचर्या में विद्यार्थियों के विद्यालय या उसके बाहर के वे सभी अनुभव शामिल हैं, जो अध्ययन कार्यक्रम में रखे जाते हैं जिसका आयोजन बालकों के मानसिक, शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक स्तर पर विकास में सहायता करते हैं।" .
- **के. जी. सैयेदेन** के अनुसार, "पाठ्यचर्या वह सहायक सामग्री है जिसके द्वारा बच्चा स्वयं को उस वातावरण के अनुकूल ढालता है, जिसमें वह अपना दैनिक कार्य-व्यवहार करता है तथा जिसमें उसके भविष्य की योजनाएँ और क्रियाशीलता निहित हैं।"
- **डंकन ग्रिजेल** के अनुसार, "विद्यालयी पाठ्यचर्या समाज की परम्पराओं, पर्यावरण एवं आदर्शों का प्रतिरूप है।"
- **बैण्ट तथा कोन्बेर्ग** के अनुसार, "पाठ्यचर्या के अन्तर्गत छात्रों के लिए प्रस्तुत की गई विद्यालयीय वातावरण की वह समस्त सामग्री आती है, जिसमें सारी पाठ्य-वस्तु, पठन क्रियाएँ एवं विषय सम्मिलित हैं।" . .
- **कैसवेल** के अनुसार, "बालकों एवं उनके माता-पिता तथा अध्यापकों के जीवन में आने वाली समस्त क्रियाओं को पाठ्यचर्या कहा जाता है। बालकों के कार्य करने के समय जो कुछ भी कार्य होता है, उस सबसे पाठ्यचर्या का निर्माण होता है। वस्तुतः पाठ्यचर्या को गतियुक्त (Dynamic) वातावरण कहा गया है।"
- **हेनरी** के अनुसार, "विस्तृत अर्थ में पाठ्यचर्या के अन्तर्गत समस्त विद्यालय का वातावरण आता है, जिसमें विद्यालय में प्राप्त सभी प्रकार के सम्पर्क, पठन क्रियाएँ एवं विषय सम्मिलित है।"
- **बूबेकर** के अनुसार, "पाठ्यचर्या एक ऐसा क्रम है जो किसी व्यक्ति की स्थान पर पहुँचने के लिए तय करना पड़ता है।"
- **ड्यूवी** के अनुसार, "पाठ्यचर्या केवल अध्ययन की योजना या विषय ही नहीं, बल्कि कार्य और अनुभव की सम्पूर्ण श्रृंखला है। पाट्यचर्या समाज में कलात्मक ढंग से परस्पर रहने के लिए बच्चों के प्रशिक्षण का शिक्षकों के पास एक साधन है। सारांशतः पाठ्यचर्या सुनिश्चित जीवन का दर्पण है, जो विद्यालय में प्रस्तुत किया जाता है।"
- **फ्रॉबेल** के अनुसार, "पाठ्यचर्या को मानव जाति के समस्त ज्ञान और अनुभव का सार समझना चाहिए।"

इस प्रकार पाठ्यचर्या का सम्बन्ध सीखने वाले एवं सिखाने वाले से होता है। सीखने और सिखाने वाले को जोड़ने वाली एक अनिवार्य कड़ी है।

पाठ्यचर्या के उद्देश्य

www.studyofeducation.com

विद्यालय में विभिन्न स्तरों के लिए पृथक्-पृथक् पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाता है। पाठ्यचर्या निर्धारण के समय कुछ विशेष उद्देश्यों को ध्यान रखनाअत्यन्त आवश्यक है। पाठ्यचर्या बनाते समय छात्रों के जीवन से सम्बन्धित विभिन्न बिन्दुओं को ध्यान में रखा जाना अति आवश्यक है। एक अच्छी और आदर्श पाठ्यचर्या में कुछ उद्देश्यों का होना अति आवश्यक है। जो निम्न है

- पाठ्यचर्या ऐसी हो जोकि छात्रों का बहुमुखी विकास कर सके।
- पाठ्यचर्या का उद्देश्य छात्रों की रुचियों, क्षमताओं तथा योग्यताओं को जागृत करना हो।
- पाठ्यचर्या छात्रों की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास कर सके।
- पाठ्यचर्या का उद्देश्य छात्रों में सामाजिक गुणों का विकास करना हो।
- पाठ्यचर्या ऐसी होना चाहिए, जिससे छात्रों में कर्त्तव्य पालन की भावना का विकास हो सके।
- पाठ्यचर्या का एक मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में प्रजातन्त्र की भावना का विकास करना हो, जिससे वह भविष्य में एक आदर्श नागरिक बन सके।
- पाठ्यचर्या का उद्देश्य छात्रों की कल्पना शक्ति, चिन्तन, निर्णयन तथा तर्क शक्ति का विकास करना होना चाहिए।
- पाठ्यचर्या ऐसी हो जिससे छात्र अपने जीवन के मूल्यों का निर्माण करना स्वयं सीख सकें।

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या निर्माण के आधारभूत सिद्धान्त

पाठ्यचर्या निर्माण के अन्तर्गत यह आवश्यक है कि वर्तमान और अतीत, दोनों के तथ्यों और अनुभवों को साथ लिया जाए। प्रगतिशील राष्ट्र के निर्माण में अतीत विशेष भूमिका निभाता है। इस प्रकार पाठ्यचर्या के निर्माण के समय, अतीत को सुरक्षित रखते हुए वर्तमान लाभ के व्यावहारिक मानदण्डों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पाठ्यचर्या निर्माण के सन्दर्भ में निम्नलिखित सिद्धान्तों को अपनाया जाता है

जीवन की उपयोगिता से सम्बन्धित होने का सिद्धान्त पाठ्यचर्या में उन विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए जो वर्तमान में बालकों के भावी जीवन के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके, साथ ही उनका वास्तविक जीवन से सम्बन्ध हो। पाठ्यचर्या में वे सभी कार्यक्रम समाविष्ट होने चाहिए जो कि बालकों को इस योग्य बना दें कि वह बड़ा होने पर प्रभावपूर्ण ढ़ग से सामाजिक कार्यों में भाग सके और वर्तमान जीवन को सरलता से व्यतीत कर सके। ऐसे पुराने विषयों को नहीं पढ़ाया जाना चाहिए, जिससे जीवन का कोई सावधान हो। पाठ्यचर्या में ऐसी बातों को जोड़ा जाए जिसके द्वारा बालक अपनी उपयोगिता को समझ सके। पाठ्यचर्या में उन्हीं विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए जो बालको के भावी जीवन में काम आ सके। अनुपयोगी विषयों को पाठ्यचर्या से अलग रखा जाना चाहिए। पाठ्यचर्या में मातभाषा, राष्ट्रभाषा, सामाजिकता को प्रथम स्थान पर रखा जाना चाहिए, जिससे बालकों को उपयोगिता के आधार पर पाठ्यचर्या दिया जा सके। पाठ्यचर्या बालक के भावी जीवन के लिए उपयोगी होनी चाहिए।

- **रचनात्मक एवं सजनात्मक शक्तियों का सिद्धान्त** पाठ्यचर्या में ऐसे सभी विषयों को जोड़ा जाना चाहिए जिसमें रचनात्मक एवं सृजनात्मक शक्तियों के विकास में अपना योगदान प्रदान कर सके। इसके लिए बालकों को समय-समय पर प्रोत्साहित भी किया जाना चाहिए तथा उचित दिशा निर्देश दिया जाना उपयुक्त होगा। प्रत्येक बालक में किसी-न-किसी रूप में रचनात्मक कार्य करने की योग्यता अवश्य होती है। बालक की रुचियों तथा विशिष्ट योग्यताओं की खोज करके उनके अन्दर रचनात्मक एवं सृजनात्मक भावनाओं का विकास किया जा सके।
- **क्रियाशीलता का सिद्धान्त** पाठ्यचर्या का निर्माण क्रियाओं तथा अनुभवों को ध्यान में रखते हुए किया जाए। बच्चे की दैनिक क्रियाओं की ओर अनुभूति करते हुए पाठ्यचर्या का निर्माण किया जाना चाहिए, जिससे भविष्य बालक का सर्वांगीण विकास किया जा सके, साथ ही पाठ्यचर्या में ऐसी क्रियाओं एवं अनुभवों को स्थान दिया जाना चाहिए जो लोकतान्त्रिक दृष्टिकोण को अधिक-से-अधिक विकसित कर सकें।
- **नैतिकता एवं उत्तम आदर्शों का सिद्धान्त** बालक को शिष्ट एवं नैतिक जीवन व्यतीत करने हेतु पाठ्यचर्या में नैतिकता का विकास करना होगा जिसके द्वारा बालकों को बताना होगा कि इस लोकतान्त्रिक देश में नैतिक मूल्य क्या है और इनकी उपयोगिता क्या है। क्योंकि पाठ्यचर्या में जब तक नैतिकता का स्थान नहीं होगा, तब तक हम अपने लोकतान्त्रिक उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं कर सकते। पाठ्यचर्या के निर्माण के समय ध्यान रखना होगा कि बालक के अन्दर उत्तम आदर्शों का होना अति आवश्यक है। इसके लिए हमें चाहिए कि उन विषयों, क्रियाओं का समावेश करें जिससे बालकों को उत्तम आदर्श प्राप्त हो सके। पाठ्यचर्या में हमें समाज, देश एवं परोपकार की भावना का भी समावेश करना होगा।
- **लचीलेपन का सिद्धान्त** पाठ्यचर्या निर्माण के समय ध्यान देना होगा कि हमारी पाठ्यचर्या लचीली हो जिसमें बालक की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन किया जा सके और अनावश्यक बालक पर बोझ न लादा जाए। अन्यथा बालक निराशा की भावना से ग्रसित हो सकता है और वे बालक की रुचियों, आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अनुपयुक्त सिद्ध होता है। अतः वर्तमान को देखते हुए पाठ्यचर्या का लचीला होना अनिवार्य है, जिसमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सके।
- **विकास एवं प्रगतिशीलता की प्रक्रिया का सिद्धान्त** किसी भी पाठ्यचर्या का निर्माण सदैव के लिए नहीं होता है। हमें परिस्थिति के अनुसार पाठ्यचर्या में बदलाव की आवश्यकता होती है। जिससे हम अपने आने वाले भविष्य को तैयार कर सकें और पाठ्यचर्या के माध्यम से शिक्षा को विकासोन्मुख बना सकें। हमें चाहिए कि अपने राष्ट्र के विकास हेतु वर्तमान समय एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यचर्या का निर्माण करें जिसके द्वारा हम बालक को विकासशील प्रक्रिया से जोड़ सकें। किसी भी देश की प्रगति में पाठ्यचर्या का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि यदि आप बालक को देश की प्रगति के बारे में नहीं बताएँगे, तो वह वर्तमान में देश की प्रगति में किए जा रहे प्रयामी शामिल नहीं हो पाएगा। आज के बच्चे कल के आदर्श नागरिक है। अतः उनको इस प्रकार शिक्षित किया जाना चाहिए कि उनमें प्रगतिशील विचारों की अवधारणा विकसित हो सके। ब्रिटेन में पाठ्यक्रम विकास अवधारणा के अन्तर्गत, स्थानीय प्राधिकरणों को अनिवार्य रुप से इजीकार किया गया है।
- **अनुभवों की पूर्णता का सिद्धान्त** पाठ्यचर्या का अर्थ केवल सैद्धान्तिक विषयों से नहीं होना चाहिए, बल्कि पाठ्यचर्या में उन सभी अनुभवों की स्थान दिया जाना चाहिए जिनको बालक विद्यालय के बाहर अन्य स्थानों पर प्राप्त करता है। जैसे-

www.studyeducation.com

खेल का मैदान, प्रयोगशाला, वर्कशाप आदि। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पादयचर्या में बालक द्वारा विभिन्न क्रियाओं से प्राप्त अनुभव भी विशेष महत्त्व रखते हैं।

- **खाली समय के सदुपयोग का सिद्धान्त** पाठ्यचर्या निर्माण के समय ध्यान दिया जाना चाहिए कि बालक खाली समय का उपयोग किस प्रकार करे। पाठ्यचर्या में साहित्य, कला, खेलकूद, सामुदायिक कार्यों का समावेश होना चाहिए। हम कह सकते हैं कि पाठ्यचर्या इस प्रकार नियोजित की जाए कि छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध हो।
- **संस्कृति एवं सभ्यता का सिद्धान्त** शिक्षा का एक उद्देश्य छात्रों को अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के संरक्षण के प्रति जागरुकता प्रदान करना भी है। पाठ्यचर्या में उन विषयों, वस्तुओं एवं क्रियाओं को अवश्य शामिल किया जाना चाहिए जिनके द्वारा बालकों को अपनी संस्कृति एवं सभ्यता का ज्ञान प्राप्त हो सके। पाठ्यचर्या के माध्यम से छात्रों को अपनी सांस्कृतिक धरोहरों एवं सभ्यताओं के संरक्षण के लिए प्रेरित किया जा सके।
- **प्रजातन्त्रात्मक भावना के विकास का सिद्धान्त** हमारा देश एक प्रजातान्त्रिक देश है। हमें पाठ्यचर्या के द्वारा प्रजातान्त्रिक भावना को विकसित करना चाहिए, जिससे कि शिक्षा के मूल उद्देश्य की प्राप्ति हो सके।
- **सह-सम्बन्ध का सिद्धान्त** पाठ्यचर्या में चाहिए कि एक विषय की शिक्षा दूसरे विषय की शिक्षा का आधार बन सके, विषयों से सम्बन्धित न होने पर पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता समाप्त हो जाती है। बालक को सह-सम्बन्ध के आधार पर पाठ्यचर्या बताया जाना चाहिए।
- **सर्वांगीण विकास का सिद्धान्त** बालक को ऐसी पाठ्यचर्या देनी चाहिए जिससे कि वह हर प्रकार का ज्ञान अर्जित कर सके जिससे वह अपना शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, चारित्रिक, आध्यात्मिक, संवेगात्मक तथा नैतिक विकास कर सके। यदि हमारी पाठ्यचर्या बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक होगी, तभी हम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति कर पाएंगे।
- **सन्तुलन का सिद्धान्त** पाठ्यचर्या के निर्माण में ध्यान देना चाहिए कि जीवन के प्रत्येक पक्ष एवं प्रत्येक विषय में समान महत्त्व की प्राप्ति हो। ऐसा न हो कि किसी विषय या पक्ष को अधिक महत्त्व दिया जाए, अतः बालक पाठ्यचर्या के द्वारा प्रत्येक क्षेत्र का समान ज्ञान प्राप्त कर सके।
- **शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का सिद्धान्त** पाठ्यचर्या में उन्हीं क्रियाओं एवं विषयों को रखा जाना चाहिए जो शिक्षा के उद्देश्यों के अनुकूल हो। हमें बालक को सामाजिक हितों के संरक्षण योग्य बनाना है। हमें पाठ्यचर्या के माध्यम से बालक को व्यवसायपरक एवं कार्यक्षमता में निपुण बनाना है। वर्तमान में हमें बालक के अन्दर शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं चारित्रिक विकास के क्षेत्र में सर्वांगीण विकास हो जिससे हमारे शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हो सके।
- **चेतना का सिद्धान्त** पाठ्यचर्या इस प्रकार की जिससे छात्र के भीतर भविष्य में होने वाली घटनाओं के विषय में जानकारी दी जा सके, ताकि समाज एवं देश के विकास में बालक सहयोग प्रदान कर सके और किसी प्रकार घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। बालक को भविष्योपयोगी जानकारी प्रदान की जाए।

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या विकास की कार्यनीति

पाठ्यचर्या विकास एक विशिष्ट कार्य है। इसके अन्तर्गत प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्यों, अनुभवों और विभिन्न क्रियाकलापों का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है। पाठ्यचर्या के अन्तर्गत बालकों में लाए जाने वाले परिवर्तन के मूल्यांकन की पूर्ण जानकारी का होना आवश्यक है।

पाठ्यचर्या विकास कार्य में शिक्षाविदों और शिक्षा समितियों के माध्यम से विद्यालयों का भ्रमण एवं समाज के प्रत्येक वर्ग एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर कार्य किया जाना चाहिए। शिक्षकों के लिए गोष्ठियाँ, कार्यशाला और सेमिनारों का आयोजन करते समय उन सभी शिक्षकों से भी राय लेनी चाहिए जो इस प्रकार के कार्यक्रमों में भाग लेते रहे हैं। पाठ्यचर्या विकास कार्यनीति में हमारे संस्कारों, संस्कृतियाँ और भाषा का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि यह आवश्यक है कि समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति एवं राष्ट्रहित की भावना से पाठ्यचर्या विकास कार्यनीति का निर्धारण किया जाए।

राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्यचर्या विकास की कार्यनीति को सरल एवं प्रगतिशील बनाते हुए इस प्रकार संचालित किया जाए कि समाज की आवश्यकतानुसार छात्रों की शिक्षा प्रविधियों का निर्धारण किया जा सके। *पाठ्यचर्या विकास की कार्यनीति का निर्धारण करते समय निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान देना चाहिए*

- सर्वप्रथम यह ध्यान देना चाहिए कि पाठ्यचर्या का विकास किस कक्षा के लिए किया जा रहा है।
- जिस स्तर के बालकों के लिए पाठ्यचर्या का विकास किया जाना है, उनका पूर्व ज्ञान का स्तर क्या है?
- पाठ्यचर्या को ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक पक्षों में बाँटकर उसका विकास किया जाना चाहिए।
- छात्रों की वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर मनोवैज्ञानिक स्तर पर ध्यान दिया जाना चाहिए।
- पाठ्यचर्या के विकास में विविध सिद्धान्तों और शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर कार्य किया जाना चाहिए।
- पाठ्यचर्या की प्रक्रिया में तथ्यों, प्रसंगों एवं विचारकों के मतों का वर्णन करना चाहिए।
- पाठ्यचर्या के विकास में वैधता, विश्वसनीयता, मानकीकरण तथा तर्कसंगतता होनी चाहिए।
- बालक के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्यचर्या में पर्याप्त क्रियाओं को स्थान दिलाने के लिए मूल्यांकन पद्धति को अपनाना चाहिए।

पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया की अवस्थाएँ

प्रसिद्ध विद्वान् **डी. के. व्हीलर** ने अपनी पुस्तक 'करीकुलम प्रोसेस' में पाठ्यचर्या संरचना विकास की पाँच प्रक्रियाओं को स्वीकार किया है, किन्तु सर्वसम्मति से अधिकतर विद्वानों ने पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया के निम्न सोपानों को स्वीकार किया है

www.studyofeducation.com

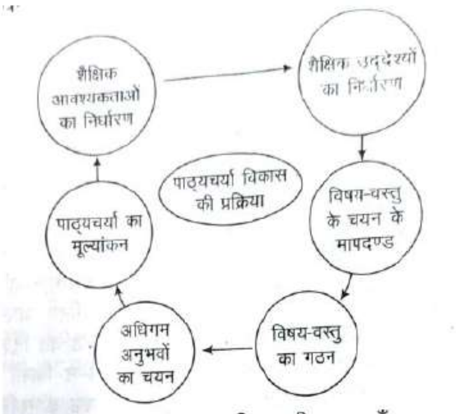

पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया की अवस्थाएँ

- शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण
- विषय वस्तु के चयन के मापदण्ड
- अधिगम अनुभवों का चयन
- शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण
- विषय-वस्तु का गठन
- पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

www.studyofeducation.com

शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण

पाठ्यचर्या मूलरुप से एक नियोजित शैक्षिक कार्यक्रम है। इसे इसलिए तैयार किया जाता है कि हम समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहार सीख सकें। इसे निश्चिंत करने से पहले यह तय करना अनिवार्य है कि समाज के सदस्यों की आवश्यकताएँ क्या है। समाज शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर क्या पाना चाहता है- इस हेतु निम्न उपाय है

पाठ्यचर्या निर्माता विशेष सर्वेक्षण द्वारा क्षेत्रीय अध्ययन द्वारा शैक्षिक आवश्यकताओं का निर्धारण करें।
आवश्यकता निर्धारण, उपलब्ध आँकड़ों के; जैसे-शिक्षा आयोगों की रिपोर्ट, सरकारी नीतियाँ आदि के विश्लेषण द्वारा किए जाए।
पाठ्यचर्या निर्माण में विभिन्न प्रकार के आँकड़े उपयोगी मार्गदर्शन कर सकते है|

उपरोक्त उपायों से पाठ्यचर्या निर्माता समाज की शैक्षिक आवश्यकताओं को जानकर शिक्षा व्यवस्था की सीमाओं और शक्तियों पर विचार करके प्राथमिक क्षेत्रों की सूची तैयार कर सकते हैं, ताकि उपलब्ध साधनों का समुचित स्थान पर उपयोग किया जा सके।

शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण

समाज के यथार्थ शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण किया जाना है। उद्देश्य अपेक्षित उपलब्धियों को विशिष्टता व स्पष्टता प्रदान करते हैं। इन्हें निर्धारित करते समय निम्न तथ्यों पर ध्यान देना चाहिए

- उद्देश्यों का सम्बन्ध शिक्षा के विस्तृत लक्ष्यों से होना चाहिए, जो उनका स्रोत है।
- उद्देश्य विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार उपयोगी, अर्थपूर्ण और प्रासंगिक होने चाहिए।
- उद्देश्य सुस्पष्ट होने चाहिए।
- सभी उद्देश्य छात्रों की रुचि और आवश्यकताओं को पूरा करने वाले हों।
- उद्देश्यों का वर्गीकरण सर्वमान्य विचार के अनुरुप व तार्किक होना चाहिए, जैसे डॉ. ब्लूम का वर्गीकरण, डॉ. मैगर का वर्गीकरण आदि।
- उद्देश्यों का उपयुक्त वर्गीकरण विषय-वस्तु और मूल्यांकन की दृष्टि से एक सार्थक पाठ्यक्रम के विकास में सहायक सिद्ध होता है।
- उद्देश्यों पर समय-समय पर पुनर्विचार करना आवश्यक है, क्योंकि तीव्र गति से बदलते समाज में छात्रों की आवश्यकताएँ, समाज की आकांक्षाएँ तीव्र गति से बदल रही हैं, उसी के अनुरुप पाठ्यक्रम में बदलावों के प्रति समायोजन क्षमता होनी चाहिए।

विषय-वस्तु के चयन के मापदण्ड

पाठ्यचर्या विकास का प्रमुख कारक है विषय-वस्तु का चयन। विषय वस्तु हमारा अभिप्राय है-संकल्पनाओं, तथ्यों, अवधारणाओं, सिद्धान्तों, सामान्यीकरण तथा अधिगम अनुभव। इस विषय-वस्तु के चयन को यदि हम स्पष्ट करना चाहें, तो इसके कुछ मापदण्ड हमें दृष्टिगत रखने होंगे, जैसे

- विषय-वस्तु विद्यार्थियों को स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनने में सहायक हो।
- सीखी जाने वाली विषय-वस्तु छात्रों के मूल विचारों, संकल्पनाओं और विशेषतः अधिगम योग्यताओं में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाली होनी चाहिए।
- चयनित विषय-वस्तु पाठ्यक्रम के उद्देश्यों और लक्ष्यों से सम्बन्धित तथा दैनिक जीवन के लिए उपयोगी होनी चाहिए।
- अधिगम की विषयवस्तु छात्रों की व्यवसाय परिस्थितियों हेतु उपयोगी होनी चाहिए।
- चयनित विषय-वस्तु छात्रों, के व्यक्तित्व व बौद्धिक क्षमताओं (मानसिक स्तर और अभिरुचि) के अनुरुप हो।
- विषय-वस्तु ऐसी हो जिसे विद्यार्थी समझ सकें, अधिगम कर सकें, अनुभव कर सके व उसका उपयोग कर सकें।

www.studyofeducation.com

विषयवस्तु का गठन

पाठ्यचर्या वस्तु का चयन कर लेने के बाद उसका संगठन भी उचित प्रकार से करना आवश्यक है, क्योकि पाठ्यचयो मूल रुप से अधिगम की योजना है। उचित संगठन द्वारा ही शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है तथा विद्यार्थी अधिगम प्राप्ति की स्थिति प्राप्त कर सकता है। पाठ्यचर्या की विषय-वस्तु का गठन करते समय निम्नलिखित पक्षों को ध्यान में रखना अनिवार्य है

- **क्रमबद्धता** पाठ्यचर्या में क्रमबद्धता का तात्पर्य चयनित विषय-वस्तु को एक निश्चित क्रम में लिखना है, विषय-वस्तु की क्रमबद्धता हेतु कुछ सिद्धान्त शिक्षा के क्षेत्र में है। उनका पालन करना चाहिए; जैसेओर, सरल से जटिल की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर, स्थूल से सूक्ष्म की -ज्ञात से अज्ञात की ओर आदि।
- **निरन्तरता** पाठ्यचर्या की अध्ययन सामग्री में निरन्तरता हो, छात्र द्वारा पहले पढ़ी जाने वाली सामग्री सरल व उत्तरोत्तर जटिलता की ओर अग्रसर हो। अध्ययन सामग्री में निरन्तरता ही पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकती है।
- **एकीकरण** विषय-वस्तु के संगठन में यह तथ्य है कि विभिन्न चयनित विषयों की विषयवस्तु को एक-दूसरे से कैसे सम्बद्ध किया गया है अर्थात् एक क्षेत्र के तथ्यों, सिद्धान्तों, अवधारणाओं को दूसरे क्षेत्र के तथ्यों से कैसे जोड़ा गया है। इस एकीकरण में विभिन्न विषयों की तर्क व मनोवैज्ञानिक विशेषता को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

www.studyofeducation.com

अधिगम अनुभवों का चयन

चयनित विषय-वस्तु को प्रदान करने के लिए व शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए शिक्षण विधियों व क्रियाकलापों का आयोजन विद्यालय में किया जाता है। उनका पूर्व में चयन करना आवश्यक है, ताकि विद्यार्थी अधिकाधिक अधिगम अनुभव की स्थिति तक पहुँच सकें, क्योंकि चयनित विषय-वस्तु का प्रथम उद्देश्य उसका अधिगम विद्यार्थी को किस प्रकार हो सकेगा, इसी में निहित है। इसलिए इन्हें एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता; जैसे-

- अधिगम अनुभव ही पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं।
- अधिगम अनुभव ही विद्यार्थियों में तर्कशक्ति व चिन्तन क्षमता का विकास करते हैं।
- अधिगम अनुभव शिक्षक को विधियों के प्रयोग व शैक्षिक गतिविधियों के निर्धारण के निर्देश प्रदान करते हैं।
- अधिगम अनुभव छात्रों को अपनी आवश्यकताओं व रुचियों को स्पष्ट करने के योग्य बनाते हैं।

पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

मूल्यांकन का उद्देश्य यह मापना है कि पाठ्यचर्या क्रियान्वयन से उसके उद्देश्यों की किस सीमा तक प्राप्ति हुई है। मूल्यांकन व उद्देश्यों के मध्य सम्बन्ध इस चित्र से स्पष्ट होता है

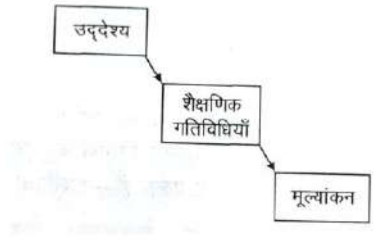

किसी भी स्तर के शैक्षणिक कार्यक्रम की प्रभावशीलता इस बात से आंकी जाती है कि उसके उद्देश्यों की प्राप्ति की कितनी सम्भावना है। उचित मूल्यांकन विधि द्वारा यह मापा जा सकता है कि उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हुई है। यह मूल्यांकन गुणात्मक व मात्रात्मक दोनों प्रकार का होता है। यहाँ इस इकाई के सन्दर्भ में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि मूल्यांकन के दो प्रकार होते हैं-**छात्र मूल्यांकन** एवं **पाठ्यचर्या मूल्यांकन**।

छात्र मूल्यांकन

छात्र मूल्यांकन का उद्देश्य छात्रों के व्यवहार में आए परिवर्तनों की जाँच करना है, जिसके लिए निम्न तरीकों को प्रयुक्त किया है

- मौखिक, लिखित या प्रायोगिक परीक्षाओं द्वारा।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान प्रश्नोत्तर द्वारा|
- गृहकार्य द्वारा, प्रयोजना कार्य द्वारा आदि।

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या मूल्यांकन

पाठ्यचर्या मूल्यांकन का तात्पर्य पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों; जैसे—उद्देश्य, विषय-वस्तु, विधियाँ, मूल्यांकन प्रविधियों के मूल्यांकन से है। इन घटकों की अलग-अलग समीक्षा नहीं की जा सकती है, क्योंकि घटक आपस में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन का तात्पर्य पाठ्यचर्या के विभिन्न घटकों; जैसे-उद्देश्य, विषय-वस्तु, विधियाँ, मूल्यांकन प्रविधियों के मूल्यांकन से है। इन घटकों की अलग-अलग समीक्षा नहीं की जा सकती है, क्योंकि घटक आपस में एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

इनका मूल्यांकन भी एक-दूसरे से जोड़ कर ही किया जाता है। यह बात इस चित्र से भी प्रकट होती है

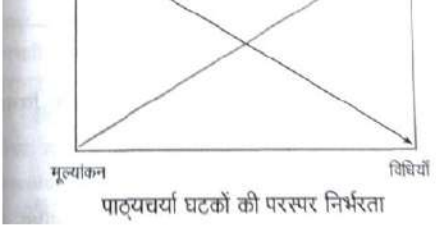

पाठ्यचर्या घटकों की परस्पर निर्भरता

पाठ्यचर्या मूल्यांकन का प्रमुख उद्देश्य पाठ्यचर्या की कमियों को जानकर उनमें सुधार लाना है।

पाठ्यक्रम नियोजन की आधारशिला (Foundations of Curriculum Planning)

किसी भी पाठ्यक्रम नियोजन के पीछे कुछ उद्देश्य होते है जिसकी प्राप्ति हेतु पाठ्यक्रम का विकास किया जाता है। यह पाठ्यक्रम सदैव ही अपने समाज की मान्यताओं, धारणाओ, विश्वासों, विचारों और मांग पर आधारित होता है। यहाँ समाज से आशय किसी विशेष स्थान तथा उसकी परिस्थितियों से है। देशकाल एवं आवश्यकताओं के अनुरुप ही पाठ्यक्रम भी परिवर्तित होता रहता है। यह माना जाता है कि यदि समाज में परिवर्तन लाना है, तो शिक्षा में तथा पाठ्यक्रम में परिवर्तन लाया जाए।

पाठ्यक्रम निर्माण के पीछे बहुत से आधारों को शामिल किया जाता है। ये सभी आधार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सन्तुलित निर्माण हेतु नींव का कार्य करते हैं। पाठ्यक्रम निर्माण के विभिन्न आधार इस प्रकार हैं-दार्शनिक आधार, समाजशास्त्रीय आधार तथा मनोवैज्ञानिक आधार।

पाठ्यक्रम नियोजन के दार्शनिक आधार (राष्ट्रीय लोकतन्त्रीय)

पाठ्यक्रम नियोजन की दार्शनिक अवधारणा के अन्तर्गत, पाठ्यक्रम क्रियान्वयन के फलस्वरुप प्राप्त परिवर्तित व्यवहार की वांछनीयता और उसके उचित-अनुचित का निर्धारण किया जाता है। दर्शन की शाखा पाठ्यक्रम नियोजन के लिए मूल्यमीमांसा दिशा प्रदान करती है। दर्शन को पाठ्यक्रम निर्धारण का मेरुदण्ड माना जाता है। क्या पढ़ाया जाए? क्या न पढ़ाया जाए? शिक्षा कैसी हो?

इन सभी प्रश्नों का उत्तर व्यक्ति और समाज अपनी दार्शनिक मान्यताओं के आधार पर ही देता है। प्रत्येक दार्शनिक विचारधारा का पाठ्यक्रम पर प्रभाव अवश्य पड़ता है। रस्क महोदय के अनुसार, "दर्शन पर पाठ्यक्रम का संगठन जितना आधारित है, उतना शिक्षा का कोई अन्य पक्ष नहीं।" शिक्षा के लक्ष्यों, उद्देश्यों (प्राप्तिक) एवं शिक्षण व्यूह रचना (अनुदेशात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए) के लिए दर्शन, एक आधार प्रस्तुत करता है अर्थात् शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण के पश्चात् शिक्षक किस प्रकार इन उद्देश्यों की प्राप्ति कर सकता है, दर्शन इस कार्य के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है।

www.studyofeducation.com

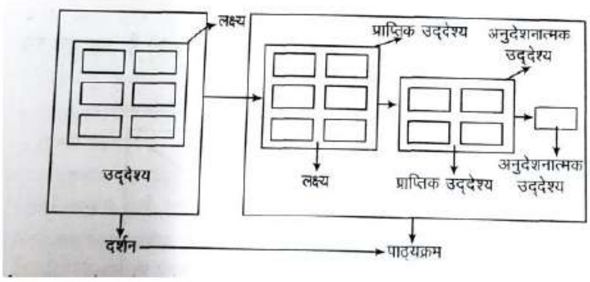

देश-काल के अन्तराल से अभी तक जिन विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का अभ्युदय हुआ है, उनमें से प्रमुख विचारधाराएँ निम्नलिखित हैं

आदर्शवाद और पाठ्यक्रम

आदर्शवाद भौतिक जगत् की तुलना में आध्यात्मिक जगत् को अधिक महत्त्व देता है तथा वस्तु की अपेक्षा विचार को अधिक महत्त्वपूर्ण मानता है, इसलिए शिक्षा के उद्देश्य आत्मानुभूति अथवा व्यक्तित्व का उन्नयन करना है। इसलिए आदर्शवादी पाठ्य की रचना आदर्शों, विचारों एवं शाश्वत मूल्यों के आधार पर होती है और पाठ्यचर्या में प्रमुख विषयों धर्मशास्त्र, अध्यात्मशास्त्र, भाषा, साहित्य, समाजशास्त्र, इतिहास, भूगोल, कला एवं संगीत आदि को शामिल करने पर बल देता है तथा शारीरिक शिक्षा,विज्ञान,गणित आदि को गौण विषय मानता है।

www.studyofeducation.com

प्रकृतिवाद और पाठ्यक्रम

प्रकृतिवाद के अनुसार प्रकृति ही सब कुछ है, ईश्वर अस्तित्व की मान्यता नहीं है तथा इस विचारधारा ने पदार्थ, भौतिक जगत् एव प्राकृतिक नियमों को सर्वाधिक महत्त्व दिया। प्रकृतिवादी मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों का शोधन एवं मार्गान्तीकरण कर जीवन संघर्ष के लिए तैयार करना,वातावरण से अनुकूलन को शिक्षा का मूल उद्देश्य मानते हैं।

प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम की रचना बालक की प्रकृति एवं रुचियों, योग्यताओं के आधार पर की जाती है। इस पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों को प्रमुख तथा मानवीय विषयों को गौण स्थान दिया जाता है। प्रकृतिवादियों के अनुसार मुख्य विषय खेदकूद, शरीर विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, पदार्थ विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं गणित आदि हैं। इन्होंने भाषा, साहित्य. सामाजिक विज्ञान, कला, संगीत आदि विषयों को कम महत्त्व देने की वकालत की।

प्रयोजनवाद और पाठ्यक्रम

प्रयोजनवादी दार्शनिक ईश्वर एक आध्यात्मिक तत्त्व के स्थान पर व्यक्ति में विश्वास करते हैं तथा मानव की शक्ति के महत्त्व को स्वीकार करता है। इनके अनुसार मूल्य पूर्व निर्धारित नहीं होते हैं, बल्कि निर्माण की अवस्था में हैं। इन्होंने मानवीय एवं मनोवैज्ञानिक

दृष्टिकोण को अधिक महत्त्व दिया। प्रयोजनवादियों के अनुसार शिक्षा के कोई पूर्व निर्धारित उद्देश्य नहीं होते, बल्कि उद्देश्य व्यक्तियों के होते हैं तथा देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं।

शिक्षा का कार्य ऐसे गतिशील एवं लचीले मस्तिष्क का निर्माण करना है, जो अज्ञात भविष्य में नवीन मूल्यों की रचना कर सके। प्रयोजनवादी पाठ्यक्रम उपयोगिता, रुचि, अनुभव तथा एकीकरण के सिद्धान्त पर आधारित होता है। पाठ्यक्रम के प्रमुख विषय स्वास्थ्य विज्ञान, शारीरिक विज्ञान, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, गणित, गृह विज्ञान तथा कृषि शिक्षा आदि हैं।

यथार्थवाद और पाठ्यक्रम

यथार्थवादी दर्शन पूर्णतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण आधारित है। यह स्थूल जगत् को महत्त्व देता है तथा कारण-परिणाम के वैज्ञानिक नियम को सर्वव्यापी एवं सर्वमान्य मानता है तथा व्यक्ति एवं समाज दोनों में विश्वास करता है। यथार्थवादी शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य सुखी एवं वास्तविक जीवन की तैयारी हेतु ज्ञानेन्द्रियों का विकास एवं प्रशिक्षण करना है तथा बालक को प्रकृति एवं सामाजिक वातावरण से परिचित कराकर उसे व्यावसायिक कुशलता प्रदान करना है। यथार्थवादी पाठ्यक्रम उपयोगिता तथा आवश्यकता के सिद्धान्त पर आधारित होता है।

पाठ्यचर्या में दैनिक जीवन में उपयोगी विषयों को सम्मिलित किया जाता है। प्राकृतिक विज्ञान, भौतिकी, रसायन, स्वास्थ्य, रक्षा, व्यायाम, भ्रमण, गणित, तर्कशास्त्र, नक्षत्र विज्ञान, इतिहास, भूगोल आदि विषयों को शामिल किया गया है। हरबर्ट स्पेन्सर ने वैज्ञानिक विचारधारा का समर्थन किया है। स्पेन्सर ने वैज्ञानिकता की शिक्षा को पूर्णता के अर्थ में स्वीकार किया है।

www.studyofeducation.com

अस्तित्ववाद और पाठ्यक्रम

अस्तित्ववाद विचारधारा पाठ्यक्रम की प्रस्तावना में आस्था नहीं रखती है। इस विचारधारा के पाठ्यचयों का चयन छात्र स्वयं अपनी आवश्यकता, योग्यता एवं जीवन की परिस्थितियों के अनुकूल करता है। इस विचारधारा के अन्तर्गत वैज्ञानिक विषयों की अपेक्षा मानवीय अध्ययनों पर विशेष बल दिया गया है। इन अध्ययनों के माध्यम से दुःख, चिन्ता, मृत्यु, घृणा आदि का ज्ञान प्राप्त करना। इसके अन्तर्गत कला, संगीत, साहित्य, धर्म, नैतिक सिद्धान्त, वैयक्तिक चयन, चिन्तन, स्व-उत्तरदायित्व विषयों को शामिल किया जाता है।

आधार के क्षेत्र में राष्ट्रीय दार्शनिक नीतिशास्त्रीय जीवन के समेकित विकास के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है।

राष्ट्रीय एवं लोकतान्त्रिक दार्शनिक

शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय दार्शनिक विचारधारा के अनुसार ज्ञान हमारी आत्मा में निहित रहता है तथा शिक्षा द्वारा इसे प्रकाश में लाया जाता है। यह मानव को विवेकयुक्त प्राणी मानता है। इस अवधारणा के अनुसार जीवन के विभिन्न पक्षों की जड़ धर्म ही है। अत: जो धर्म का लक्ष्य है, वही शिक्षा का लक्ष्य है। भारतीय दार्शनिक पाठ्यक्रम में यह अवधारणा धर्मशास्त्र, अध्यात्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, प्राचीन भाषाएँ, गणित, तर्कशास्त्र आदि को पढ़ाने का समर्थन करती है।

प्राचीनकाल मे उपनिषद् दर्शन में विभिन्न दार्शनिक विचारो का वर्णन किया गया है। दार्शनिक शिक्षा को जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक माना जाता था। वर्तमान में भी शिक्षा की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान देते हुए दर्शन की नीतिशास्त्रीय अवधारणा को जीवन के समेकित विकास के लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है।

पाठ्यक्रम के लोकतान्त्रिक दर्शन विचारधारा के अन्तर्गत, यह निर्धारण किया जाता है कि पाठ्यक्रम का स्वरुप और विकास किस प्रकार हो कि वह राज्य की लोकतान्त्रिक अवधारणा को विकसित करे। यह अवधारणा शिक्षण पाठ्यक्रम की किसी भी राजनीतिक व्यवस्था से आवश्यक रुप से सम्बद्ध मानती है, क्योंकि प्रत्येक समाज अपने यहाँ उपस्थित शिक्षण क्रियाकलापों से अनिवार्य रुप से प्रभावित होता है और यह सत्य है कि वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था, शिक्षा को भी प्रभावित करती है। भारत में समय-समय पर बदलती आवश्यकता के अनुसार शिक्षण पाठ्यक्रमों में भी बदलाव की आवश्यकता अनुभव की गई है। देश के लोकतान्त्रिक मूल्यों को ध्यान में रखते विभिन्न आयोग/समितियों ने शिक्षा के विभिन्न दार्शनिक आधार प्रस्तुत किए हैं। इन्हीं आयोगो/समितियों की सिफारिशों ने भारतीय शिक्षण पाठ्यक्रम का स्वरुप समय-समय पर इस प्रकार निर्धारित किया है कि वह देश में लोकतान्त्रिक मूल्यों को सशक्त रुप में स्थापित कर सके।

इस अवधारणा के अन्तर्गत समाज अथवा राज्य की लोकतान्त्रिक व्यवस्था के सभी आदर्शों, समस्याओं, साधनों आदि के द्वारा व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन और उनका मूल्यांकन किया जाता है। पाठ्यक्रम निर्माण किस प्रकार राष्ट्रीय और लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं से प्रभावित होता है, इसका अध्ययन और विश्लेषण भी इस अवधारणा के द्वारा किया जाता है।

पाठ्यक्रम नियोजन के समाजशास्त्रीय आधार (सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्निर्माण)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही अपना जीवन बिताता है तथा समाज के बिना उसका विकास कठिन है। अत: शिक्षा द्वारा उसे समाज के साथ अनुकूल करने की क्षमता देनी चाहिए। दूसरे शब्दों में, समाज पाठ्यक्रम के निर्धारण का आधार होना चाहिए। सामाजिक आधार का आशय यह है कि पाठ्यचर्या में उन्हीं विषयों एवं क्रियाओं को शामिल करना चाहिए, जो सामाजिक दृष्टि से उपयोगी हों, जो बालकों में सामाजिकता की भावना तथा सामाजिक गुणों का विकास करें और जो व्यक्ति की प्रमुख तथा गौण दोनों

प्रकार की सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करा कि समाज प्रजातान्त्रिक आत, पाठयक्रम मा होना चाहिए जो प्रजातन्त्र की भावना को विकगित करें। वत हसना लचीला तथा उदार हो कि सभी बायका को अपनी योग्यतानुसार बढ़ने का अवसर थे, उन्हें,

www.studyofeducation.com

समाज का उपयोगी सदाय एवं देश का उनम नागरिक बनाए तथा उनमें राष्ट्रीयता की भावना जापत का, ताकि वे समाज तथा देश के प्रति अपने उत्तरदायित्वों एवं कर्तव्यों को निभा सके। शिक्षा में सामाजिक प्रवृति का तात्पर्य शिक्षा द्वारा बालकों में सामाजिक गुणों के विकाय के प्रयास करने की प्रक्रिया से है जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का कल्याण हो सके। उन्नीसवीं शताब्दी में महान दार्शनिक भयो के व्यक्तिल्यवाद की प्रतिक्रिया के फलस्वरुप सामाजिकतावादी प्रवृत्ति का जन्म हुआ, जिमने व्यक्ति को बदलते हुए समाज में रहने के लिए तैयार करने की आवश्यकता पर बल दिया।

इसी समय फ्रांसीसी विद्वान ऑगस्त कॉम्टे ने एक नवीन सामान्य सामाजिक विज्ञान 'समाजशास्त्र' को जन्म देकर शिक्षा में समाजशास्त्रीय प्रवृत्ति को पूर्ण बना देने की सुदृढ़ आधारशिला रख दी। समाजशास्त्र की ही शाखा शैक्षिक समाजशास्त्र को समाज के सभी आदर्शों, नियमों, समस्याओं, साधना एवं उनके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करके समाज की उन्नति के लिए शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यचर्या, शिक्षणविधि, पाट्य-पुस्तकें, अनुशासन, विद्यालय तथा शिक्षक आदि का स्वरुप निर्धारित करता है। इसकी विशेषताएं निम्नलिखित हैं

समाजशास्त्रीय प्रवृत्ति और पाठ्यक्रम (Sociological Tendency and Curriculum) शिक्षा में समाजशास्त्रीय प्रवृत्ति पाठ्यक्रम निर्माण में साहित्यिक विषयों की अपेक्षा सामाजिक विषयों पर अधिक बल दिया जाता है। इसके अनुसार प्रकृति विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान का विशेष स्थान होता है। इसलिए पाठ्यचर्या का विस्तार सामाजिक एवं व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए।

सामाजिक स्थिति और पाठ्यक्रम (Social Condition and Curriculum) समाज की आवश्यकताओं के अनुरुप ही शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण करना चाहिए तथा पाठ्यक्रम का उद्देश्य भी एक तरह से व्यक्ति को समुचित समायोजन में सहायता प्रदान करने का होता है। अतः वर्तमान पाठ्यचर्या में सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, प्रदूषण की समस्या, सुरक्षा शिक्षा, परिवहन शिक्षा, काम शिक्षा, जाति उन्मूलन, परिवार कल्याण, विवाह एवं तलाक की समस्या, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय एकता की शिक्षा आदि विषयों का समावेश किया जा रहा है।

सामाजिक दबाव वर्ग और पाठ्यक्रम (Social Pressure Group and Curriculum) शिक्षा में सामाजिक प्रवृत्ति के कारण पाठ्यचर्या को विभिन्न स्तरों पर अनेक तरह के सामाजिक दबावों का सामना करना पड़ता है। एक तरफ जहाँ कुछ वर्ग परिवर्तन लाने के उद्देश्यों से कार्य करते हैं, वहीं अनेक दबाव समूह उन्हें रोकने के उद्देश्य से भी क्रियाशील रहते हैं। वर्तमान में विभिन्न प्रकार के विद्यालय, शिक्षा परिषदें, विश्वविद्यालय, परीक्षा कार्यक्रम एवं संशोधन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

परिवार और पाठ्यक्रम (Family and Curriculum) बालक की अनौपचारिक शिक्षा का प्रारम्भ परिवार से ही होता है। वर्तमान में परिवारों के परम्परागत काय एवं दायित्वों का स्थानान्तरण विद्यालयों को हो गया है तथा इसका महत्त्वपूर्ण कारक आज के युग की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था भी है।

www.studyofeducation.com

धार्मिक संगठन और पाठ्यक्रम (Religious Organisation and Curriculum) प्राचीनकाल से ही शिक्षा के क्षेत्र में परिवार के बाद दूसरा स्थान धार्मिक संगठनों का रहा है, किन्तु वैज्ञानिक एवं औद्योगिक क्रान्ति के बाद शिक्षा के क्षेत्र में धार्मिक संगठनों की भूमिका कुछ कम हुई है। अब भी पाठ्यक्रम के सामाजिक आधारों में धर्म का महत्त्वपूर्ण स्थान बना हुआ है।

शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम (Teacher, Student and Curriculum) पाठ्यक्रम के उद्देश्यों, उसकी अन्तर्वस्तु, अधिगमानुभावों का चयन, मूल्यांकन प्रक्रिया आदि के सम्बन्ध में निर्णय लेते समय छात्र जनसंख्या को भी ध्यान देना आवश्यक होता है जिसके लिए पाठ्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। साथ ही साथ शिक्षको के आचार-विचार, आस्थाएँ, मान्यताएँ, सामाजिक पृष्ठभूमि एवं शैक्षिक योग्यताएँ आदि पाठ्यक्रम को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं।

समाज की प्रकृति और पाठ्यक्रम (Nature of the Society and Curriculum) कोई समाज न तो पूर्ण रुप से परम्परा प्रेमी होता है और न ही पूर्ण रुप से परिवर्तन प्रेमी होता है। इस प्रकार समाज की प्रकृति के अनुरुप पाठ्यक्रम को स्वयं समायोजित करते रहना पड़ता है। यह एक सतत प्रक्रिया है।

समाज की बदलती आवश्यकताएँ और पाठ्यक्रम (Changing Needs of the Society and Curriculum) आधुनिक समाज में परिवर्तन गति बहुत अधिक तीव्र होने के कारण अनेक नवीन प्रवृत्तियों का उदय हो रहा है जिसके कारण पाठ्यक्रम नियोजकों को कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। किसी भी आधुनिक समाज में मुख्यत: सामाजिक, राजनैतिक, तकनीकी, आर्थिक एवं पारिस्थितिकीय परिवर्तन से सम्बन्धित विषयों को पाठ्यक्रम में समावेशित किया जा रहा है।

www.studyofeducation.com

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि प्रत्येक सामाजिक विचारधारा अपने सामाजिक सिद्धान्तों एवं आवश्यकताओं के आधार पर विषयों को पढ़ाए जाने पर बल देती है तथा किसी समाज में पाठ्यक्रम विषयों का निर्धारण उस समाज, काल, परिस्थिति में प्रचलित एवं आवश्यक समाजशास्त्रीय विचारधारा के आधार पर होता है। इस प्रकार आप जान गए होंगे कि किस प्रकार समाजशास्त्र विषय पाठ्यक्रम निर्माण हेतु एक निर्धारक के रूप में कार्य करता है।

सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का पुनर्निर्माण

मनुष्य एक बौद्धिक और चेतनशील प्राणी है। जीवन में व्यवस्था और सुरक्षा पाने के लिए उसने परिवार, पड़ोस और समाज जैसी संस्थाओं की रचना की है। सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना के परिवर्तन के सन्दर्भ में ग्रीन महोदय ने कहा है कि “प्रत्येक समाज में कुछ-न-कुछ मात्रा में असन्तुलन सदैव बना रहता है।" समाज के अधिकांश लोग उस असन्तुलन को दूर करने के लिए और समाज में नई व्यवस्था लाने के लिए प्रयत्न करते हैं। समाज के कुछ लोग इस नई व्यवस्था के पक्ष में हो जाते हैं तथा कुछ लोग इस परिवर्तन का विरोध करते हैं। लूम्ले ने माना है कि समाज के पुनर्निर्माण रुपी ये बदलाव अनेक कारणों से होते रहते हैं और होते रहेंगे। परिवर्तन ही समाज के जीवित होने का प्रमाण है और इसके अभाव में समाज का विकास सम्भव नहीं है।

भारत के प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक समाज की तुलना करें, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार विभिन्न समयान्तरालों में भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना में किस प्रकार बदलाव हुआ है। यह बदलाव भौगोलिक, सांस्कृतिक, जनसंख्यात्मक तथा प्रौद्योगिक कारकों के कारण होता है।

शिक्षा सामाजिक संस्था के रुप में

शिक्षा को विस्तृत स्तर पर संस्कृति का हस्तान्तरण देने वाली संगठित सामाजिक संस्था के रुप में स्वीकार किया जाता है। विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य प्रकाशन कर देने मात्र स्वत: अगली पीढ़ी में हस्तान्तरित नहीं हो जाते, बल्कि शिक्षण पाठ्यक्रम भावी पीढ़ियों में उन सभी मूल्यों की स्थापना के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परम्परागत शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत, शिक्षण पाठ्यक्रमों द्वारा जो भी ज्ञान और सूचनाएं प्रदान की जाती हैं, उसमें यह अपेक्षा की जाती है कि वे उसे स्मृति में रखें तथा उनमें निहित मूल्यों को समझने और उनका मूल्यांकन करके, भावी पीढ़ियों को हस्तान्तरित कर शिक्षण पाठ्यक्रम से सम्प्रेषण की योग्यता, श्रवण कौशल, कल्पना शक्ति, सृजनात्मकता, संवेदनात्मकता और भावात्मक विकास होता है, लेकिन संस्कृति निहित विभिन्न मूल्यों से व्यवहार एवं अन्तक्रिया के द्वारा दूसरों के प्रति सम्मान, शिष्टाचार आदि गुणों का विकास होता है।

वर्तमान पाठ्यक्रम

औपचारिक पाठ्यक्रम के द्वारा जो कुछ भी मूल्यों के विकास के लिए सिखाया जाता है उसमें प्रतिरुपण (Modeling) सीखने का सशक्त माध्यम है इसलिए इच्छित मूल्य के प्रतिरुपण के लिए शिक्षक में अपेक्षित गुणों का होना अनिवार्य है। वर्तमान में पाठ्यक्रम नियोजन के सन्दर्भ में व्यवहारवादी, प्रयोजनवादी तथा आदर्शवादी विचारधारा को मानने वाले विद्वानों के मध्य मतभेद पाया जाता है। व्यवहारवादी अवधारणा पाठ्यक्रम का निर्धारण इस प्रकार करने की माँग करती है, जोकि समाज के व्यवहारों और क्रियाकलापों में स्पष्टतः दिखाई दे। प्रयोजनवादी विचारधारा के अनुसार प्रत्येक पाठ्यक्रम में नियोजन और विकास प्रक्रिया का कोई-न-कोई प्रयोजन होना चाहिए। इसे उपयोगितावादी विचारधारा भी कहा जाता है। जबकि आदर्शवादी विचारधारा पाठ्यक्रम नियोजन के स्वरुप का निर्धारण इस प्रकार करना चाहती है कि समाज के सभी वर्गों में मूल्यों की दृष्टि से सामाजिक-सांस्कृतिक आदर्श स्थापित हो।

इन सभी विचारधाराओं पर विचार करने के बाद विद्वानों ने यह स्वीकार किया है कि पाठ्यक्रम नियोजन इस प्रकार होना चाहिए कि उससे समाज के सभी वर्गों में सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना का विकास हो। प्रत्येक व्यक्ति में चरित्र के गुणात्मक मूल्यों की स्थापना हो। वर्तमान पीढ़ी इन मूल्यों को आत्मसात् करके आने वाली पीढ़ियों के मार्गदर्शन का माध्यम बन सके। इस प्रकार यह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम द्वारा ऐसे मूल्यों की स्थापना हो जिससे समाज की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का पुनर्निर्माण हो सके।

www.studyforeducation.com

पाठ्यक्रम नियोजन के मनोवैज्ञानिक आधार अध्येता की आवश्यकताएँ और अभिरुचियाँ)

शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति से तात्पर्य शिक्षा को मनोविज्ञान पर आधारित होने से है। जिसमें बालक के मनोवैज्ञानिक तत्त्वों अर्थात् मूल प्रवृत्तियों, इच्छाओं, रुचियों, अभिरुचियों, अभिवृत्तियों, आकांक्षाओं, आवश्यकताओं, बालक के बौद्धिकमानसिक स्तर, शारीरिक क्षमता, अवधान, अध्यापन सम्बन्धी आदतों, अधिगम अन्तरण प्रक्रिया के आधार पर शिक्षा का स्वरुप निर्धारित किया जाता है। इस दिशा में सूसन आइजेम्स, वेलेण्टाइन, मेरिया माण्टेसरी, फ्रॉबेल आदि से लेकर पियाजे, थॉर्नडाइक, कोह्लर, स्किनर, ब्रूनर आदि मनोवैज्ञानिकों ने महत्त्वपूर्ण कार्य किए हैं, किन्तु शिक्षा के क्षेत्र में इसे क्रियात्मक रुप से देने का श्रेय महान् शिक्षाविद् पेस्टालॉजी को है।

पेस्टालॉजी का शैक्षणिक सिद्धान्त

पेस्टालॉजी द्वारा प्रतिपादित शैक्षणिक सिद्धान्त के अनुसार शिक्षा का कार्य बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करना है। अतः अन्तर्निहित शक्तियों का विकास करने हेतु बालक के व्यवहार का अध्ययन कर उसकी मूल प्रवृत्तियों के अनुसार शिक्षा दी जानी श्रेयस्कर है।

www.studyofeducation.com

शिक्षा में मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति ने शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण पद्धति, शिक्षा के संगठन, अनुशासन की अवधारणा, शिक्षक की भूमिका, शिक्षक का व्यवहार, आदि सभी पक्षों को नया आयाम प्रदान किया है। मनोविज्ञान का उद्देश्य है बालक के व्यवहार का अध्ययन कर शिक्षा के द्वारा उसके व्यवहार को परिमार्जित करना

अर्थात् बालक के व्यवहार में सकारात्मक एवं वांछनीय परिवर्तन लाने का प्रयास करना। मनोविज्ञान मानव विकास के विभिन्न पक्षों की खोज कर निरन्तर उनके सुधार में लगा हुआ है। व्यवहार सुधार या परिवर्तन लाने के लिए जो विधि या तरीके मनोविज्ञान द्वारा कार्य में लिए जाते हैं, उनमें पाठ्यक्रम की भी महती भूमिका है।

मनोविज्ञान की सहायता से शिक्षाविद् पाठ्यक्रम का संगठन करते समय बालक की रुचि, आयु, अभियोग्यता, मानसिक बौद्धिक स्तर आदि सभी पक्षों को दृष्टिगत रखते हैं। पाठ्यक्रम का गठन करते समय मनोविज्ञान की सहायता से यह ज्ञात करने का प्रयास किया जाता है कि शिक्षक बालक के साथ कैसा व्यवहार करें? बालक में अधिगम अभिप्रेरणा विकसित करने हेतु कौन सी विधि प्रयुक्त की जाए। विभिन्न नवीन शिक्षण विधियों के माध्यम से बालकों में अधिगम रुचि, जिज्ञासा, योग्यता विकसित करना। मनोविज्ञान ने पाठ्यक्रम निर्माण करने में बालक की आवश्यकता, रुचि, जिज्ञासा स्तर, अधिगम स्तर, अभिप्रेरणा स्तर जैसे महत्त्वपूर्ण आयामों को महत्त्व बल दिया है।

बाल केन्द्रित शिक्षा पाठ्यक्रम

बाल केन्द्रित शिक्षा के स्वरुप के अन्तर्गत पाठ्यक्रम निर्माण की महत्त्वपूर्ण धुरी बालक है। पाठ्यक्रम निर्माण में बालक के महत्त्व को एडवर्ड ए. क्रग ने अपनी पुस्तक 'करीक्यूलम प्लानिंग' में उल्लेख किया है। प्रजातान्त्रिक संगठन व्यवस्था में शिक्षा का उद्देश्य

प्रत्येक व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करने हेतु उसे अधिकतम अवसर उपलब्ध कराना होता है। शिक्षा के माध्यम से बालक की विशिष्ट क्षमताओं, योग्यताओं को पूर्णतः विकसित करना ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है। किसी भी समाज एवं राष्ट्र का विकास एवं समृद्धि मानवीय शक्ति के सही दोहन एवं विकास पर निर्भर है। किसी शैक्षिक कार्यक्रम के लिए उपयुक्त अधिगम अनुभवों के चयन का आधार बालक की आवश्यकताएँ, आकांक्षाएँ एवं दृष्टिकोण ही होता है।

हेराल्ड टी जॉनसन के अनुसार, "पाठ्यक्रम के मनोवैज्ञानिक आधार, मनोविज्ञान के वे पक्ष हैं जो अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं तथा पाठ्यक्रम निर्माता को विद्यार्थी के व्यवहार के सम्बन्ध में बुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय लेने में सहायता करते हैं।' मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पाठ्यक्रम निर्माण के मुख्य निर्धारक निम्नलिखित हैं

परिपक्वता एवं विकास मनुष्य की आयु में वृद्धि के साथ समुचित ढंग से होने वाले शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तनों को मनोविज्ञान में परिपक्वता की संज्ञा दी जाती है। बालक का शारीरिक विकास शिक्षाक्रम को निश्चित रुप से प्रभावित करता है। अतः अधिगम स्थितियों का चयन बालक के विकास की दृष्टि से ही किया जाना चाहिए। इसलिए पेस्टालॉजी ने पाठ्यक्रम निर्माण में विकास के सिद्धान्त को प्रमुखता प्रदान की है।

व्यक्तिगत भिन्नताएँ मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए, तो किन्हीं भी दो व्यक्तियों के बीच तो अन्तर होता ही है, साथ ही व्यक्ति के अन्दर विभिन्न प्रकार की क्षमताओं के विभिन्न स्तर भी होते हैं। वर्तमान में विभिन्न आयु वर्ग के बालकों की आवश्यकताएँ भिन्न-भिन्न होती हैं तथा इन बालकों के लिए अलग-अलग पाठ्यक्रमों का ढंग उपयोग में लाया जा रहा है, किन्तु एक ही आयु वर्ग में व्यक्तिगत भिन्नता के कारण उनके पाठ्यक्रमों में विविधता की भी आवश्यकता है।

अध्येता की आवश्यकताएँ प्रत्येक व्यक्ति शारीरिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से एक भिन्न इकाई होता है। व्यक्तियों की मनोवैज्ञानिक स्तर में भिन्नता के कारण उसकी आवश्यकताओं में भी पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है। पाठ्यक्रम का निर्धारण करते समय अध्येता की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है, क्योंकि मनोवैज्ञानिक भिन्नता के कारण एक ही पाठ्यक्रम प्रत्येक आयु वर्ग के छात्रों के लिए उपयुक्त नहीं हो सकता।अध्येता की मानसिक योग्यता, उसकी परिपक्वता और वर्तमान आवश्यकताओं के आधार पर ही पाठ्यक्रम का निर्धारण और विकास किया जाना चाहिए। हम देखते हैं कि उम्र बढ़ने के साथ-साथ छात्रों के मानसिक और मनोवैज्ञानिक स्तर में भी बदलाव आने लगता है। अतः पाठ्यक्रम निर्धारण के समय इन सभी तथ्यों पर ध्यान देना आवश्यक है।

व्यक्तिगत अभिरुचियाँ अभिरुचि का तात्पर्य किसी वस्तु या विषय के प्रति लगाव का होना है। बालकों में जन्मजात अभिरुचियों की संख्या बहुत कम होती है तथा काव्यात्मक, कलात्मक एवं संगीत सम्बन्धी अभिरुचियों को छोड़ कर अधिकतर अभिरुचियाँ बालक वातावरण से अर्जित करते हैं। इसके लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं को विविध अधिगम-अनुभवों के साथ-साथ उचित अभिप्रेरकों, निर्देशन तथा पुनर्बलन की व्यवस्था की ओर भी ध्यान देना चाहिए। इसलिए पाठ्यक्रम निर्माण में रुचि के सिद्धान्त का अपना विशेष महत्त्व है।

www.studyofeducation.com

अभिप्रेरणा अभिप्रेरणा से प्राणी की अनुक्रिया की शक्ति में वृद्धि होती है। अभिप्रेरणा द्वारा किसी क्रिया को सीखने के लिए उत्साह उत्पन्न किया जा सकता है। अतः एक कुशल शिक्षक विद्यालय में अभिप्रेरणा का सकारात्मक उपयोग करके बालकों को नवीन तथ्यों के विषय में रुचि उत्पन्न कर सकता है तथा पाठ्यक्रम निर्माणकर्ता को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि निश्चित तथ्यों के पश्चात् अभिप्रेरणा की व्यवस्था की गई हो।

अधिगम प्रक्रिया एवं अधिगम स्थानान्तरण पाठ्यक्रम नियोजकों के लिए अधिगम-प्रक्रिया के सैद्धान्तिक पक्ष की अपेक्षा इसका व्यावहारिक एवं शैक्षिक पक्ष अधिक महत्त्वपूर्ण है, मनोविज्ञान के विकास के साथ ही साथ अधिगम-मनोविज्ञान भी बहुत विकसित हो चुका है। अधिगम का क्षेत्र-सिद्धान्त उद्दीपन एवं अनुक्रिया के बीच होने वाली प्रक्रियाओं की संकल्पना पर आधारित है। अतः पाठ्यक्रम नियोजकों एवं शिक्षकों को सम्बन्ध स्थापित करते समय उनकी मध्यवर्ती क्रियाओं-प्रतिक्रियाओं के प्रति भी सजग रहने की आवश्यकता होती है।

अधिगम या प्रशिक्षण के स्थानान्तरण तात्पर्य एक परिस्थिति या क्षेत्र में अर्जित ज्ञान, प्रशिक्षण और आदतों का दूसरी परिस्थिति या क्षेत्र में उपयोग किया जाना है। अधिगम के स्थानान्तरण को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम नियोजकों को पाठ्यक्रम का निर्धारण छात्रों की आवश्यकता के अनुकूल होना चाहिए। पाठ्यक्रम के माध्यम से भावी जीवन की आवश्यकताओं का भी परिचय कराया जाना चाहिए।

बेंचमार्किंग तथा राष्ट्र स्तरीय सांविधिक निकायों की भूमिका

शिक्षा कोई भौतिक वस्तु नहीं है, जिसे शिक्षक डाक द्वारा कहीं भी पहुँचा सके। उत्तम शिक्षा की जड़ें हमेशा ही बच्चे के भौतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में गहरे रुप में स्थित होती हैं। छात्र की शिक्षा गतिविधियों में प्रथम स्तर पर परिवार और द्वितीय स्तर पर शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। शैक्षिक स्तर पर किसी भी राष्ट्र के विकास का सिद्धान्त अनिवार्य रुप से वहाँ की शिक्षा व्यवस्था से जुड़ा होता है। शिक्षा व्यवस्था जितनी प्रभावशाली और गुणात्मक होगी, राष्ट्र भी उतना ही अधिक समृद्धि करेगा। आर्थिक सन्दर्भो के अतिरिक्त, राष्ट्र की राजनीतिक व्यवस्था के निर्धारण में भी शिक्षा पाठ्यचर्या का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

भारत के सन्दर्भ में यदि बात की जाए तो यहाँ लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था के अन्तर्गत बहुत सी सामाजिक-सांस्कृतिक विविधताएँ पाई जाती हैं। अतः यह आवश्यक है कि शिक्षा पाठ्यचर्या के निर्माण और विकास में इन सभी सांस्कृतिक विविधताओं को ध्यान में रखा जाए। शैक्षिक पाठ्यचर्या के स्वरूप के निर्धारण में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) तथा राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एनसीटीई) प्रमुख भूमिका निभाते है। जबकि विश्वविद्यालय इन संस्थाओं द्वारा बनाए गए बेंचमार्को, मानदण्डों ओर पाठ्यचर्या को व्यावहारिक रुप प्रदान करते हैं।

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या विकास में UGC की भूमिका

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (University Grant Commission, UGC) का गठन विभिन्न विश्वविद्यालयों को अनुदान देने, उनमें समन्वय स्थापित करने तथा उनके स्तर के मानक तय करने हेतु वर्ष 1953 में किया गया तथा वर्ष 1956 में संसद के एक अधिनियम द्वारा इसे पूर्व स्वायत्तशासी सांविधिक संस्था बना दिया गया। यू. जी. सी. पाठ्यचर्या विकास में निम्नलिखित भूमिका निभाता है

- विश्वविद्यालयों के शिक्षा पाठ्यचर्या की पुनर्संरचना करना।
- पाठ्यचर्या विकास के सम्बन्ध में चयनित विभागों में सहायता कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करना।
- पाठ्यचर्या विकास के लिए अनुसन्धान कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देना और सहायता प्रदान करना।
- स्वायत्तशासी महाविद्यालयों में पाठ्यचर्या विकास गतिविधियों को बढ़ावा देना। विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यचर्या विकास, मानवीकरण और निष्पादन हेतु संगोष्ठियों, कार्यशालाओं के आयोजन हेतु सहायता और सुझाव देना।
- पाठ्यचर्या विकास से सम्बन्धित अन्य निकायों जैसे NCTE (National Council for Teacher Education), NCERT (National Council of Education Research and Training) आदि के साथ समन्वयात्मक रुप में कार्य करना।
- पाठ्यचर्या निर्माण और विकास मानदण्डों में गुणात्मक सुधार हेतु राज्य सरकारी और राज्य स्तर पर कार्यरत् सभी संगठनों और अभिकरणों को सहयोग प्रदान करना एवं सहायता करना। .
- अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं यूनिसेफ, UNDP (United Nation Development Programme) आदि के साथ पाठ्यचर्या निर्माण कार्यक्रमों में सहयोग करना।
- पाठ्यचर्या निर्धारण कार्यक्रमों के लिए एशिया-प्रशान्त क्षेत्र में यह आयोग राष्ट्रीय विकास समूह के सचिवालय के रूप में कार्य करता है।
- राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आदि राष्ट्रीय स्तर के निकायों के साथ पाठ्यचर्या विकास कार्यक्रमों में सहयोगी की भूमिका निभाना।

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या विकास में NCTE की भूमिका

शिक्षा आयोग (1964-66) के सुझावों के आधार पर राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की स्थापना वर्ष 1973 में की गई थी। वर्ष 1993 में संसद के एक अधिनियम द्वारा इसे सांविधिक दर्जा प्रदान किया गया। इस परिषद् ने 1 जुलाई, 1995 से विधिवत अपना कार्य प्रारम्भ किया। यह परिषद् पाठ्यचर्या विकास के सन्दर्भ में निम्नलिखित भूमिका निभाती है

- यह परिषद् पाठ्यचर्या विकास कार्यक्रमों के लिए विभिन्न मानदण्ड और मानक तैयार करती है।
- अध्यापक शिक्षा के सन्दर्भ में पाठ्यचर्या कार्यक्रमों के निर्धारण के लिए यह परिषद् यू.जी.सी. को सहयोग करती है।

- नए अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या कार्यक्रमों के लिए संस्थानों को मान्यता प्रदान करती है।
- उपलब्ध शिक्षण संस्थानों के लिए यह परिषद् नए पाठ्यचर्या कार्यक्रमों को शुरु करने के लिए मान्यता प्रदान करती है।
- यह परिषद् बदलती शिक्षा जरुरतों के अनुसार शिक्षा पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क को तैयार करती है।
- एन. सी. टी. ई. द्वारा तैयार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क-2005 में पाठ्यचर्या निर्माण के पाँच सिद्धान्तों को स्वीकार किया गया है

  - ➢ ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ना।
  - ➢ पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्ति को सुनिश्चित करना।
  - ➢ पाठ्यचर्या का संवर्धन इस प्रकार हो कि वह बच्चों को चहुंमुखी विकास के अवसर उपलब्ध कराए तथा यह सुनिश्चित हो कि शिक्षा केवल पाठ्य-पुस्तक केन्द्रित बन कर नहीं रह जाए।
  - ➢ परीक्षा को अपेक्षाकृत अधिक लचीला बनाना और कक्षा कि गतिविधियों से जोड़ना।
  - ➢ एक ऐसी अधिभावी शिक्षण पाठ्यचर्या का विकास करना जिसमें प्रजातान्त्रिक राज्य-व्यवस्था के अन्तर्गत राष्ट्रीय चिन्ताएँ समाहित हो।

www.studyfeducation.com

पाठ्यचर्या विकास में विश्वविद्यालयों की भूमिक

सामान्य रुप में पाठ्यचर्या उन क्षमताओं के विकास की योजना होती है, जिनके में माध्यम से चयनित शैक्षणिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। मानवीय क्षमताओं के आयाम काफी विस्तृत होते हैं और शिक्षा के माध्यम से हम उन सभी आयामों का विकास नहीं कर सकते। पाठ्यचर्या द्वारा उन क्षमताओं का विकास किया जाता है जो बच्चों में अवबोध, मूल्यों और कौशल का वृहत् आधार तैयार करती है। पाठ्यचर्या विकास में विश्वविद्यालय की निम्नलिखित भूमिका होती हैं

- ➢ पाठ्यचर्या के विकास सम्बन्ध में विश्वविद्यालयों का योगदान उन्हें व्यावहारिक स्वरुप प्रदान करने में है। विषय द्वारा दिए गए कौशलों के आधार पर विश्वविद्यालय, छात्रों में सामाजिक यथार्थ और परिवेश के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास करते हैं।
- ➢ विभिन्न अनुशासनों में अन्तर्सम्बन्ध के आधार पर आवश्यक पाठ्यचर्या के निर्धारण हेतु विश्वविद्यालय, पाठ्यचर्या निर्मात्री संस्थाओं को सहयोग करते हैं।
- ➢ शिक्षा के द्वारा छात्रों के गुणात्मक स्तर में वृद्धि हो, यह सुनिश्चित करने के लिए विश्वविद्यालय, पाठ्यचर्या कार्यक्रमों के निर्माण में योगदान करते हैं।
- ➢ राष्ट्र के सामाजिक-राजनैतिक-सांस्कृतिक मूल्यों का विकास हो, इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए पाठ्यचर्या कार्यक्रमों का विकास करना।

➢ विश्वविद्यालय यह सुनिश्चित करने का प्रयास करते हैं कि पाठ्यचर्या का विकास इस प्रकार हो कि यह छात्रों और अध्यापकों को समाज से जोड़ने का माध्यम बन सके।
➢ विश्वविद्यालयों द्वारा पाठ्यचर्या विकास इस प्रकार किया जाता है कि इससे छात्रों में समानता के मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता आए।
➢ छात्रों और अध्यापकों को समाज के विभिन्न वर्गों से जोड़ने के लिए विश्वविद्यालय विभिन्न पाठ्यचर्या कार्यक्रमों का नियोजन भी करते हैं।

पाठ्यचर्या अभिकल्प के मॉडल

पाठ्यचर्या अभिकल्प (curriculum Designs)

पाठ्यचर्या अधिकल्प, पाठ्यचर्या निर्माण की दिशा में पहला कदम है। यह पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया को दिशा विदसित करता है। नौके पाठ्यचयों एक परिवर्तनशील तत्त्व है, इसलिए पाठ्यचर्या अभिकल्प में भी निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। यह परिवर्तन बदलतो हुई समाज को शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु करना पड़ता है। इन पारिवको के परिणामस्वरूप पाठ्यचर्या अभिकल्प के अनेक रुप अस्तित्व में आए। शिक्षा प्रणाली के सन्तुलित विकास के लिए भी पाठ्यचर्या अभिकल्प के विभिन्न प्रकार का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि एक अभिकल्प पर धारित पाड्मया से शिक्षा व्यवस्था का समुचित विकास नहीं हो सकता।

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या अभिकल्प के विभिन्न मॉडल

एक अभिकल्प का मॉडल सिद्धान्त एक शैक्षिक अनुशासन है जो शौक्षिक पाठ्यक्रम को जाँच और आकार र समान है। पाठ्यचर्या अभिकल्प सिद्धान्त मूल रुप से मूल्यों पाठ्यक्रमों के ऐतिहासिक विश्लेषण, मक पायजम और नीतिगत निर्णयों को देखने के तरीकों और भविष्य के पाठ्यक्रम के बारे में सम्बन्धित है। पासपर्श को मुरुप रुप से शिक्षा में उपभोग की जाने वाली योजना के रूप में परिभाषित किया जाता

हालय में अध्यापकों को इसके शिक्षण को गति प्रदान करने हेतु पाठ्यक्रम अभिकल्प तैयार किया है। यह एक प्रकार से उपकरण के समान कार्य करता है जिसे पाठ्यक्रम गाइड कहा जाता है। ये सभी चीजे पाक के मालक आधारित है। समाजमा विकास में एक मोडल पर शासगिक भूमिका निभाता है।

औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र मे पाठ्यचर्या विद्यालय या विश्वविद्यालय में प्रदान किए जाने वाली विशेष सामग्री होती है। पाठ्यचर्या मुख्यतः निर्देशात्मक होता है एवं अधिक सामान्य पाठ्यक्रम पर आधारित होता है जो केवल यह निर्दिष्ट करता है कि एक विशिष्ट मानक प्राप्त करने हेतु किन विषयों को किस स्तर तक समझना आवश्यक है। पाठ्यक्रम एक अभिकल्प योजना है जिसके माध्यम से उद्देश्यपूर्ण आवश्यक गुण अधिगम करते हैं। इसके द्वारा अध्यापकों से अन्तःक्रियाएँ होती है, साथ ही विद्यार्थी उस ज्ञान से अवगत होते हैं, जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है। पाठ्यक्रम मॉडल अभिकल्प का एक प्रतिरुप माना जाता है। यह अनिवार्य जरुरतो, उद्देश्यों को पूर्ण करता है। इसके माध्यम से निर्धारित लक्ष्यों को पूरा किया जाता है। पाठ्यक्रम विकासकर्ता इस अभिकल्प को सृजित करते हैं। सार्वभौमिक पाठ्यक्रम इकाई के प्रमुख तत्त्वों में विषय-वस्तु, आकलन, परिचय, शिक्षण रणनीति, अधिगम गतिविधियाँ, संसाधन, पिंग, उत्पाद, विस्तृत गतिविधियाँ शामिल हैं।

परम्परागत मॉडल (Traditional Model)

वर्ष 1949 में राल्फ टायलर ने इस मॉडल को तैयार किया था। परम्परागत मॉडल प्रक्रिया में प्रशिक्षक पाठ्यक्रम के उद्देश्यों की रुपरेखा तैयार करते हैं। पाठ्यक्रम के छात्र अधिगम के उद्देश्यों के माध्यम से अपेक्षित कार्यक्रम परिणाम प्राप्त करते हैं और जाँचते हैं कि क्या इन उद्देश्यों को अपेक्षित परिणामों से वास्तविक परिणामों की तुलना करके प्राप्त किया जाता है। नीचे दिए गए आरेख के माध्यम से समग्र पारम्परिक पाठ्यक्रम डिजाइन प्रक्रिया को दर्शाया गया है। पारम्परिक मॉडल को विषय आधारित अभिकल्प कहा जाता है।

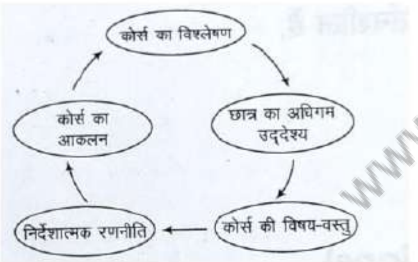

पारम्परिक पाठ्यक्रम डिजाइन (करिकुलम डिजाइन) पारम्परिक रुप से सूचना-आवृत्ति के असतत् टुकड़ों के संचरण पर केन्द्रित है। टायलर के अनुसार परम्परागत पाठ्यक्रम एक प्रगतिशील प्रक्रिया है। पारम्परिक पाठ्यक्रम मॉडल में सामान्यतः शिक्षक होता है, जो निर्देशात्मक रूप से छात्रों को विभिन्न तथ्यों से अवगत करवाता है। एक विशिष्ट पारम्परिक पाठ्यक्रम छात्रों को प्रेषित किए जाने वाले ज्ञान के एक विशिष्ट निकाय पर केन्द्रित है और तथ्यों तथा सूत्रों के संस्मरण एवं ड्रिलिंग पर बहुत अधिक निर्भर करता है।

शिक्षण की पारस्परिक मॉडल विधि यह कहती है कि जब अध्यापक छात्रों को संस्मरण और सस्वर पाठ के माध्यम से सीखने का निर्देश देता है, तो छात्रों में इससे समस्या को हल करने या निर्णय लेने के कौशल का विकास नहीं होता। पारम्परिक पाठ्यक्रम को शिक्षण की पारम्परिक पद्धति माना जाता है। सीखने के सन्दर्भ में छात्र केन्द्रित पाठ्यक्रम में अनेक तत्त्वों का समावेशन किया जाता है। ये तत्त्व पारम्परिक पाठ्यक्रम के मूल्यांकन के समान होते हैं। दो मॉडलों के मध्य महत्त्वपूर्ण अन्तर यह होता है कि पूर्व में पाठ्यक्रम शिक्षकों और शिक्षार्थियों का एक सहयोगात्मक प्रयास है, क्योंकि शिक्षार्थी पाठ्यक्रम की सामग्री और इसे पढ़ाने के

www.studyofeducation.com

तरीके के बारे में निर्णय लेने की प्रक्रिया मे निकटता से शामिल है। जहाँ तक पाठ्यक्रम प्रक्रिया का सम्बन्ध है, एक छात्र केन्द्रित दृष्टिकोण को इसकी प्रारम्भिक योजना प्रक्रियाओं द्वारा पारम्परिक दृष्टिकोणों से अलग और प्रतिष्ठित किया जा सकता है।

इस प्रक्रिया में जानकारी का संग्रह शामिल है, ताकि उनके उद्देश्य, आवश्यकताओं का निदान किया जा सके, जिनको इसकी आवश्यकता है। यह प्रारम्भिक डाटा संग्रह होता है, जो सामान्यत: सतही होता है, को पाठ्यक्रम की रुचि अधिगम व्यवस्था लक्ष्यों के साथ-साथ उपयुक्त कार्यप्रणाली से सम्बन्धित जानकारी, छात्रों के सीखने से अधिक व्यक्तिपरक जानकारी द्वारा पूरा किया जाता है। पाठ्यचर्या मॉडल पाठ्यचर्या निर्माण की दिशा में पहला कदम माना जाता है। यह पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया को दिशा निर्देशित करता है। चूंकि पाठ्यचर्या एक परिवर्तनशील तत्त्व है, इसलिए पाठ्यचर्या मॉडल में भी निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं।

यह परिवर्तन बदलती हुई समाज की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु करना पड़ता है। इन परिवर्तनों के परिणामस्वरुप पाठ्यचर्या प्रारुप के अनेक प्रकार अस्तित्व में आए। शिक्षा प्रणाली के सन्तुलित विकास के लिए भी पाठ्यचर्या मॉडल के विभिन्न प्रकार का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि किसी एक मॉडल पर आधारित पाठ्यचर्या से शिक्षा प्रणाली का समुचित विकास नहीं हो सकता है।

पाठ्यचर्या मॉडल को मुख्य रुप से तीन भागों में विभाजित किया जाता है

1. विषय केन्द्रित मॉडल

2. विद्यार्थी केन्द्रित मॉडल

3. समस्या केन्द्रित मॉडल

www.studyofeducation.com

1. विषय केन्द्रित मॉडल

इस प्रकार के पाठ्यचर्या मॉडल में विभिन्न विषयों को केन्द्र में रखा जाता है। इस मॉडल के अन्तर्गत अधिगम के पारम्परिक क्षेत्रों के लिए पारम्परिक विषयों को अन्तःआनुशासनिक विषयों के लिए समस्या समाधान सम्बन्धी तथा निर्णयन क्षमता सम्बन्धित क्रिया को इस उद्देश्य के साथ शामिल किया जाता है कि विद्यार्थी इससे प्राप्त सूचनाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन कर सकें। इसे पारम्परिक प्रारुप भी कहा जाता फिलीपीन्स में यह मॉडल विशेष रुप से प्रचलित है।

विषय केन्द्रित प्रारुप की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

इस प्रकार के पाठ्यक्रम मॉडल की मुख्य विशेषता यह है कि यह मॉडल काफी अधिक एवं संरचनात्मक स्वरुप सामान्य हैं।
यह शाब्दिक क्रियाओं पर अधिक बल देता है तथा विद्यार्थियों को समाज के लिए आवश्यक ज्ञान से परिचित कराता है।
यह प्रारुप पारम्परिक है तथा इसका क्रियान्वयन करना आसान होता है।
इसके माध्यम से विद्यार्थी पाठ्यवस्तु पर स्वामित्व प्राप्त कर लेता है। इस प्रारुप के तहत अधिगम स्वतन्त्र होता है।

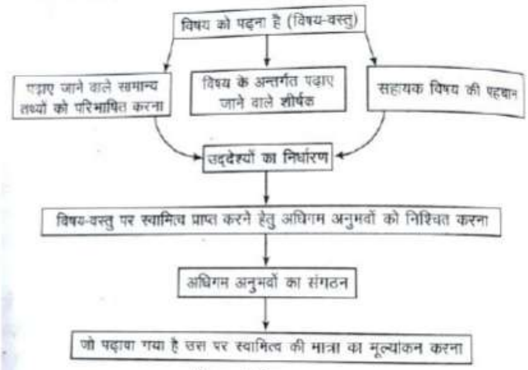

विषय केन्द्रित प्रारूप

विषय केन्द्रित प्रारुप की सीमाएँ निम्नलिखित है

- विषय केन्द्रित मॉडल (प्रारुप) में अधिगम सीमित हो जाता है।
- यह विषय-वस्तु पर इतना अधिक बल देता है कि बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियों एवं रुचियों की ओर विशेष ध्यान नहीं दे पाता है। इससे विद्यार्थियों मे निष्क्रियता की भावना उत्पन्न होती है। वे हतोत्साहित होने लगते हैं।
- विद्यार्थियों का सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक विकास अवरुद्ध हो जाता है।

विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम डिजाइन एक विशेष विषय-वस्तु या अनुशासन के चारों ओर घूमता रहता है; जैसे-गणित, साहित्य, विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम डिजाइन छात्र केन्द्रित नहीं है और यह मॉडल अन्य प्रकार के डिजाइन मॉडल की तुलना में व्यक्तिगत शिक्षण शैलियों से कम प्रभावित है।

www.studyofeducation.com

2. विद्यार्थी केन्द्रित मॉडल

पाठ्यचर्या का यह मॉडल मुख्यतः विद्यार्थियों की रुचि एवं आवश्यकता को केन्द्र में रखकर बनाया जाता है। इस प्रकार के मॉडल में कुछ सामान्य कार्य-कलाप; जैसे-खेल, चित्रकला, कहानी आदि जिसमें कि बच्चों को शामिल किया जा सकता है, को अध्ययन-अध्यापन के केन्द्र में रखा जाता है।

विद्यार्थी केन्द्रित मॉडल की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

- इस पाठ्यचर्या मॉडल की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें 3 आर (रीडिंग, राइटिंग एवं अर्थमेटिक) के सम्प्रत्यय को विभिन्न कार्य-कलापों में समाहित कर दिया जाता है।
- यह प्रारुप संरचनात्मक अधिगम को प्रोत्साहित करता है साथ ही इसमें पाठ्यवस्तु को अलग-अलग विषयों में नहीं, बल्कि अनुभव की इकाइयों के रुप में विभाजित किया जाता है।
- यह करके सीखने पर ज्यादा बल देता है, फलस्वरूप विद्यार्थी शिक्षक और वातावरण के मध्य अन्तक्रिया को भी बल मिलता है।

विद्यार्थी केन्द्रित मॉडल की सीमाएँ की निम्नलिखित हैं

- यह विद्यार्थी के बौद्धिक विकास के पक्ष को नकारता है।
- इसमें पाठ्यवस्तु निश्चित नहीं होती है। करके सीखने की विधि की पाठ्यवस्तु के लिए उपयुक्त नहीं होती है।
- इसमें पाठ्यचर्या का कोई भी घटक विशिष्ट नहीं होता है, इसके द्वारा एक सार्वभौम पाठ्यचर्या संरचना का निर्माण नहीं किया जा सकता।

3. समस्या केन्द्रित मॉडल

किसी वास्तविक या उपकल्पित समस्या को केन्द्र में रखकर पाठ्यवस्तु को संगठित करने के लिए जब पाठ्यचर्या मॉडल का निर्माण किया जाता है, तो इसे समस्या केन्द्रित पाठ्यचर्या मॉडल कहा जाता है। पाठ्यचर्या के इस मॉडल में विद्यार्थी अधिक सम्मिलित होते हैं, क्योंकि उनका उद्देश्य अपनी समस्या का समाधान करना होता है।

www.studyofeducation.com

समस्या केन्द्रित मॉडल की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

- इस प्रकार के पाठ्यचर्या मॉडल की मुख्य विशेषता यह है कि पाठ्यचर्या जिसके लिए बनाई जाती है वह केवल सैद्धान्तिक रूप से ही नहीं वरन् व्यावहारिक रुप से भी अधिक सहभागिता प्रदर्शित करता है।
- इसके द्वारा पाठ्यवस्तु का जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से सम्बन्धित होने के कारण, पाठ्यचर्या की प्रासंगिकता में वृद्धि हो जाती है।
- यह विषयवस्तु को खण्डों के बजाए एक समग्र इकाई के रुप में प्रस्तुत करता है तथा समस्या समाधान विधि का पाठ्यचर्या के इस प्रारुप में बहुत प्रयोग किया जाता है।

समस्या केन्द्रित मॉडल की सीमा निम्नलिखित हैं -

- इस पाठ्यचर्या मॉडल की मुछा सौपा यह है कि पाय, पत्र एवं प्राक अभाव में इसका क्रियान्वयन सचित नहीं हो पाता है।
- संसाधनों अधिगम के आवश्यक क्षेत्रों एवं उसके क्रम को कैये निर्धारित किया जाएगा, पाठ्यचर्या का यह प्रारुप इस विषय पर मौन है।
- यह विद्यार्थियों को उनके सांस्कृतिक विरासत में बहुत अधिक परिचित नही करा पाता।

शैक्षिक एवं विषय आधारित पाठ्यक्रम मॉडल (Academic/Disciplinary Based Model)

इसे भी परम्परागत पाठ्यक्रम मॉडल माना जाता है। पाट्यक्रम को एक शैक्षिक योजना माना जाता है जिसमें पाठ्यक्रम के विभिन्न उद्देश्य (जैसे छात्र के सीखने हेतु लक्ष्य) सामग्री, अनुक्रम (सीखने के अनुभव का क्रम), निर्देशात्यक तरीके, निर्देश, मूल्यांकन, दृष्टिकोण और कैसे समायोजन स्थापित किया जाए इत्यादि। अनुभव के आधार पर विशेष योजना बनाई जाती है। शैक्षिक आधारित पाठ्यक्रम मॉडल एक विशिष्ट शैक्षणिक योजना पर क्रियान्वित किया जाता है। इसके अनुसार केन्द्रीय पाठ्यक्रम की मूलभूत आवश्यकताओं के आधार पर छात्रों को सीखने का पूर्ण अधिकार होना चाहिए।

स्कूलों में छात्रों को सीखने के लक्ष्य और शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करने हेतु शैक्षिक आधारित पाठ्यक्रम मॉडल को विकसित किया गया। इस मॉडल का मुख्य उद्देश्य शिक्षण लक्ष्य को पुनः निर्धारित करना, सामग्री के संगठन को अलग करना, वैकल्पिक अध्ययन, शिक्षण, शिक्षण और मूल्यांकन इत्यादि शामिल हो सकते हैं। स्कूल आधारित पाठ्यक्रम शैक्षिक आधारित ही माना जाता है। यह एक परम्परागत पाठ्यक्रम मॉडल है। इस मॉडल में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। इस पाठ्यक्रम के निर्माण में शिक्षक की भूमिका प्रासंगिक मानी जाती है। यह शिक्षकों के लिए शिक्षा की योजना बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करता है तथा पाठ्यचर्या के क्षेत्रों का सर्वेक्षण तथा आकलन करता है। शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण पाठ्यचर्या विकास का प्रथम सोपान माना जाता है।

www.studyeducation.com

पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के निर्धारण से शैक्षणिक कार्यक्रमों को दिशा मिलती है। इससे शैक्षिक क्रियाओं की प्रकृति का निर्धारण होता है। शैक्षिक कार्यक्रमों के नियोजन एवं व्यवस्थीकरण को निश्चित आधार मिलता है, साथ ही शैक्षिक कार्यक्रमों को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करने में सहायता मिलती है। अधिगम के विभिन्न पक्षों में विभेदीकरण सम्भव होता है। विकास एवं उपलब्धि के मापन को विशेष आधार मिलता है। अधिगम स्थितियों को पैदा करने में ऐसे पाठ्यक्रम शैक्षिक प्रक्रिया को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

बी. एस. ब्लूम के अनुसार, शैक्षिक उद्देश्यों की सहायता से केवल पाठ्यचर्या की ही रचना तथा अनुदेशन हेतु निर्देश नहीं दिया जाता है, बल्कि ये मूल्यांकन की प्रविधियों के विशिष्टीकरण में भी सहायक होते हैं। पाठ्यक्रम का वह मॉडल जिसमें सामग्री को अलग-अलग विषयों में विभाजित किया जाता है; जैसे—भाषा, विज्ञान, गणित एवं सामाजिक अध्ययन इत्यादि। अनुशासन आधारित या विषय आधारित शब्द विभिन्न विषयों या अध्ययन के क्षेत्रों की पूरी श्रृंखला को शामिल करता है। शिक्षार्थियों के पास लगातार अवसर हो जिससे कि वे अध्ययन के क्षेत्रों में अपने अनुशासनात्मक कौशल का अभ्यास इस प्रकार से कर सकें, जो बाद के पाठ्यक्रमों को पहले के कार्यों पर बनाने की अनुमति देता है। अनुशासनात्मक आधारित पाठ्यक्रम का अनुदेशात्मक बल विशिष्ट होता है। साथ ही वर्तमान एवं तथ्यात्मक जानकारी और कौशल पर होता है, यह अनुशासन विशेषज्ञों से निकलता है।

एक अनुशासन आधारित पाठ्यक्रम दृष्टिकोण एक विषय के अन्दर शिक्षण को विशेषज्ञता, सामग्री ज्ञान की सघनता और उसके अनुशासन के सम्मेलनों के लिए अखण्डता को नियमित रुप से प्रोत्साहित करता है। अनुशासन आधारित पाठ्यक्रम एक विषय के अन्दर शिक्षण अभ्यास का दृष्टिकोण रखता है और शिक्षकों के समग्र ज्ञान की गहराई और उनके सिद्धान्तो के प्रति समग्र ज्ञान को प्रदर्शित करता है। अनुशासन विशिष्ट शिक्षण दृष्टिकोण और अभ्यास है। शिक्षण दृष्टिकोण और शास्त्र एक अनुशासन के लिए विशिष्ट पहलू माना जाता है। उदाहरणस्वरुप, साक्षात्कार के दौरान साझा पठन या विज्ञान की जाँच करना सोच-विचार की विशिष्ट आदते मानी जाती हैं।

सक्षमता आधारित मॉडल (Competency Base Model)

सक्षमता आधारित मॉडल कक्षा की वस्तुस्थिति की कसौटी की भूमिका के आकलन पर आधारित माना जाता है। यह मॉडल मुख्यतः छात्र केन्द्रित मॉडल है तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है। इसके माध्यम से छात्रों की प्रगति का विविध विधियों द्वारा मूल्यांकन सम्भव है। शिक्षण कार्यों में गुणात्मक सुधार लाने हेतु सक्षमता आधारित मॉडल अधिक प्रभावी माना जाता है। यह अध्यापकों की प्रस्थिति को सुधारने में सहायता करता है। यह अध्यापकों को शिक्षण के लिए उपयुक्त विधि एवं तरीकों के अवसर सृजित करता है तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को उत्कृष्ट बनाने में सहायता करता है। यह मॉडल अध्यापक एवं विद्यार्थी दोनों को उनके उद्देश्यों एवं इच्छाओं को पूर्ण करने में सहायता करता है।

सक्षमता आधारित मॉडल योग्यता आधारित शिक्षा और प्रशिक्षण अमूर्त सीखने की तुलना मे ठोस कौशल अधिगम प्रणाली है। इसमें एक पाठ्यक्रम या एक मॉड्यूल के स्थान पर प्रत्येक व्यक्तिगत कौशल या सीखने के परिणाम एक एकल इकाई है। शिक्षार्थी एक समय में एक योग्यता पर कार्य करते हैं। इस मॉडल की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें व्यक्तिगत दक्षता के आधार पर छात्र का मूल्यांकन किया जाता है तथा विद्यमान कौशल को उत्कृष्ट बनाने में भूमिका निभाता है, इससे सक्षमता में नियमित वृद्धि होती रहती है। जैसे-जैसे सक्षमता में बढ़ोतरी होती है, उसके बाद उच्च या अधिक जटिल सक्षमताओं में भी दक्षता प्राप्त हो जाती है। योग्यता आधारित शिक्षा को एक अन्य सामान्य घटक सीखने के मॉडयूल को पूरी तरह से छोड़ने की क्षमता है, परन्तु यह तभी सम्भव है जब शिक्षार्थी अपनी योग्यता का पूर्ण प्रदर्शन करने में पूरी तरह से सक्षम हो, जिसे पूर्व शिक्षण मूल्यांकन या फॉमेटिव परीक्षण के माध्यम से निर्धारित किया जा सकता है।

सक्षमता मॉडल द्वारा अधिगम का समर्थन निम्न कारणों से किया जाता है

- सक्षमता पाठ्यक्रम मॉडल से अधिगम क्षमता प्रबल होती है, किसी भी संगठन में सफलता पाने हेतु इसे आवश्यक माना जाता है।

www.studyofeducation.com

- संगठनात्मक आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु शिक्षण विकल्पों/पाठ्यक्रम/ कार्यक्रम की पहचान करने हेतु रुपरेखा प्रदान करना।
- व्यक्तिगत और संगठनात्मक दोनों स्तरों पर यह मॉडल निर्धारित करता है कि मानक के अनुरुप शिक्षण की स्थिति बेहतर हुई।

सक्षमता आधारित मॉडल अधिगम पर केन्द्रित माना जाता है। यह मॉडल प्रत्येक व्यक्ति को अपनी गति से कौशल विकसित करने, दूसरों के साथ सहयोग करने, सीखने सम्बन्धित साक्ष्यों को एकत्र करने, सफल आजीवन सीखने वाले बनने के अवसर प्रदान करता है। इसे सक्षमताओं का संग्रह कहा जाता है, जो संयुक्त रुप से शैक्षणिक प्रदर्शन को अभिव्यक्त करता है। सक्षमता आधारित शिक्षा निर्देश, मूल्यांकन, ग्रेडिंग और अकादमिक प्रतिवेदन की प्रणालियों को सन्दर्भित करती है, जो छात्रों के प्रदर्शन पा विशेष मपये आधारित होती है। जो यह दिखाते हैं कि उन्होंने अपनी शिक्षा के माध्यम से जिस ज्ञान और कौशल को सीखने की उम्मीद की अन्ततः सीख गए) हा मॉडल की मुख्य विशेषता यह है कि मॉडल अधिगम आधारित है। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी गति से कौशल विकसित करने, दूसरों के साथ सहयोग करने, सीखने के साक्ष्य एकत्र करने से सम्बन्धित है।

सामाजिक कार्य/क्रियाकलाप मॉडल (सामाजिक पुनर्निर्माण)

शिक्षा में सामाजिक प्रवृत्ति का तात्पर्य शिक्षा द्वारा बालकों में सामाजिक गुणों के विकास करने के प्रयास करने की प्रक्रिया से है जिससे व्यक्ति और समाज दोनों का कल्याण हो सके। 19वीं शताब्दी के महान् दार्शनिक रूसो व्यक्तिवाद की प्रतिक्रिया के फलस्वरुप सामाजिकतावादी प्रवृत्ति का जन्म हुआ, जिसने व्यक्ति को बदलते हुए समाज में रहने के लिए तैयार करने आवश्यकता पर बल दिया।

इसी समय फ्रांसीसी विद्वान् ऑगस्त कॉम्टे ने एक नवीन सामान्य सामाजिक विज्ञान समाजशास्त्र को जन्म देकर शिक्षा में समाजशास्त्रीय प्रवृत्ति को पूर्ण बना देने की सुदृढ़ आधारशिला रख दी। समाजशास्त्र की ही शाखा शैक्षिक समाजशास्त्र को समाज के सभी आदर्शों, नियमों, समस्याओं, साधनों एवं उनके व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करके समाज की उन्नति के लिए शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यक्रमों शिक्षण विधि, पाठ्य-पुस्तकें, अनुशासन, विद्यालय तथा शिक्षक आदि का स्वरुप निर्धारित करती है। पाठ्यक्रम के निर्माण में समाज की क्या भूमिका है तथा पाठ्यचर्या निर्माण इससे कैसे प्रभावित होता इसकी विशेषताएँ निम्नलिखित हैं

- सामाजिक स्थिति
- परिवार
- समाजशास्त्रीय प्रवृत्ति

www.studyofeducation.com

- सामाजिक दबाव समूह
- धार्मिक संगठन
- शिक्षक एवं शिक्षार्थी
- समाज की प्रकृति
- समाज की बदलती आवश्यकताएँ

शिक्षा में समाजशास्त्रीय प्रवृत्ति निर्माण में साहित्यिक विषयों की अपेक्षा सामाजिक विषयों पर अधिक बल दिया है। इसके अनुसार प्रकृति विज्ञान एवं सामाजिक विज्ञान का विशेष स्थान है, इसलिए पाठ्यचर्या का विस्तार सामाजिक एवं व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार होना चाहिए। समाज के अनुरुप में ही शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण करना चाहिए तथा पाठ्यचर्या का उद्देश्य भी एक तरह से व्यक्ति को समुचित समायोजन में सहायता प्रदान करता है।

अतः वर्तमान पाठ्यचर्या में सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए जनसंख्या, शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, प्रदूषण की समस्या, सुरक्षा-शिक्षा पद्धति, काम शिक्षा, जाति-उन्मूलन परिवार कल्याण, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय एकता की शिक्षा आदि विषयों का समावेश किया जाता है। शिक्षा में सामाजिक प्रवृत्ति के कारण पाठ्यचर्या को विभिन्न स्तरों पर अनेक तरह के सामाजिक दबावों का सामना करना पड़ता है।

www.studyofeducation.com

वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार के विद्यालय, शिक्षा, परिषदें, विश्वविद्यालय, परीक्षा आधारित कार्यक्रम व संशोधन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। किसी भी बालक की अनौपचारिक शिक्षा का प्रारम्भ परिवार से होता है। वर्तमान में परिवारों के परम्परागत कार्यों एवं दायित्वों का स्थानान्तरण स्कूलों एवं विश्वविद्यालयों में हो गया है तथा इसका महत्त्वपूर्ण कारक आज के युग में आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था भी है।

वर्तमान में वैज्ञानिक एवं औद्योगिक क्रान्ति के कारण शिक्षा के क्षेत्र में धार्मिक संगठनों का प्रभाव भले ही कम हुआ है, परन्तु आज भी पाठ्यचर्या मॉडल के सामाजिक आधारों में धर्म एक प्रासंगिक स्थान बनाए हुए हैं। कोई भी समाज न तो पूर्ण रूप से परम्परावादी होता है और न ही पूर्णरुप से परिवर्तनकारी होता है। इस प्रकार समाज की प्रकृति के अनुरूप पाठ्यचर्या को अपने आप को समायोजित करते रहना पड़ता है। यह एक सतत् प्रक्रिया है। आधुनिक समय में परिवर्तन की गति अधिक तीव्र होने के कारण अनेक नवीन प्रवृत्तियों का सृजन हुआ है, जिसके कारण पाठ्यक्रम नियोजकों को कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। किसी भी आधुनिक समाज में मुख्यतः सामाजिक, राजनैतिक, तकनीकी, आर्थिक एवं पारिस्थितिकीय परिवर्तन से सम्बन्धित विषयों को समावेशित किया जा रहा है।

वैयक्तिक आवश्यकताएँ तथा अभिरुचि मॉडल

पाठ्यचर्या का प्रत्यक्ष सम्बन्ध शिक्षा के उद्देश्यों से होता है और पाठ्यचर्या का विभाग भी उन शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है, जो बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक माना जाता है। बदलते समय में नवीन पाठ्यक्रम की आवश्यकता होती है। सामान्य नियम यह है कि उद्देश्यों के अनुसार ही पाठ्यचर्या का विकास किया जाना चाहिए। अध्यापक को ऐसे पाठ्यचर्या का निर्माण करना चाहिए जो विद्यार्थियों में रचनात्मक विकास को अग्रसर बनाए।

नए पाठ्यचर्या सामाजिक जीवन एवं वैयक्तिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर करना चाहिए। वैयक्तिक आवश्यकता मॉडल के अन्तर्गत चाहिए। ऐसा पाठ्यक्रम छात्रों की वर्तमान आवश्यकता एव मनावज्ञानना पक्षों को ध्यान में रखकर बनाया जाना चाहिए; जैसे-व्यक्तिगत भिन्नता, रुचि, बाल विकास की अवस्था, परिपक्वता, बुद्धि एवं सृजनात्मकता इत्यादि को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का निर्माण करना सुदृढ़ माना जाता है।

मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो किन्हीं दो व्यक्तियों के मध्य अन्तर तो होता है, साथ ही व्यक्ति के अन्दर विभिन्न प्रकार की क्षमताओं के विभिन्न स्तर भी होते हैं। वर्तमान में विभिन्न आयुवर्ग के बालकों की आवश्यकताएँ अलग-अलग होती हैं तथा इन बालकों के लिए अलग-अलग पाठ्यक्रमों का ढंग उपयोग में लाया जाता है, किन्तु एक ही आयुवर्ग के व्यक्तिगत भिन्नता के कारण उनके पाठ्यक्रमों में विविधता भी आवश्यक है। वैयक्तिक आधारित पाठ्यक्रम मॉडल विशेष छात्र समूह के लिए बनाए जाते हैं।

ऐसे पाठ्यक्रम अधिगम के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। साथ ही रचनात्मक दृष्टिकोण से प्रासंगिक भी माने जाते हैं। पाठ्यक्रम का अर्थ केवल सैद्धान्तिक विषयों से जोड़कर नहीं देखा जाता है, बल्कि पाठ्यचर्या में उन सभी अनुभवों को भी विशेष स्थान दिया जाना चाहिए जिनको विद्यार्थी विद्यालय या विश्वविद्यालय के बाहर अन्य स्थानों से प्राप्त करता है; जैसे-खेल का मैदान, प्रयोगशाला, वर्कशॉप इत्यादि। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वैयक्तिक आवश्यकताओं वाला पाठ्यक्रम मॉडल विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त एवं उत्कृष्ट माना जाता है।

www.studyofeducation.com

अभिरुचि पाठ्यक्रम मॉडल

अभिरुचि का तात्पर्य किसी वस्तु या विषय के प्रति लगाव का होता है। अत्र में जन्मजात अभिरुचियों की संख्या बहुत कम होती है, तथा काव्यात्यक, कलात्मक व संगीत सम्बन्धित अभिरुचि को छोड़कर अधिकतर अभिदियाँ बालक स्वय वाटावा से अर्जित करता है।

इसके लिए पाठ्यचर्या निर्माताओं को विविध अधिगम अनुभवों के साथ-साथ उचित अभिप्रेरकों, निर्देशन तथा पुनर्बलन की व्यवस्था की ओर ध्यान देना चाहिए। इसलिए अभिरुचि पाठ्यक्रम मॉडल के अन्तर्गत पाठ्यक्रम निर्माण में रुचि के सिद्धान्त का प्रयोग किया जाना चाहिए। अभिरुचिपूर्ण पाठ्यक्रम के बिना पाट्यक्रम नीरस एव व्यर्थ हाटा है। अभिप्रेरणा से प्राणी में अनुक्रिया की शक्ति समृद्ध होती है। रुचि द्वारा किसी क्रिया को सीखने हेतु उत्साह उत्पन्न किया जा सकता है।

अतः एक कुशल अध्यापक विद्यालय या विश्वविद्यालय में अभिप्रेरणा का सकारात्मक उपभोग करके छात्रों को नवीन तथ्यों के विषय में अभिरुचि उत्पन्न कर सकता है। पाठ्यचर्या निर्माणकर्ताओं को एक ऐसी पाठ्यचर्या का निर्माण करना चाहिए जिससे कि छात्रों में अभिरुचि उत्पन्न हो, वह नीरसता उत्पन्न करने वाला नहीं हो। अभिरुचिगत पाठ्यक्रम से अधिगम क्षमता में वृद्धि होती है, जो बालकों में रचनात्मक विकास उत्पन में करती है। पाठ्यक्रमों का निर्माण क्रियाओं और अनुभवों को ध्यान में रखते हुए किया जाए। पाठ्यचर्या में ऐसे विषयों को समाहित करना चाहिए जिससे रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता का भाव उत्पन्न हो और ये तभी सम्भव हो सकता है, जब पाठ्यक्रम निर्माण में अभिरुचि को भी ध्यान में रखा जाए। अभिरुचि मॉडल के आधार पर निर्मित पाठ्यक्रम प्रोत्साहित करने वाला होता है।

प्रत्येक छात्र में किसी-न-किसी रुप में रचनात्मक कार्य करने की योग्यता अवश्य होती है। छात्रों की रुचियों तथा विशिष्ट योग्यताओं की खोज करके उनके अन्दर रचनात्मक व सृजनात्मक भावनाओं का विकास किया जा सकता है।

परिणाम आधारित एकीकृत पाठ्यक्रम मॉडल

आउटकम या परिणाम आधारित एकीकृत पाठ्यक्रम मॉडल एक शैक्षिक सिद्धान्त है, जो लक्ष्यों एवं परिणामों के समीप एक विशिष्ट शैक्षिक प्रणाली के प्रत्येक भाग को आधार बनाता है। इसके आधार पर यह बताया जाता है कि शैक्षिक अनुभव के तक प्रत्येक छात्र को लक्ष्य प्राप्त करना चाहिए। परिणाम आधारित एकीकृत पाठ्यक्रम मॉडल में शिक्षण या मूल्यांकन की एक भी निर्दिष्ट शैली नहीं होती है, बल्कि कक्षाएँ अवसर और आकलन सभी छात्रों को निर्दिष्ट परिणाम प्राप्त करने में सहायता करती हैं। अन्त

विश्व स्तर पर शिक्षा प्रणालियों में अनेक स्तर पर परिणाम आधारित विधियों को अपनाया गया है। ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका ने 1990 के दशक की शुरुआत में इस मॉडल को स्वीकार किया था, परन्तु शीघ्र ही इसे समाप्त भी कर दिया। संयुक्त राज्य अमेरिका में वर्ष 1994 के बाद से परिणाम आधारित एकीकृत मॉडल के सन्दर्भ में अनेक कार्यक्रम हुए जिसे अनेक वर्षों तक अनुकूलित किया गया। वर्ष 2005 में हाँगकाँग ने अपने विश्वविद्यालयों के लिए एक परिणाम आधारित मॉडल दृष्टिकोण को अपनाया। मलेशिया ने वर्ष 2008 में अपने सभी पब्लिक स्कूल प्रणाली में इसी मॉडल को अपनाया।

परिणाम आधारित एकीकृत पाठ्यक्रम मॉडल को शिक्षाविद् डॉन कौचक और पॉल इगेन द्वारा विकसित किया गया है। यह मॉडल हिल्डा ताबा के महत्त्वपूर्ण कार्यों पर आधारित है। ताबा ने विविध शिक्षण प्रणाली के आधार पर पाठ्यक्रम विकास योजना को तैयार किया है। यह मॉडल छात्रों की सोचने एवं समझने की क्षमता को प्रोत्साहित करता है। परिणाम आधारित मॉडल ताबा मॉडल का प्रतिरुप माना जाता है।

www.studyofeducation.com

अध्यापक की भूमिका

इस मॉडल के आधार पर अध्यापक छात्रों के सोचने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वह नियमित रुप से छात्रों से प्रश्न पूछकर उन्हें प्रोत्साहित करता है। यह मॉडल इस मान्यता पर आधारित है कि अध्यापक पाठ्यचर्या में
कुशल होते हैं एवं उसके क्रियान्वयन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

परिणाम आधारित एकीकृत मॉडल के अन्तर्गत अध्यापकों को अपने छात्रों के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री तैयार करनी चाहिए। यह मॉडल इस तथ्य पर आधारित है कि अधिगमकर्ता को कुछ करने की आवश्यकता है। डीवे (Dewey) ने इसे क्रियाशील अधिगम कहा।

रेसनिक के अनुसार, लोग अधिगम के माध्यम से ही अधिगम करते हैं। व्योटस्की के अनुसार, क्रिया के निर्माण का तात्पर्य मस्तिष्क का निर्माण होता है। साथ ही व्योटस्की का मानना था कि अधिगम में भाषा शामिल होती है। अधिगम एक सामाजिक क्रिया है। एकीकृत मॉडल का उपयोग शिक्षण के दौरान ज्ञान को संगठित करने में होता है। इसे किसी भी ग्रेड स्तर पर प्रयोग किया जाता है। इस मॉडल का प्रयोग शिक्षण इकाइयों के निर्देशन में विशेष रुप से किया जाता है।

www.studyofeducation.com

परिणाम आधारित एकीकृत मॉडल समग्र ज्ञान के विकास में छात्रों को विशेष रुप से सहायता प्रदान करता है। यह मॉडल गहन विचार क्षमता को विकसित करता है। इस मॉडल के अनुसार छात्रों में कार्यक्षमता का विकास दो स्तरों पर होता है। सर्वप्रथम विद्यार्थी तथ्यपूर्ण ज्ञान के आधार पर सीखना प्रारम्भ करता है और निरन्तर अधिगम करते हुए व्यापक स्तर पर ज्ञान को प्राप्त करने लगता है। धीरे-धीरे वह तथ्यों एवं संकल्पनाओं को जानने लगता है। इस मॉडल में चार प्रमुख स्तर है

पैटर्न के लिए अनुसन्धान, तुलना एवं विवरण समान एवं विविध रुपों में वर्णन करना
विभिन्न स्थितियों में परिणाम के लिए संकल्पना
बोर्ड सम्बन्धों को बनाने का सामान्यीकरण

पहले स्तर में अध्यापक और छात्र की भूमिका अधिक महत्त्वपूर्ण होती है। इस स्तर में अध्यापक छात्रों को विवरण करने, तुलनात्मक अध्ययन करने एवं अनुसन्धान करने का निर्देश देते हैं। अध्यापक इस स्तर के माध्यम से ग्राफीक ऑर्गनाइजर सृजित करने में छात्रों को प्रोत्साहित करते हैं। इस स्तर में छात्र अपनी समझ को विकसित करते हैं। ग्राफीक ऑर्गनाइजर की कला को विकसित करता है।

दूसरे स्तर में अध्यापक छात्रों से समान एवं विविध अध्ययनों के बारे में पूछता है एवं छात्र ग्राफीक ऑर्गनाइजर के माध्यम से डेटा का प्रयोग कर अपनी आवश्यक विषय-वस्तु का समान एवं विविध रुपों से अध्ययन करता है। तीसरे स्तर में अध्यापक छात्रों को विभिन्न स्थितियों में परिणामों के लिए संकल्पनाओं को बताता है तथा छात्र इन संकल्पनाओं के द्वारा सम्भव परिणामों के माध्यम

से अपनी समझ को विकसित करता है। चौथे एवं अन्तिम चरण में अध्यापक छात्रों को बोर्ड से सम्बन्धित क्रियाओं को सामान्यीकरण विधि के बारे में बताते हैं। इस स्तर में छात्र सामान्यीकरण क्रियाओं को समझते हैं।

परिणाम आधारित एकीकृत पाठ्यक्रम मॉडल शैक्षणिक दृष्टि से अति महत्त्वपूर्ण माना जाता है, विशेषतः अध्यापकों एवं छात्रों के लिए यह अधिक प्रासंगिक माना जाता है। इस विधि में छात्र अपनी समझ को विकसित करता है एवं इस कार्य में अध्यापक उन्हें पर्याप्त निर्देश देते हैं। अध्यापक के निर्देशानुसार छात्र अपनी अधिगम क्षमता को विकसित करने में सक्षम हो जाते हैं।

हस्तक्षेप मॉडल (Intervention Model)

हस्तक्षेप पाठ्यक्रम मॉडल सार्वभौमिक अनुसन्धान प्रक्रिया पर साधक मॉडल माना जाता है जिसे सामूहिक रुप से स्ट्रैटेजिक इण्टरवेशन मारा कहा जाता है। इस मॉडल के अन्तर्गत पाठ्यक्रम को इस प्रकार अधिक किया जाता है कि एक दिव्यांग छात्र भी सामान्य कक्षा में एक स्वयमा की भाँति सफल हो जाए। ऐसी परिस्थितियों में अध्यापकों को काफी दया शिक्षण कार्य करने पड़ते हैं।

अध्यापकों की परेशानियों को ध्यान में रखते हुए कंसास (अमेरिकी जहर अनुसन्धान अधिगम केन्द्र ने संरचनात्मक विधि एवं प्रक्रिया द्वारा स्टी इण्टरवेंशन मॉडल को तैयार किया, ताकि अध्यापकों के समक्ष उत्पन्न कर वाली चुनौतियों को कम किया जा सके।

डेसलर एवं शूमेकर के अनुसार, इसे तीन श्रेणियों में विभाजित किया । सकता है जिसे उन्होंने अधिगम, रणनीति एवं हस्तक्षेप में विभाजित कि यह मॉडल छात्रों की जानकारी को समझने और समस्याओं को हल कर सहायता के लिए विशिष्ट अधिगम की रणनीति को विकसित करता अधिगम की रणनीति एक व्यक्ति के सीखने एवं जानकारी का उपयोग कर का दृष्टिकोण है।

हस्तक्षेप मॉडल पाठ्यक्रम प्रभाव और सिद्धान्त, शिक्षकों के को क्रियान्वयन, अन्तर स्पष्ट करने और पाठ्यक्रम तथा सत्रों के मूल्यांकन विशिष्ट भूमिका निभाता है। स्टैटेजिक इण्टरवेंशन मॉडल सीखने की रण के हस्तक्षेप में, जो कार्य पूरा होने के लिए आनुक्रमिक संज्ञात्मक रण माना जाता है।

यह मॉडल सामग्री वृद्धि दिनचर्या, जो प्रभावी सूचना वितरण और समझ विशेष सुविधा प्रदान करता है। सशक्त हस्तक्षेप मॉडल छात्रों को इष्टतम स्तर पर प्रदर्शन करने हेतु प्रेरित करते हैं। इस मॉडल अभिकल्प को पर्याय अनुसन्धान प्रक्रिया के बाद तैयार किया जाता है, ताकि पाठ्यक्रम को इस प्रकार तैयार किया जाए कि अध्यापक के समक्ष चुनौतियाँ आसान हो जाए एवं छात्र भी इससे निरन्तर लाभान्वित हो सके।

कुशल रणनीति के अन्तर्गत अध्यापक कक्षा में शब्दों की पहचान करवाता है, | रणनीति की तैयारी में सहयोग प्रदान करता है, स्वयं प्रश्न करने रणनीति को विकसित कर छात्र अपनी समझ को विकसित करता है। इसके अतिरिक्त दृश्य समझ रणनीति के

www.studyofeducation.com

द्वारा छात्र कक्षा में नियमित रुप से अधिगम करते हैं। यह मॉडल दिव्यांग छात्रों की ओर से अध्यापक के साथ कार्य करने हेतु सामान्य एवं विशिष्ट परिस्थितियों में सही मार्ग का निर्देशन करता है। विशिष्ट एवं सामान्य शिक्षण में यह मॉडल प्रक्रिया एवं विषय-वस्तु दोनों पर एक समान फोकस करता है।

हस्तक्षेप मॉडल आन्तरिक या बाहरी लोगों द्वारा किए गए नियोजित परिवर्तन के एक सेट का उल्लेख करता है जिसका मुख्य उद्देश्य किसी संगठन को इसकी प्रभावशीलता बढ़ाने में सहायता करना है। एक हस्तक्षेप युक्त प्रोग्राम तत्त्वों या रणनीतियों का एक संयोजन है, जो व्यवहार में परिवर्तन या व्यक्तियों का एक सम्पूर्ण जनसंख्या के मध्य शैक्षणिक स्थिति में गुणात्मक सुधार लाने के उद्देश्य से या बेहतर बनाने हेतु डिजाइन किया गया है।। हस्तक्षेप में अनेक कुशल रणनीतियाँ शामिल होती हैं, वे सामान्यतौर पर वांछित और स्थायी परिवर्तन के उत्पादन में सबसे प्रभावी मानी जाती हैं।

समकालीन मोरल सामान्यतः अन्त सांस्कृतिक एवं अन्तर्धार्मिक भावनाओं से अभिप्रेरित होती है। समकालीन पाठ्यक्रम मॉडल के अन्तर्गत वैसे पाठ्यक्रम बनाए जाते है. जो मुख्य रुप से व्यापक अनुसन्धान एवं मूल्यांकन के परिणामस्वरुप बनाए जाते हैं। अधिगम एवं शिक्षण पद्धति में इस मॉडल को विशेष रुप से प्रयोग किया जाता है। ऐसे मॉडल मुख्य रुप से तकनीकी और और-तकनीकी भागो में विभाजित किए जाते हैं।

www.studyeducation.com

शिक्षण प्रणाली में नियमित परिवर्तन होना स्वाभाविक है, परिवर्तन के अनुकूल पाठ्यक्रमों में किए जाने वाले परिवर्तन समकालीन मॉडलों पर आधारित होते है। समकालीन मॉडल को प्रगतिशील पाठ्यक्रम मॉडल भी कहा जाता है। इस मॉडल में आधुनिक क्रियाकलापों पर विशेष बल दिया जाता है। अधिगम क्षमता को बढ़ाने के उद्देश्य से नियमित अनुसन्धान एवं अधिगम प्रवृत्ति को समृद्ध करने के उद्देश्य से मूल्यांकन पर विशेष रुप से बल दिया जाता है।

कांटेक्स्ट, इनपुट, प्रोसेस एण्ड प्रोडक्ट मॉडल (CIPP Model)

CIPP मॉडल को समकालीन मॉडल का प्रतिरुप माना जाता है। आधुनिक समय में नवीन पाठ्यक्रमों के निर्माण में इस मॉडल का विशेष योगदान माना जाता है। इस मॉडल को स्टफलबीम मॉडल भी कहा जाता है। डैनियल एल. स्टफलबीम जिन्होने मूल्यांकन पर अनेक फाई डेल्टा कापा राष्ट्रीय अध्ययन समिति की अध्यक्षता की, ने मूल्यांकन का एक व्यापक रुप से उद्धृत मॉडल CIPP मॉडल प्रस्तुत किया। स्टफलबीम के मॉडल का एक प्रमुख पहलू निर्णय लेने या कार्यक्रम की शुरुआत के बारे में किसी के मन बनाने के कार्य पर केन्द्रित है। पाठ्यक्रम मूल्यांकनकर्ताओं को सही ढंग से किया और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सहायता हेतु मूल्यांकन करने के लिए, पहले क्या मूल्यांकन किया जाना है उन जानकारियों को निर्धारित कर जो एकत्र हो गई हैं वर्णन करना। उदाहरणस्वरूप प्राथमिक ग्रेड में बच्चों की वैज्ञानिक सोच कौशल को बढ़ाने कार्यक्रम को कैसे प्रभावी बनाया जाए। नए विज्ञान

दूसरा चयनित तकनीक और तरीकों का उपयोग कर जानकारी प्राप्त करने या एकत्र करने के लिए है। उदाहरण के लिए, अध्यापकों के साक्षात्कार, छात्रों के टैस्ट प्राप्तांक एकत्र करना। तीसरा इच्छुक समुदाय के लिए सूचना (तालिकाओं, ग्राफ के रूप में) प्रदान करने या उपलब्ध कराने के लिए है। नए पाठ्यक्रम को बनाए रखने, संशोधित करने या कार्यक्रम को समाप्त करने के लिए मूल्यांकन के निम्नलिखित चार प्रकार तय करने की सूचना प्राप्त की है, ये हैं-सन्दर्भ (Context), निवेश (Input), प्रक्रिया, (Process) और उत्पाद (Product)। मूल्यांकन का स्टफलबीम मॉडल एक पाठ्यक्रम कार्यक्रम के समग्र प्रभावों को निर्धारित करने हेतु रचनात्मक एवं योगात्मक मूल्यांकन पर निर्भर करता है। मूल्यांकन क्रियान्वयन कार्यक्रम सभी स्तरों पर आवश्यक है।

सन्दर्भ मूल्यांकन (Context Evaluation) क्या करने की आवश्यकता और किस सन्दर्भ में? इस उददेश्य के लिए एक निगमगता मूल कारण प्रदान करने के प्रयोजन के साथ मायाकतका पदय प्रन्या प्रकर है। मूल्यांकनकर्ता वातावाण को परिभाषित करता है, जिसमें पाठयना को एक कक्षा, स्फूरल या प्रशिक्षण विभाग हो सकता है, का लाग करता है। इसके अतिरिक्त समीश्रा के अन्तर्गत संगठन में कमियाँ और समस्या है जिनकी पहचान की गई है, जैसे माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों का एक बड़ा अनुपात वांछित स्तर पर पढ़ने में असमर्थ है, कम्प्यूटर के लिए छात्रों के अनुपात बढ़ा है, विज्ञान शिक्षकों का एक बड़ा अनुपात अंग्रेजी में पढ़ाने हेतु कुशल नहीं है। लक्ष्य एवं उद्देश्य सन्दर्भ के मूल्यांकन के आधार पर निर्दिष्ट होते हैं अर्थात् मूल्यांकनकर्ता पृष्टभूमि निर्धारित करता है जिसे नवाचारों को लागू किया जा रहा है।

www.studyofeducation.com

निवेश मूल्यांकन (Input Evaluation) यह कैसे किया जाना चाहिए? मूल्यांकन उद्देश्य जिसमें से पाठ्यक्रमों के उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु जानकारी प्रदान करना है। दुर्भाग्य से इनपुट मूल्यांकन के तरीके शिक्षा के क्षेत्र में कमी कर रहे हैं। प्रचलित प्रथाओं के अन्तर्गत पेशेवर साहित्य अपील, विचार-विमर्श समिति, सलाहकार और मार्गदर्शक प्रायोगिक परियोजनाओं का सेवायोजन शामिल है।

प्रक्रिया मूल्यांकन (Process Evaluation) क्या यह किया जा रहा है? प्रक्रिया मूल्यांकन का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि परिस्थिति के अनुकूल पाठ्यक्रम में जो परिवर्तन किया जाना है व यह किया जा रहा है या नहीं। प्रक्रिया मूल्यांकन अन्तर्गत पाठ्यक्रम को अधिक सृजनात्मक एवं रचनात्मक बनाया जाता है। मूल्यांकन के अन्तर्गत इसके मापदण्ड को निर्धारित किया जाता है। प्रक्रिया मूल्यांकन के अन्तर्गत पाठ्यक्रम को सरल एवं सामान्य बनाया जाता है, ताकि पाठ्यक्रम के प्रति विद्यार्थियों में अभिरुचि की भावना उत्पन्न हो। अभिरुचिपूर्ण पाठ्यक्रम सामाजिक मूल्यों एवं लोकतान्त्रिक पद्धति पर आधारित होती है।

उत्पाद मूल्यांकन (Product Evaluation) क्या उत्पादन किया जा रहा है? पाठ्यक्रम को पूर्ण करने हेतु, व्यवस्थित रुप से प्राप्त करने हेतु आँकड़े को निर्धारित करने के लिए एकत्र किया जाता है। उदाहरण के लिए, अच्छा किस सीमा तक के छात्रों में विज्ञान की दिशा की ओर अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया है। उत्पाद मूल्यांकन में उद्देश्यों की उपलब्धि को मापने के डेटा की व्याख्या और नए पाठ्यक्रम को संशोधित करने, जारी रखने या समाप्त करने या जानकारी के साथ उपलब्ध कराने हेतु तय करना शामिल है। उदाहरणस्वरुप उत्पाद मूल्यांकन छात्रों में विज्ञान के क्षेत्र में अधिक रुचि हो इसके लिए नए विज्ञान पाठ्यक्रम के परिचय के बाद और इस विषय के प्रति अधिक सकारात्मक एवं उत्कृष्ट रहे, बता सकता है। समकालीन पाठ्यक्रम

मॉडलों में स्टेक मॉडल भी प्रमुख माना जाता है। इसके द्वारा प्रस्तावित मॉडल में पाठ्यक्रम मूल्यांकन तीन चरणों-पूर्ववर्ती चरण, लेन-देन चरण एवं परिणाम चरण में विभाजित किया जाता है. टॉयलर का उद्देश्य केन्द्रित मॉडल भी समकालीन मॉडल माना जाता है। इसके अनुसार पाठ्यक्रम अनेक मूल्यांकन परियोजनाओं को प्रभावित कर हेतु सतत है। टॉयलर मॉडल समझने में आसान एवं अपेक्षाकृत आसान है। यह तर्कसंगत और व्यवस्थित माना जाता है।

पाठ्यचर्या और अनुदेश

अनुदेशात्मक प्रणाली (Instructional System)

साधारण भाषा में अनुदेशन शब्द का अर्थ है-सूचना देना अथवा आज्ञा देना। इस शब्द का व्यावहारिक रूप हमें कक्षा शिक्षण में मिलता है। अनुदेशात्मक प्रणाली से तात्पर्य शिक्षण की उस प्रक्रिया से है, जिसके अन्तर्गत शिक्षक, शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण प्रविधियों और कार्यकलापों को व्यवस्थित रूप प्रदान करता है। शिक्षण कार्य में जो कुछ भी पढ़ना अथवा सीखना होता है, वह सभी अनुदेशात्मक प्रणाली के अन्तर्गत ही आता है। दूसरे शब्दों में, अनुदेशन प्रणाली के अन्तर्गत अध्यापक तथा छात्रों के मध्य पाठ्यक्रमीय ज्ञान के आदान-प्रदान की समस्त क्रियाओं को शामिल किया जाता है।

www.studyofeducation.com

- **एस. एम. कोरे** के अनुसार, "अनुदेशात्मक प्रणाली, एक पूर्व-नियोजित शैक्षिक प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षार्थी के वातावरण को इस प्रकार नियन्त्रित किया जाता है कि विशिष्ट परिस्थितियों में वह इच्छित व्यवहार प्रदर्शित कर सके।"
- **गेट्स** के अनुसार, "अनुदेशात्मक प्रणाली वह प्रक्रिया है, जो शिक्षार्थी को कुछ उद्देश्यों की ओर प्रभावित करती है।"

अनुदेशन की प्रक्रिया में किसी-न-किसी प्रकार का व्यवहार चलता रहता है। इस व्यवहार का उद्देश्य तर्क प्रस्तुत करना, प्रमाणों की संख्या बताना, प्रमाणों की उपयुक्तता सिद्ध करना, व्याख्या करना और निष्कर्ष निकालना है। इस प्रणाली के अन्तर्गत समय-सीमा, उपलब्ध साधनों और पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है।

अनुदेशात्मक प्रणाली शैक्षिक उद्देश्यों को प्राय: व्यावहारिक परिवर्तनों के रूप ग्रहण करती है। इन उददेश्यों की प्राप्ति का अर्थ है कि अनुदेशन के पश्चात् शिक्षार्थी इन व्यवहारी को प्रदर्शित कर सकेगा।

अनुदेशन प्रणाली के अन्तर्गत दो प्रकार के व्यवहारों पर बल दिया जाता है

न्यूनतम आवश्यक व्यवहार यह व्यवहार विषय-वस्तु को सीखने के लिए, आवश्यक पूर्व जान से सम्बन्धित है।
अन्तिम व्यवहार इसके अन्तर्गत शिक्षार्थी विषय-वस्तु को सीखने के प्रभावस्वरुप व्यवहार प्रदर्शित करता है।

अनुदेशात्मक प्रणाली के अन्तर्गत, अनुदेशन से पूर्व जिन छात्रों को अनुदेशित किया जाता है, उनकी मानसिक योग्यता तथा सामाजिक आधार का ज्ञान प्राप्त करना भी आवश्यक है।

अनुदेशात्मक प्रणाली के सोपान

अनुदेशन प्रणाली एक क्रियात्मक व्यवहार प्रणाली है। इसके अन्तर्गत व्याख्याना, प्रदर्शना, सामान्यतः शिक्षण कार्यक्रमी आदि को शामिल किया जाता है। इस प्रणाली के अन्तर्गत सामान्यत: निम्नलिखित सोपानों को शामिल किया जाता है,

- **उद्देश्यों का निर्धारण** अनुदेशन के उद्देश्य सुस्पष्ट और सुनिश्चित होने चाहिए तथा प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रशंसनीय होने चाहिए।
- **तैयारी** अनुदेशन की प्रभावशीलता इस तथ्य पर निर्भर करती है कि अनुदेशन की तैयारी कैसी की गई है, क्योंकि पूर्व सुनियोजित तैयारी ही अधिगमकर्ता को सीखने में सहायता प्रदान करती है।
- **प्रस्तुतीकरण** अनुदेशन की भूमिका एक निर्माता, प्रबन्धक अभिनेता, प्रोत्साहक आदि अनेक रूप में होती है। अत: अनुदेशक को प्रस्तुतीकरण करते समय सावधानी बरतनी पड़ती है।
- **सम्प्रेषण व्यवस्था** सम्प्रेषण व्यवस्था इस प्रकार होनी चाहिए कि अनुदेशक के द्वारा अभिव्यक्त किए गए विचार छात्रों तक भली-भाँति पहुँच जाएँ।
- **आत्मीकरण** सम्प्रेषित विचारों को छात्रों द्वारा आत्मसात् किया जाना चाहिए, ताकि अनुदेशक छात्रों में विश्वास जाग्रत कर उनके लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकें।
- **मूल्यांकन** मूल्यांकन के द्वारा छात्रों की कमजोरियों को ज्ञात करके उसका निवारण करना चाहिए।
- **पृष्ठपोषण** अनुदेशन प्रक्रिया के दौरान जो भी पाठ शिक्षार्थियों को पढ़ाया जाए, उसमें उनके द्वारा की गई त्रुटियों व उपलब्धियों का ज्ञान अनुदेशक द्वारा करवाया जाना चाहिए।

अनुदेशात्मक मीडिया (Instructional Media)

शिक्षा को प्रभावी रुप से क्रियान्वित करने के लिए पाठ्यचर्या का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। पाठ्यचर्या में सम्प्रेषण के लिए अनुदेशन प्रणाली को चरणबद्ध रुप में अपनाया जाता है। इस प्रणाली के अन्तर्गत विभिन्न मीडिया उपागमों को अपनाया जाता है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ मानव के बौद्धिक स्तर में भी विकास हुआ है तथा शिक्षण व्यवस्था में भी परिवर्तन हुए हैं। शिक्षण संस्थानों का स्वरुप भी बदलती जरुरतों के अनुसार बदलता गया है। विज्ञान ने दूरियों को घटा दिया है, जिससे सार्वभौम शिक्षा

www.studyofeducation.com

की अवधारणा और अधिक मजबूत हो गई है। शिक्षण संसाधनों का व्यवस्था को सुचारु रुप से चलाने के लिए विभिन्न किया जा रहा है।

पाठ्यचर्या मीडिया माध्यमों के द्वारा शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्नलिखित तथ्यों का होना आवश्यक है

- अनुदेशात्मक मीडिया एक व्यक्तिगत तकनीकी माध्यम है। अतः इसका स्वरुप स्पष्ट होना चाहिए।
- मीडिया के द्वारा पाट्य सामग्री तार्किक क्रम में एक के बाद एक क्रमिक रुप से प्रस्तुत की जानी चाहिए।
- मीडिया कार्यक्रमों का उद्देश्य स्पष्टता के साथ सुपरिभाषित होने चाहिए। ये उद्देश्य व्यावहारिक शब्दावली में लिखे होने चाहिए।
- मीडिया सामग्री की रचना शिक्षक पूरे ध्यान, शुद्धता और सावधानी से करता है।
- मीडिया प्रणाली अध्यापकों के साथ छात्रों की सहभागिता सुनिश्चित करती है।
- अनुदेशात्मक मीडिया प्रक्रिया छात्रों की अनुक्रिया के माध्यम से मूल्यांकन के आधार पर पाठ्य सामग्री में सुधार लाने का प्रयास करती है।
- इसके अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक अधिगमों और शिक्षण संकल्पनाओं का प्रयोग किया जाता है।
- यह पूर्णतः छात्र अभिकेन्द्रिक प्रणाली है।
- मीडिया प्रणाली व्यक्तिगत विभिन्नताओं के साथ शिक्षण उद्देश्यों के सामंजस्य पर बल देती है।

पाठ्यचर्या संव्यवहार में सहायक अनुदेशात्मक तकनीकें और सामग्री

अनुदेशन एक ऐसी प्रविधि है, जिसमें पाठ्य सामग्री को क्रमबद्ध रुप में प्रस्तुत किया जाता है। अनुदेशन द्वारा शिक्षण उद्देश्यों को व्यावहारिक स्वरुप प्रदान किया जाता है तथा उद्देश्यों के मापन हेतु मानदण्डों का निर्धारण किया जाता है। इसके अन्तर्गत पाठ्य सामग्री का प्रत्येक बिन्दु अपने आगे वाले बिन्दु से तार्किक रुप से जुड़ा होता है।

पाठ्य सामग्री को यह व्यवस्थिति और क्रमिक स्वरुप प्रदान करने के लिए कुछ तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। ये तकनीकें शिक्षक को शिक्षण से मुक्त कर सृजनात्मक कार्यों तथा छात्रों के साथ अन्तक्रिया करने के लिए अधिक समय प्रदान करने में सक्षम होती हैं। इन शिक्षण तकनीकों के माध्यम से प्राप्त शिक्षा परिणामों को परम्परागत शिक्षा की तुलना में प्रभावशाली समझा जाता है। ये सभी अनुदेशन तकनीकें छात्रों में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करती हैं।

www.studyofeducation.com

प्रमुख अनुदेशात्मक तकनीकें

पाठ्यचर्या विकास सम्बन्धी शिक्षण कार्य में विभिन्न तकनीकों का प्रयोग इस प्रकार किया जाता है कि सम्प्रेषणकर्ता द्वारा पाठ्य सामग्री का प्रभावी रुप में सम्प्रेषण किया जा सके। अनुदेशात्मक तकनीकें वर्तमान की आवश्यकता हैं। इनके द्वारा पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की प्राप्ति अधिक सकारात्मक और प्रभावी रुप में की जा सकती है। प्रमुख अनुदेशात्मक तकनीकें निम्न प्रकार हैं

श्रव्य-दृश्य तकनीक

वर्तमान में अनेक प्रकार के श्रव्य-दृश्य साधनों; जैसे-टीवी, रेडियो, ग्रामोफोन तथा कम्प्यूटर आदि का अस्तित्व देखा जाता है। इनके आधार पर छात्रों को जो भी कुछ पढ़ाया जाता है, वह उसके बारे में पूर्ण ज्ञान प्राप्त करते हैं।

दृश्य साधनो का उल्लेख निम्नलिखित रुप से है

टी.वी. (दूरदर्शन)

इसका उपयोग वर्तमान में सभी विद्यालयो में किया जा रहा है। इसका प्रयोग करके छात्रों को विषय-वस्तु के बारे में प्रत्यक्ष रुप से अध्ययन कराया जाता है। वर्तमान में दूरदर्शन के द्वारा छात्रों के साथ-साथ अन्य लोगों को भी महत्त्वपूर्ण तथ्यों के बारे में जानकारी प्रदान की जा रही है। इसका उपयोग करने से प्रौढ़ शिक्षा में भी काफी सहायता मिलती है। शिक्षक के द्वारा विद्यालय परिधि में भी टीवी का उपयोग किया जाता है। वह छात्रों को विषय से सम्बन्धित फिल्म दिखाते हैं। टीवी का उपयोग प्रकृति, विज्ञान तथा इतिहास जैसे विषयों के लिए विशेष रुप से लाभदायक माना जाता है। ऐसे विषयों के सम्बन्ध में इसका उपयोग विद्यालय परिधि में विशेष रूप से किया जाता है। इसकी बढ़ती हुई लोकप्रियता के परिणामस्वरुप यह कहना अनुचित नहीं होगा कि जल्दी ही ग्रामीण क्षेत्रों में इसकी मात्रा अधिक होगी। वर्तमान में टी.वी. के माध्यम से उन्हें समय-समय पर मौसम तथा फसलों की अच्छी पैदावार हेतु महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की जाती है, जिसका उपयोग करके वह उन्नति कर सकते हैं। विद्यालयों में छात्रों का ध्यान किसी एक ही विषय पर एकत्रित करने हेतु श्रव्य-दृश्य साधनों का उपयोग किया जाता है। यह देखा जाता है कि छात्रों का ध्यान किसी एक ही विषय में विकसित करना बहुत कठिन होता है, परन्तु श्रव्य-दृश्य साधनों के द्वारा ऐसा सरलता से किया जा सकता है। यह छात्रों को प्रभावी रूप से किसी भी विषय पर अपना ध्यान एकत्रित करने को प्रेरित कर सकते हैं।

टी.वी. का उपयोग

टी.वी. के माध्यम से देश में हो रही विभिन्न घटनाओं का ज्ञान केवल कुछ समय में ही घर बैठे प्राप्त किया जा सकता है। यह आधुनिक तकनीक का एक महत्त्वपूर्ण साधन माना जाता है, जिसके परिणामस्वरुप अनेक विषयों के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित तथ्यों को प्रस्तुत किया जा सकता है

www.studyvotefeducation.com

- दूरदर्शन कार्यक्रम का प्रस्तुतीकरण करके छात्र को विषय के अनुसार शिक्षण प्रदान किया जाता है, जिसके परिणामस्वरुप वह विषय-वस्तु से प्रभावी रुप से परिचित हो जाते हैं। छात्रों को उनकी विषय-वस्तु के अनुकूल ही शिक्षण प्रदान किया जाता है।
- इसके अन्तर्गत इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि शिक्षण हेतु जिस साधन का उपयोग किया जा रहा है, उसकी आवाज ऐसी होनी चाहिए कि वह दूर बैठे छात्रों तक भी सरलता से पहुँच सके। छात्रों को विभिन्न विषय-वस्तुओं का ज्ञान प्रदान करते समय विद्युत साधन की आवाज को छात्रों की संख्या तथा कमरे के आकार के अनुसार किया जाना चाहिए।
.
- दूरदर्शन शिक्षण के माध्यम से छात्रों के समक्ष ऐसे शिक्षण को रखना चाहिए कि वह उसमें भली-भाँति अपनी सोच विकसित कर सकें। यह देखा जाता है कि जब तक छात्रों के द्वारा किसी कार्य में अपनी रुचि विकसित नहीं की जाती है, तब तक वह उक्त विषय का प्रभावी ज्ञान नहीं प्राप्त कर पातें।
- जिस स्थान पर दूरदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया जाना है उस स्थान पर विशेष प्रबन्ध करने चाहिए। वहाँ पर बिजली, पानी आदि की सुविधाएँ पूर्णरूप से विकसित होनी चाहिए। इसके साथ ही वहाँ पर मौसमानुकूल सभी सुविधाओं का समावेश कराया जाना चाहिए।
- शिक्षक की उपस्थिति कार्यक्रम का प्रसारण होते समय अति आवश्यक मानी जाती है। वह छात्रों में विषय के प्रति उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं का निवारण कार्य करता है। वह छात्रों को समय-समय पर विषय के द्वारा प्रदान किए जाने वाले ज्ञान तथा उसके उद्देश्यों से भी परिचित कराता रहता है। छात्रों के बैठने की सुविधा भी उपयुक्त होनी चाहिए। जिस स्थान पर शिक्षण कराया जा रहा है। वह स्थान बहुत व्यापक होना चाहिए।

www.studyofeducation.com

टी.वी. द्वारा शिक्षण के लाभ

टी.वी. द्वारा शिक्षण के लाभ निम्न प्रकार है

- इस शिक्षण में सबसे प्रथम लाभ यह माना जाता है कि इसके आधार पर एक बड़े छात्र समूह को एकसाथ विषय का शिक्षण कराया जा सकता है, जिससे छात्रों में सामाजिक भावना का विकास भली-भाँति किया जा सकता है।
- इस शिक्षण के माध्यम छात्रों के समक्ष केवल विषय से सम्बन्धित तथ्यों को ही नहीं रखा जाता है, बल्कि छात्रों के समक्ष उन सभी तथा को रखा जाता है, जिसके माध्यम से वह नवीन ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।
- टी.वी. के माध्यम से शिक्षक के द्वारा छात्रों के समक्ष ऐसे चित्रों, तथ्यों को प्रस्तुत किया जाता है, जिसके माध्यम से वह वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। यह उन्हें विषय-वस्तु का वास्तविक ज्ञान प्रदान करने की एक सर्वोत्तम तरीका माना जाता है।
- टी.वी. के माध्यम से छात्रों को प्रदान की जाने वाली जानकारी के आधार पर छात्र तथा शिक्षक में निहित आपसी सम्बन्धों को प्रगाढ़ किया जा सकता है तथा उन्हें विकास के मार्गों की ओर अग्रसित किया जा सकता है।
- प्रत्यक्ष इस साधन का उपयोग करके छात्रों को किसी विषय के बारे में जानकारी प्रदान की जा सकती है, जिसके परिणामस्वरुप वह स्थायी शिक्षण प्राप्त करते हैं।

चलचित्र

चलचित्र को महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया जाता है। इनके माध्यम से छात्रों के श्रव्य इन्द्रियों को एकाग्र किया जाता है, जिसके परिणामस्वरुप वह विषय के प्रति विशेष ज्ञान विकसित कर पाते हैं। चलचित्रों के द्वारा छात्रों को ऐसे विषयों के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है, जिसे बताया जाना कठिन होता है। यह देखा जाता है कि छात्र सुनने में उतनी रुचि नहीं रखते हैं जितनी रुचि उन्हें देखने तथा सुनने दोनों में होती है। अत: इन दोनों में ध्यान एकाग्र करने हेतु यह आवश्यक माना जाता है कि उन्हें चलचित्रों के माध्यम से शिक्षण प्रदान कराया जाए, ताकि वह भली-भाँति शिक्षण प्राप्त कर सकें। यह उनके ज्ञान स्तर में वृद्धि करने का एक आवश्यक माध्यम माना जाता है।

चलचित्र का उपयोग करते समय निम्न तत्त्वों का ध्यान रखना चाहिए

- यदि आवश्यक हो तथा किसी छात्र के द्वारा आग्रह किया जाए तो निश्चय ही चलचित्रों का प्रदर्शन दोबारा किया जाना चाहिए। अनेक बार ऐसा होता है कि छात्र अपना ध्यान सरलता से चलचित्रों में नहीं लगा पाता है। उन्हें विषय में सम्बन्धित चलचित्र का प्रदर्शन दोबारा कराया जाना चाहिए।
- छात्रों के ज्ञान का समय-समय पर मूल्यांकन किया जाना चाहिए। मूल्यांकन करके ही शिक्षक यह पता लगा पाता है कि उसके छात्रों द्वारा कितना अधिगम किया गया है। यह देखा जाता है कि अनेक बार छात्रों के द्वारा विषय के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान विकसित नहीं किया जाता है। शिक्षक को ज्ञात होना चाहिए कि चलचित्रों का छात्रों पर कितना प्रभाव पड़ रहा है, उसका उपयोग भली-भाँति किया जा रहा है अथवा नहीं।
- चलचित्रों का प्रदर्शन करने के पश्चात् छात्रों में व्याप्त शिक्षण से सम्बन्धित विभिन्न शंकाओं को भली-भाँति दूर किया जाना चाहिए। इसके परिणामस्वरुप वह विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर पाते हैं।
- छात्रों को चाहिए कि वह चलचित्रों को देखते समय उनके सम्बन्ध में उत्पन्न होने वाली विभिन्न शंकाओं को एक कागज पर लिखते रहें तथा चलचित्रों की समाप्ति के पश्चात् वह भली-भाँति उन्हें शिक्षक के समक्ष रखें।
- चलचित्र को शिक्षक के द्वारा छात्रों के समय उपस्थित करने से पूर्व ही देखा जाना चाहिए, जिससे वह भली-भाँति उसके सम्बन्ध में छात्रों को बता सकें।
- छात्रों को जिस स्थान पर चलचित्रों का अध्ययन कराया जाना हो, वह स्थान अनुकूल होना चाहिए। वहाँ पर प्रकाश तथा पानी आदि की सुविधा होनी चाहिए।
- चलचित्र इस प्रकार के होने चाहिए कि छात्रों की उत्सुकता तथा रुचि उनमें विकसित हो सके।
- चलचित्र अति सुगम होने चाहिए, जिससे छात्रों के इनसे परिचित होने में किसी समस्या का सामना न करना पड़े, परन्तु इस ओर यह भी ध्यान रखना चाहिए कि विषय-वस्तु की उपयोगिता पर किसी प्रकार की हानि न हो।
- चलचित्रों के माध्यम से छात्रों को उनके विषय के बारे में जानकारी प्रदान करनी चाहिए या ऐसे चलचित्र प्रस्तुत करने चाहिए जो उनके विषय से सम्बन्धित हों। .

www.studiestoday.com

- चलचित्रों के माध्यम से छात्रों को पाठ्यक्रम के साथ-साथ अन्य विषयों के बारे में भी जानकारी प्रदान की जानी चाहिए।

श्रव्य तकनीक

श्रव्य तकनीक के अन्तर्गत उन सभी ध्वनि यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है, जिनके द्वारा पाठ्यचर्या संव्यवहार को व्यावहारिक रुप से प्राप्त किया जाता है। इन तकनीकों के द्वारा सम्प्रेषक पाठ्यचर्या विकास सामग्रियों को छात्रों तक प्रभावी रूप में पहुँचाने का कार्य करता है।

इस तकनीक के अन्तर्गत निम्नलिखित साधनों को शामिल किया जाता है

रेडियो

रेडियो का उपयोग बहुत वर्षों पूर्व से ही किया जा रहा है। यह एक श्रव्य साधन माना जाता है। इसके आधार पर छात्रों को महत्त्वपूर्ण तथ्यों के बारे में समय-समय पर जानकारी प्रदान की जा सकती है।
रेडियो का उपयोग सामान्यत: सभी व्यक्तियों के द्वारा किया जाता है। इसका कारण इसकी उपयोगिता तथा कम खर्च को माना जाता है। इसके माध्यम से राष्ट्र के सभी नागरिकों को एकसाथ सामूहिक रुप से किसी विषय के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की जा सकती है।

www.studyofeducation.com

भारत में रेडियो

वर्ष 1927 तक भारत में अनेक रेडियो क्लबों की स्थापना हो चुकी थी। वर्ष 1936 में भारत में सरकारी इम्पीरियल रेडियो ऑफ इण्डिया की शुरुआत हुई, जो आजादी के बाद ऑल इण्डिया रेडियो या आकाशवाणी बन गया।

स्वतन्त्रता के बाद इसके बाद वर्ष 1942 में आजाद हिन्द रेडियो की स्थापना हुई, जो पहले जर्मनी से फिर सिंगापुर और रंगून से भारतीयों के लिए समाचार प्रसारित करता रहा।

- आजादी के बाद अब तक भारत में रेडियो का इतिहास सरकारी ही रहा है। आजादी के बाद भारत में रेडियो सरकारी नियन्त्रण में रहा।
- सरकारी संरक्षण में रेडियो का प्रसार अधिक हुआ। वर्ष 1947 में आकाशवाणी के पास 6 रेडियो स्टेशन थे और उसकी पहुँच 11% लोगों तक ही थी।
- वर्तमान में आकाशवाणी के पास 223 रेडियो स्टेशन हैं और उसकी पहुँच 99.1% भारतीयों तक है।

- टेलीविजन के आगमन के बाद शहरों में रेडियो के श्रोता कम होते गए, पर एफएम रेडियो के आगमन के बाद अब शहरों में भी रेडियो के श्रोता बढ़ने लगे हैं, पर गैर-सरकारी रेडियो में अब भी समाचार या समसामयिक विषयों की चर्चा पर प्रतिबन्ध है।
- इस बीच आम जनता को रेडियो स्टेशन चलाने की अनुमति के लिए सरकार पर दबाव बढ़ता रहा है।
- वर्ष 1995 में भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि रेडियो तरंगों पर सरकार का एकाधिकार नहीं है। वर्ष 2002 में एनडीए सरकार ने शिक्षण संस्थाओं को कैम्पस रेडियो स्टेशन खोलने की अनुमति दी। 16 नवम्बर, 2006 को यूपीए सरकार ने स्वयंसेवी संस्थाओं को रेडियो स्टेशन खोलने की स्वीकृति दी है।
- 16 जनवरी, 2018 को भारत का पहला स्पोटर्स रेडियो चैनल आरम्भ किया गया। स्पोर्ट्स फ्लैशेज नाम से आरम्भ किए गए इस चैनल पर हर समय खेल जगत से जुड़े समाचार एवं कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे।

अमुद्रित तकनीक

इस प्रकार की तकनीकी का प्रयोग विशेष रुप से छात्रों को प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु किया जाता है। विद्यालयी, शिक्षण संस्थानों में इनकी उपलब्धता भारी मात्रा में देखी जा सकती है। इन तकनीकों के अन्तर्गत निम्नलिखित को स्वीकार किया जाता है

चित्र

चित्रों का उपयोग सामान्यतः सभी प्रकार के विषयों की जानकारी प्रदान करने हेतु किया जाता है। शिक्षण प्रक्रिया को सुचारु रुप से चालित करने हेतु चित्रो का उपयोग किया जाना विशेष रुप से लाभदायक माना जाता है। सामान्यत: वर्तमान में प्रत्येक विषय में चित्रों का समावेश पाया जाता है।

शिक्षक के द्वारा चित्रों का उपयोग करते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए

- चित्रों को विषय-वस्तु से सम्बन्धित होना चाहिए, जिससे उनके माध्यम से छात्रों को विषय-वस्तु का प्रभावी ज्ञान प्रदान किया जा सके। शिक्षक का सर्वप्रथम कर्त्तव्य यह माना जाता है कि वह छात्रों को पाठ्यक्रम से पूर्णरुप से परिचित कराता है।
- चित्रों को आकर्षित होना चाहिए, जिससे छात्र अपना ध्यान उसकी ओर एकत्रित कर सकें। जब तक छात्रों का ध्यान विषय पर एकाग्र नहीं किया जाता है, तब तक उन्हें प्रभावी शिक्षण प्रदान नहीं किया जा सकता।
- चित्र ऐसा होना चाहिए जो विषय-वस्तु के बारे में अपने आप ही पूर्णरुप से ज्ञान प्रदान कर दे। एक बार देखने मात्र से ही उसमें निहित विषय-वस्तु के ज्ञान को भली-भाँति आँका जा सके।
- चित्र में सदैव विभिन्न प्रकार के रंगों का समावेश होना अनिवार्य नहीं है। रंग से चित्र की उपयोगिता कम हो जाती है। रंग वाले चित्रों में प्रत्येक विषय के बारे में पूर्णरुप से ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
- चित्रों में एक से दो तक ही उद्देश्य का निर्धारण किया जाना चाहिए। यह देखा जाता है कि यदि चित्रों में बहुत अधिक उद्देश्यों को सम्मिलित किया जाता है, तो छात्रों को इस बारे में जानकारी प्राप्त करने में कठिनाई होती है।

चार्ट एवं ग्राफ

वर्तमान में चार्ट का उपयोग शिक्षण हेतु विशेष रुप से किया जा रहा है। इसका उपयोग करके शिक्षण को सुगम एवं प्रभावी किया जा सकता है। वैसे तो इनका उपयोग वर्तमान में छोटी तथा उच्च दोनों ही कक्षाओं में किया जा रहा है, परन्तु इनका उपयोग केवल उच्च कक्षाओं में ही किया जाता है। इसी प्रकार ग्राफ का उपयोग भी उच्च कक्षाओं के लिए ही किया जाता है।

साफ का उपयोग गणित तथा अर्थशास्त्र विषयों में विशेष रुप से किया जाता है। गणित में अनेक परिमय तथा रेखाचित्रों को दर्शाने के लिए ग्राफ का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार अर्थशास्त्र मे देश की अर्थव्यवस्था को दर्शाने हेतु ग्राफ का उपयोग किया जाता है। आय-व्यय के आँकड़ों को प्रदर्शित करने का यह सुगम तरीका माना जाता है।

चार्ट तथा ग्राफ का उपयोग करते समय शिक्षक के द्वारा निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए

- एक ग्राफ अथवा चार्ट पर अनेक वस्तुओं को प्रदर्शित करके उन्हें दुरुह न बनाया जाए. इससे उनकी उपयोगिता समाप्त हो जाती है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक माना जाता है कि चार्ट का प्रयोग करते समय उस पर एक अथवा दो तथ्यों को ही एंकलित किया जाए।
- ग्राफ तथा चार्ट पर आकृतियाँ दर्शाने हेतु स्केल का उपयोग किया जाना चाहिए।
- ग्राफ का आकार ऐसा होना चाहिए जिससे कक्षा के सभी छात्र इसे भली-भाँति समझ सकें।
- विभिन्न शैक्षिक उद्देश्यों को निर्धारित करके ही इसका उपयोग किया जाना चाहिए।
- चार्ट तथा ग्राफ को शुद्धता से प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जिससे सभी विद्यार्थियों के द्वारा इन्हें भली-भाँति समझा जा सके।
- चार्ट तथा ग्राफ का उपयोग शिक्षक के साथ-साथ छात्रों के द्वारा भी किया जाना चाहिए।

www.studyofeducation.com

ब्लैक बोर्ड

वर्तमान में शिक्षण हेतु श्यामपट्ट का उपयोग विशेष रुप से किया जा रहा है। इसके माध्यम से छात्रों के विषय के सन्दर्भ में लिखित रुप से शिक्षण प्रदान किया जा रहा है। श्यामपट्ट का उपयोग अधिक लम्बे समय से शिक्षण प्रदान करने हेतु किया जा रहा है, इसे परम्परागत साधन भी कहा जाता है।

इसके माध्यम से छात्रों के समक्ष स्थायी ज्ञान को रखा जा सकता है। यह उनके सीमित ज्ञान स्तर को उन्नत करने का एक आवश्यक साधन माना जाता है, जिसके परिणामस्वरूप छात्र, शिक्षक की सहायता से अध्यापक प्रक्रिया को चालित करते हैं।

इसके लिए शिक्षक चॉक का प्रयोग करता है। यह श्यामपट्ट पर चॉक के द्वारा विषय से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्यों को संकलित करता है तथा छात्रों को उससे परिचित कराने का प्रयास करता है।

मानचित्र

मानचित्र का उपयोग इतिहास तथा भूगोल आदि विषयों में विशेष रूप से किया जाता है। इन विषयों में इसका उपयोग किया जाना अति लाभदायक माना जाता है। इन दोनों में ही किसी राज्य विशेष की भौगोलिक, राजनीतिक आर्थिक, धार्मिक स्थितियों का वर्णन करना होता है, जो केवल मानचित्रों के माध्यम से ही किया जा सकता है। किसी देश की सीमा, नदियों आदि का ज्ञान प्रदान करने हेतु मानचित्र का उपयोग किया जाना अति लाभदायक माना जाता है।

मानचित्र की उपयोगिता

मानचित्र की उपयोगिता निम्न प्रकार है

- मानचित्र पूरे विश्व से लेकर छोटे-से-छोटे स्थान की भौगोलिक जानकारी के लिए एक सन्दर्भ का कार्य करता है।
- मानचित्र किसी अज्ञात स्थान के लिए मार्गदर्शन और दिग्दर्शक का कार्य करता है।
- थल, जल या वाय मार्ग से यात्रा करने में यात्रा के मार्ग की योजना बनाने और उस मार्ग पर बने रहने में सहायक है।
- सेना अपनी कार्यवाही (ऑपरेशन), सैनिकों की तैनाती, शत्रु की स्थिति आकलन एवं शस्त्रों की तैनाती के लिए भी मानचित्र का अत्यधिक उपयोग करती है।
- पुलिस, अपराधों का मानचित्रण करके पता कर सकती है कि अपराधों में कोई पैटर्न है या नहीं।
- इसी प्रकार, डॉ. जॉन स्नो ने लन्दन में हैजा फैलने पर मानचित्र की सहायता से ही यह अनुमान लगा लिया था कि इसके लिए सार्वजनिक जल पम्प जिम्मेदार हैं।

www.studyofeducation.com

कम्प्यूटर एवं वेब आधारित अनुदेश

कम्प्यूटर आधारित अनुदेश कम्प्यूटर को शिक्षा तकनीकी प्रथम या हार्डवेयर आयाम में ही सम्मिलित किया जाता है। यह स्वतः अनुदेशात्मक प्रणाली का एक उपकरण है, जिसका प्रयोग व्यक्तिगत अनुदेशन के लिए किया जाता है। कम्प्यूटर ने व्यापार-उद्योग तथा शासन प्रणाली को अधिक प्रभावित किया है, परन्तु इसका प्रभाव आज विद्यालय तथा शिक्षण प्रणाली पर भी स्पष्ट दिखाई दे रहा है। शिक्षण के क्षेत्र में अनुदेशन पद्धति, शोधकार्य तथा परीक्षा प्रणाली को कम्प्यूटर ने अधिक प्रभावित किया है।

कम्प्यूटर को विद्युत मस्तिष्क भी कहते हैं। यद्यपि अन्य शिक्षण मशीनों में पाठ्य-वस्तु को छोटे-छोटे पदों में क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाता है, परन्तु इन मशीनों को कोई निर्णय नहीं लेना पड़ता। जबकि कम्प्यूटर को पूर्व व्यवहारों के आधार पर अनुकूलन अनुदेशनों का चयन करना पड़ता यह निर्माण कम्प्यूटर द्वारा ही किया जाता है, इसलिए इसे विद्युत मस्तिष्क कहते हैं।

कम्प्यूटर आधारित अनुदेश की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं व्यक्तिगत रूप से शिक्षण प्राप्त होता है।

- छात्र को विभिन्न योग्यता वाले छात्र अपनी गति से शिक्षण ग्रहण करते हुए आगे बढ़ सकते हैं।
- एक कम्प्यूटर अनेक छात्रों के शिक्षण अथवा अनुदेशन के लिए प्रयोग होता है।
- इसमें प्रत्युत्तर छात्र अपनी ही गति से देते हैं और यह उन्हें अपनी गति और अपनी उपलब्धि दोनों के अनुसार प्रगति करने के अवसर प्रदान कर देता है।
- इसमें छात्रों को परिणाम शीघ्र मिल जाता है।

वेब आधारित अनुदेश शिक्षण सम्बन्धी वातावरण तैयार करने का वह माध्यम है, जो इण्टरनेट अथवा इण्ट्रानेट से जुड़कर कम्प्यूटर के हाइपरलिंक के साथ अनुदेशात्मक डोमेन के बाहरी संसाधनों की मध्यस्थता तथा समर्थन करता है। अनुदेश को इस तरह डिजाइन किया गया है कि कम्प्यूटर शिक्षार्थी अथवा उपयोगकर्ता के बातचीत के जवाब में पाठ प्रदर्शित करता है। वेब आधारित अनुदेश का एक पहलू अकस्मात् सीखना है जो अकसर होता है। 'आमने-सामने' परम्परा के अनुसार अनुदेशात्मक वातावरण, शिक्षण पर जान-बूझकर बहुत कम प्रासंगिक शिक्षण माना जाता है।

कम्प्यूटर और वेब ने इस अनुदेश के मॉडल को बदल दिया है। वे शिक्षार्थियों को 'किसी जगह, किसी समय' देखने, निकालने तथा संगृहीत करने की अनुमति देते हैं। उदाहरणस्वरुप, खाड़ी स्ट्रीम लिंक का अनुसरण करते हुए किसी विशेष सागर की धारा के सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। छात्र और अध्यापक क्रमागत लिंक का अनुसरण करके उपग्रह के भौतिक चित्रण से सम्बन्धित जानकारी ले सकते हैं। सीखने का यह प्रकार आश्चर्यजनक है, लेकिन प्रशिक्षक, जोकि हाइपरलिंक प्रदान करता है, इसकी योजना अवश्य बनाई जानी चाहिए।

www.studyofeducation.com

अनुदेशात्मक सामग्री

अनुदेशात्मक सामयी की रचना करना वस्तुतः एक उच्चस्तरीय विशिष्ट कार्य है। सामग्री निर्माण कार्य को तीन प्रमुख भागों में विभाजित किया

1. तैयार अथवा आयोजन
2. रचना अथवा कार्यक्रमित लेखन
3. मूल्यांकन अथवा परीक्षण

1. **तैयारी अथवा आयोजन -** यह अनुदेशन सामग्री की रचना का प्रथम सोपान है। इसके अन्तर्गत सामग्री के प्रारुप पर ध्यान दिया जाता है।इसके अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दुओं को शामिल किया जाता है

प्रकरण या शीर्षक का चयन

प्रोग्राम बनाने के लिए जिस भी प्रकरण या शीर्षक का चयन किया जाए, उसके अयन के समय निम्न बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए

- क्या उस प्रकरण या शीर्षक पर पहले से से कोई प्रोग्राम उपलब्ध तो नहीं?
- वह प्रकरण क्या अन्य किसी विधि से प्रभावशाली रुप से पढ़ाया जा सकता है?
- क्या यह प्रकरण छात्रों के दृष्टिकोण से अधिक सरल, तार्किक तथा मनोवैज्ञानिक बनाकर प्रस्तुत किया जा सकता है? जिससे यह ज्यादा रुचिकर, उपयोगी तथा उपयुक्त लगे।
- क्या यह छात्रों की पाठ्यक्रम सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करता है?
- क्या प्रोग्राम बनाने वाले व्यक्ति को इस प्रकरण पर पूरा अधिकार है?
-
- क्या प्रकरण में स्वतः तार्किक तारतम्य है, वह ज्यादा लम्बा तो नहीं है तथा उसमें निश्चित समय सीमा के अन्तर्गत प्रभावशाली शिक्षण की सम्भावनाएँ हैं?
- क्या प्रकरण का स्वरुप समुचित व्यवस्था के योग्य है?

छात्रों के पूर्व ज्ञान की सूचना

यह प्रोग्राम छात्रों के लिए है। अत: प्रोग्राम बनाने के पूर्व, जिन छात्रों के लिए प्रोग्राम बनाया जा रहा है, उन छात्रों की आयु, लिंग, सामाजिक, आर्थिक, मानसिक स्तर, रुचि, योग्यताओं, पृष्ठभूमि तथा पूर्वानुभव आदि से सम्बन्धित सूचनाएँ एकत्रित करनी चाहिए तथा तद्नुसार ही प्रोग्राम का आयोजन करना चाहिए।

www.studyofeducation.com

उद्देश्यों को व्यावहारिक रुप में लिखना

इस पद के अन्तर्गत उद्देश्यों का प्रतिपादन किया जाता है और उन्हें व्यावहारिक भाषा में लिखा जाता है। इसके लिए कार्य-विवरण तथा कार्य विश्लेषण दोनों ही क्रियाएँ की जाती हैं। इन उद्देश्यों को लिखते समय रॉबर्ट मेगर, मिलर, ग्रोनलुण्ड तथा दवे के उपागमों में से आवश्यकतानुसार किसी एक उपागम या विधि का प्रयोग किया जाता है। उद्देश्यों को लिखते समय उपयुक्त कार्यपरक क्रियाओं का चयन तथा प्रयोग करना चाहिए। व्यावहारिक-उद्देश्य वस्तुनिष्ठ मानदण्ड परीक्षाओं के निर्माण में सहायक होते हैं।

विषय-वस्तु की रुपरेखा का निर्माण -

छात्रो के पूर्व अनुभवों, पूर्वज्ञान तथा पूर्व व्यवहारों एवं निर्धारित उद्देश्यों के अनुरुप विषय-वस्तु की रुपरेखा बनाई जाती है। इस रुपरेखा के निर्माण में यह आवश्यक है कि उसके अन्तर्गत वह सारी विषय-वस्तु आ जाए, जिसका प्रोग्राम बनाना है। विषय-वस्तु की रुपरेखा तार्किक अथवा मनोवैज्ञानिक आधारों पर बनानी चाहिए। विषय-वस्तु की रुपरेखा का निर्माण करते समय विषय-विशेषज्ञों की भी सहायता ली जा सकती है।

मानदण्ड परीक्षा का निर्माण

इस पद के अन्तर्गत छात्रों के अन्तिम व्यवहारों के मुल्यांकन के लिए मानदण्ड परीक्षा का निर्माण किया जाता है। इस परीक्षण में विशिष्ट पददग्यों के अनुरूप वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को पूछा जाता है। इनमे उन सभी व्यवहारों एवं कौशलों का मूल्यांकन किया जाता है, जिन्हें सिखाने के लिए प्रोग्राम बनाया गया है। यही परीक्षण मानदण्ड कहलाते हैं। इन परीक्षाओं का उददेश्य यह जानना होता है कि छात्र अधिगम के उद्देश्यों तथा मानदण्डों तक पहुंचे या नहीं।

यदि पहुँचे तो किस सीमा तक पहुंचे, यदि नहीं पहुँचे तो क्यों और कैये टन तक पहुँच सकते हैं। ध्यान रहे कि प्रत्येक अनुदेशन उद्देश्य के लिए कम-से-कम 3 या 4 प्रश्न अवश्य परीक्षण में होने चाहिए। इन्हें करने के लिए उचित नि एवं आदेश स्पष्ट रुप से दिए जाने चाहिए। यदि सम्भव हो तो इन मानदण्ड परीक्षाओं की विश्वसनीयता एवं वैधता का परीक्षण भी किया जाना चाहिए।

2. रचना अथवा कार्यक्रमित लेखन

इस पद के अन्तर्गत वास्तविक प्रोग्राम के कार्यक्रम को लिखा जाता है। लिखने प्रकार के निर्णय लिए जाते है, जैसे

- प्रोग्राम किस विधि से लिखा जाए, (लीनियर, ब्रांचीय या मैथमेटिक्स)?
- सीखने वाले के पूर्व व्यवहार/पूर्व अनुभव कैसे हैं?
- अनुदेशन उद्देश्यकौन-कौन से निर्धारित किए गए हैं?
- विषय-वस्तु की प्रकृति क्या है?

www.studyofeducation.com

प्रोग्राम लिखते समय कार्यक्रमित अध्ययन के मूलभूत सिद्धान्तों को सदैव ध्यान रखना चाहिए। विशेष रुप से निम्नलिखित तीन बातों का ध्यान रखना चाहिए

बोधगम्य पदों की रचना

इस पद में विषय-वस्तु को फ्रेम (छोटे-छोटे वाक्यों के रुप) में लिखा जाता है। फ्रेम के तीन अंक होते हैं

- **उद्दीपन** अनुक्रिया या अनुक्रिया उत्पन्न करने की परिस्थिति के रुप में वह अंग जो विषय-वस्तु छात्रों के सामने प्रस्तुत करता है, ताकि छात्रों को अनुक्रिया करने की प्रेरणा मिल सके।
- **अनुक्रिया** पद को पढ़ने के पश्चात् छात्र किसी-न-किसी प्रकार की अनुक्रिया अवश्य करता है।

- **पुनर्बलन** या प्रतिपुष्टि छात्र अपनी अनुक्रिया का सही अनुक्रिया से मिलान करता है और पुनर्बलन या प्रतिपुष्टि प्राप्त करता है।

सामान्यतः प्रोग्राम में निम्नलिखित प्रकार के पद सम्मिलित रहते हैं-

शिक्षण पद इन पदों के माध्यम से छात्रों के समक्ष नवीन विषय-वस्तु प्रस्तुत की जाती है। ये पद किसी प्रोग्राम में लगभग 60% से 70% होते हैं।
अभ्यास पद नई विषय-वस्तु नया ज्ञान सिखाने के पश्चात् ज्ञान को स्थायी बनाने के लिए अभ्यास पदों का निर्माण किया जाता है। छात्र इनका प्रयोग करके सीखे गए ज्ञान का बारम्बार प्रयोग कर अभ्यास करते हैं। ऐसे पद 20% से 25% तक रखे जा सकते हैं।
परीक्षण पद छात्रों द्वारा सीखे गए ज्ञान के परीक्षण हेतु परीक्षण पदों का निर्माण किया जाता है। इनका उद्देश्य सीखे हुए ज्ञान का मूल्यांकन करना होता है। ये 10% से 15% तक रखे जा सकते हैं।
छात्रों के उत्तरों को निर्देशित करने के लिए उप-क्रमक का तथा अनुबोधकों का प्रयोग प्रोग्राम इस प्रकार लिखा जाना चाहिए, जिससे कि छात्र अधिक-से-अधिक सही अनुक्रिया करें। जब छात्र उचित अनुक्रिया करने में सफल नहीं होते, तब उप-क्रमक तथा अनुबोधक का प्रयोग किया जाता है।

फ्रेमों को उचित कम प्रदान करना

फ्रेम तैयार करने के पश्चात् उन्हें सुनिश्चित तारतम्य में व्यवस्थित किया जाता है। इन्हे व्यवस्थित करते समय मनोवैज्ञानिक से तार्किक क्रम की ओर शिक्षण सूत्र का उपयोग करना चाहिए। फ्रेमों को उचित क्रम प्रदान करने के लिए मैट्रिक्स विधि, रुलैग विधि और अगरुल विधि प्रमुख हैं।

इनमें से किसी एक विधि का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जाना चाहिए। अनेक प्रोग्रामों में उद्देश्यों के अनुसार एक से अधिक विधि का प्रयोग किया गया है।

सम्पादन करना

तैयार प्रोग्राम के मूल ड्राफ्ट का सफलतापूर्वक सम्पादन करना चाहिए। सम्पादन के समय निम्नलिखित बातें ध्यान देने योग्य है
विषय-वस्तु में किसी प्रकार की तकनीकी त्रुटि तो नहीं है, यह देखा जाना चाहिए। इस स्तर पर विषय विशेषज्ञों की सहायता ली जा सकती है।
प्रोग्राम विशेषज्ञों की सहायता से यह देखा जाता है कि मूल ड्राफ्ट में प्रोग्राम अनुदेशन को तकनीकियों, पद रचनाओं, फ्रेमों को उचित क्रम देने में अथवा ड्राफ्ट की शैली-भाषा में कोई त्रुटि तो नहीं है।

www.studyofeducation.com

भाषा-विशेषज्ञों की सहायता से तैयार मूल ड्राफ्ट में व्याकरण की गलतियाँ, स्पैलिंग की त्रुटियाँ तथा अनुपयुक्त एवं अस्पष्ट भाषा आदि का पता लगाकर उन्हें ठीक किया जाता है। अनुदेशन निर्देशों की अस्पष्टता, भाषा की अनिश्चितता, दिए गए उदाहरणों की अनुपयुक्तता आदि कमियों को भी ठीक किया जाता है और मूल ड्राफ्ट में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किए जाते हैं।

3. मूल्यांकन अथवा परीक्षण

प्रोग्राम निर्माण का यह अन्तिम कार्य है, जिसके अन्तर्गत तैयार संशोधित प्रोग्राम ड्राफ्ट का परीक्षण एवं मूल्यांकन किया जाता है। इसमें निम्नांकित क्रियाएँ सम्पादित की जाती हैं

व्यक्तिगत परीक्षण

इसमें प्रोग्राम को 4-5 छात्रों पर प्रशासित किया जाता है और यह पता लगाया जाता है कि तैयार प्रोग्राम ड्राफ्ट में पद, आकार, भाषा, प्रत्यय, उप-क्रमक तथा अनुबोधक आदि से सम्बन्धित क्या-क्या कमियाँ हैं। इसके अतिरिक्त छात्रों की प्रतिक्रियाएँ भी नोट की जाती हैं और आवश्यकतानुसार परिवर्तन, परिमार्जन प्रोग्राम में किया जाता है।

लघु समूह परीक्षण

परिवर्तित तथा परिमार्जित प्रोग्राम पुन: 10-20 छात्रों के समूह पर प्रशासित किया जाता है। छात्रों से इस ड्राफ्ट में जरुरी परिवर्तनों तथा सुधार हेतु सुझाव माँगे जाते हैं। इनकी प्रतिक्रियाएँ एवं लिए गए समय को भी नोट किया जाता है और इन सभी आधारों पर प्रोग्राम में पुन: संशोधन तथा परिमार्जन किया जाता है।

क्षेत्र परीक्षण

प्रोग्राम को अन्तिम रुप देने के लिए प्रोग्राम को एक प्रतिनिधि न्यादर्श पर पुनः प्रकाशित किया जाता है और छात्रों की बड़े पैमाने पर की गई प्रतिक्रियाओं तथा दिए सुझावों के आधार पर ड्राफ्ट में पुनः संशोधन किया जाता है। इस परीक्षण के आधार पर प्रोग्राम की उपयुक्तता तथा वैधता स्थापित की जाती है।

मूल्यांकन

क्षेत्र परीक्षण से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर निम्नांकित चीजों का मूल्यांकन किया जाता है

- **प्रोग्राम की त्रुटि दर**
- **कार्यक्रम घनत्व** इससे प्रोग्राम के कठिनाई स्तर का पता लगाया जाता है।
- **तारतम्य प्रवाह** तारतम्य प्रवाह स्केलोग्राम की सहायता से देखा जाता है। मानदण्ड परीक्षण के प्राप्तांकों के आधार पर स्केलोग्राम तालिका बनाई जाती है। इस तालिका के आधार पर प्रोग्राम का तारतम्य प्रवाह देखा जाता है। यदि तालिका

देखने पर पता चलता है कि पाठ्यक्रम में क्रम व्यवस्था उचित नहीं है, तो प्रोग्राम में सुधार लाने का प्रयास करना पड़ता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन (Evaluation of Curriculum)

मूल्यांकन शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है-मूल्य और अंकन अर्थात् किसी भी वस्तु को मूल्य प्रदायित करना अथवा मूल्य का निर्धारण करना। पाठ्यचर्या मूल्यांकन, पाठ्यचर्या से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों के साथ-साथ कार्यान्वयन में आई समस्याओं की पहचान करता है।

यह पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया में सुधार के तरीके सुझाता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा पाठ्यचर्या वित्त की प्रभावकारिता का भी अनुमान लगाया जाता है।

- **कोठारी कमीशन** के अनुसार, "पाठ्यचर्या मूल्यांकन एक अनवरत प्रक्रिया है, जोकि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा उसका शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है।"
- **एनसीईआरटी** के अनुसार, "यह एक ऐसी सतत प्रक्रिया है, जो शैक्षिक उद्देश्यों या शिक्षा में दिए गए अधिगम अनुभवों के प्रभावों का मूल्यांकन करती है।"
- **मैक नील** के अनुसार, "पाठ्यचर्या मूल्यांकन में दो प्रश्नों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जाता है। पहला, क्या नियोजित अधिगम अवसरों, कार्यक्रमों, पाठ्यचर्या और गतिविधियों का विकास एवं आयोजन इस प्रकार किया गया है कि वे वांछित परिणाम ला सकते हैं? दूसरा, आयोजित पाठ्यचर्या में सर्वोत्तम परिणाम किस प्रकार प्राप्त हो सकता है?"
- **वर्दन और साण्डर्स** पाठ्यचर्या मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि, "पाठ्यचर्या मूल्यांकन किसी कार्यक्रम, उत्पाद, योजना, प्रक्रिया उद्देश्य या पाठ्यचर्या की गुणवत्ता, प्रभावशीलता या मूल्यों का निर्धारण है।"
- **गे** के अनुसार, "पाठ्यचर्या मूल्यांकन का लक्ष्य पाठ्यचर्या से सम्बन्धित दुर्बल एवं सबल पक्षों के साथ-साथ कार्यान्वयन में आई समस्याओं की पहचान करना, पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया में सुधार करना, पाठ्यचर्या एवं आवण्टित वित्त की प्रभावकारिता को निर्धारित करना है।"
- **स्क्रीवेन** के अनुसार, "पाठ्यचर्या मूल्यांकन एक विधिवत की जाने वाली प्रक्रिया है, जिसमें शैक्षिक उद्देश्यों की उपलब्धि के प्रमाण-पत्र प्राप्त किए जाते हैं।"

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उपागम (Approaches of Curriculum Evaluation)

www.studyofeducation.com

कोई भी पाठ्यचर्या विभिन्न चरणों से गुजरती हुई सम्पूर्णता को प्राप्त करती है। यह सम्पूर्णता भी समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ही होती है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन में बहुत से उपागमों का प्रयोग किया जाता है। इन विभिन्न उपागमों में महत्वपूर्ण उपागमों को निम्नलिखित रूप से बिन्दुवार किया जा सकता है

- **प्रश्नावलि** प्रश्नावलियों का प्रयोग पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए किया जाता है। प्रश्नावलियों का प्रयोग पाठ्यचर्या से प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों रूपों से जुड़े हितधारकों पर किया जाता है जिसमें छात्र, अध्यापक, माता-पिता, प्रशासक एवं पाठ्यचर्या निर्माण से जुड़े अन्य यक्ति आ जाते हैं। इन्हें पाठ्यचर्या से जुड़े विभिन्न प्रश्न दिए जाते हैं, जिनका उत्तर इन्हें देना होता है।
- **प्रेक्षण** प्रेक्षण यह पाठ्यचर्या के सम्पादन से सम्बन्धित है। प्रेक्षण तकनीक मूल्यांकनकर्ता को मूल्यांकन प्रक्रिया हेतु सर्वाधिक सम्बन्धित पहलू पर विशेष ध्यान देने में सहायता करता है। यह विधि उस स्थिति में अधिक वैध मानी जाती है जब इसमें व्यक्तिनिष्ठता एवं वस्तुनिष्ठता का उचित समावेश होता है। प्रेक्षण के साथ-साथ साक्षात्कार एवं पृष्ठ पोषण तथा इसके साथ-ही-साथ अन्य लिखित साक्ष्य प्रेक्षण से प्राप्त परिणामों की सार्थकता में वृद्धि करते हैं।
- **चेक लिस्ट** चेक लिस्ट को मात्र प्रयोग करके इसके द्वारा पूर्ण जानकारी प्राप्त करना कठिन कार्य है। अतः चेक लिस्ट को प्रश्नावली या साक्षात्कार के साथ एक पूरक या भाग के रूप में प्रयोग करते यह उत्तरों की सम्पूर्ण सूची होती है। उत्तरदाता जिसमें अपने हिसाब से सबसे उपयुक्त उत्तरों को चुनता है अर्थात् सही उत्तरों की सूची में से कुछ उत्तरों को अपने विचार के आधार पर सही मानता है और उन्हें सही के निशान से चयनित कर लेता है। मूल्यांकनकर्ता को पाठ्यचर्या से सम्बन्धित विभिन्न तथ्यों को सूचीबद्ध कर उन्हें उत्तरदाता को दे देना चाहिए एवं इसके द्वारा पाठ्यचर्या में न बिन्दुओं में समस्याएँ हैं; किन पाठों की आवश्यकता नहीं है, कौन से पाठ अप्रासंगिक हैं, कहाँ संशोधन की आवश्यकता है और कौन से नए पक्ष जोड़े जाने चाहिए, की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
- **साक्षात्कार** साक्षात्कार, सूचनाओं के संग्रहण एवं मूल्यांकन हेतु एक आधारभूत तकनीक के रूप में देखा जाता है। साक्षात्कार आवश्यकताओं और उद्देश्यों के आधार पर औपचारिक एवं अनौपचारिक अथवा संगठित अथवा असंगठित कैसा भी हो सकता है। इसके लिए पाठ्यचर्या से सम्बन्धित जिन सूचनाओं की प्राप्ति साक्षात्कार के माध्यम से करनी है वह उचित प्रकार से परिभाषित एवं लिखित होना चाहिए एवं प्रश्नों का प्रस्तुतीकरण उचित प्रकार से होना चाहिए अर्थात् साक्षात्कारकर्ता के द्वारा प्रश्न उचित प्रकार से पूछे जाने चाहिए और किसी भी प्रकार की शीघ्रता और पक्षपात नहीं करना चाहिए। मूल्यांकन हेतु पाठ्यचर्या के सम्बन्ध में किसी विशेषज्ञ से उचित प्रश्न पूछे जाएँ और फिर उन उत्तरों के आधार पर पाठ्यचर्या को मूल्यांकित किया जाना चाहिए।
- **कार्यशाला एवं समूह परिचर्या** पाठ्यचर्या के मूल्यांकन हेतु कार्यशालाओं और समूह परिचर्याओं का प्रयोग किया जाता है। इस तकनीक में विशेषज्ञों को पाठ्यचर्या पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए आमन्त्रित किया जाता है और तत्पश्चात् समूह परिचर्या कराई जाती है और निर्धारित निष्कर्षों के आधार पर जोकि मूल्यांकनकर्ता के द्वारा निर्धारित की गई होती है, पर पाठ्यचर्या का मूल्यांकन किया जाता है।
- **पाठ्यचर्या मूल्यांकन** पाठ्यचर्या के विकास एवं उसके क्रियान्चयन के लिए उपयोगी जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया एवं माध्यम है। यदि इसे और पर शब्दों में कहा जाए तो यह इसे इस पांति समझा जा सकता है कि किसी भी पाठ्यचर्या

www.studyoeducation.com

का निर्माण कुछ निश्चित उददेश्यों की प्राप्ति हेतु किया जाता है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि निर्धारित पाठयगर्या के द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हो रही है अथवा नहीं और यदि हुई है, तो उद्देश्य किस सीमा तक प्राप्त हुए हैं।

मूल्यांकन के अभाव में पाट्यचर्या दिशाहीन हो जाएगी और दिशाहीन पादयचर्या विद्यार्थियों को कहाँ ले जाएगी, इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है जिय प्रकार से गन्तव्य का ज्ञान होने के पश्चात् भी यदि चुना गया मार्ग सही नहीं है, तो गन्तव्य तक नहीं जाया जा सकता, ठीक उसी प्रकार शिक्षण उद्देश्यों की जानकारी होने पर भी यदि पाठ्यचर्या सही नहीं है तो निर्धारित उद्देश्यों तक कभी नहीं पहुंचा जा सकता।

पाठ्यचर्या और अनुदेश के उपागम (Approaches of Curriculum and Instruction)

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थी के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन लाना है। पाठ्यचर्या और अनुदेशों के द्वारा शिक्षक, शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति करता है। यद्यपि शिक्षण कार्यों के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए परम्परागत सामग्री और शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग सदैव होता रहा है, किन्तु वर्तमान में पाठ्यचर्या और अनुदेशों की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए विशेष मीडिया कार्यक्रमों और तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। ये सभी कार्यक्रम और तकनीकें शिक्षक की शिक्षण पद्धति, विषय-सामग्री और अध्यापक-छात्र शिक्षण सक्षमताओं पर केन्द्रित होती हैं।

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या और अनुदेशन के लिए दो प्रकार के उपागमों को विशेष रुप से अपनाया जाता है

1. शैक्षणिकता आधारित उपागम

शैक्षणिकता उपागम शिक्षण प्रविधियों के उपयोग की दक्षता पर अधिक बल देता है। इस उपागम के अन्तर्गत अध्यापक शिक्षण प्रविधियों का उपयोग इस प्रकार किया जाता है कि विषय के रूप में उपलब्ध शैक्षिक सामग्री को प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया जा सके तथा साथ ही यह भी आवश्यक है कि जिन शैक्षिंक सामग्रियों को प्रस्तुत किया जा रहा है, छात्र उसे ठीक प्रकार से ग्रहण कर सकें। यह उपागम शिक्षण को एक कला के रूप में स्वीकार करता है। पाठ्यचर्या और अनुदेश इसी कला को प्रभावी रूप में व्यक्त करने के दो तरीके हैं। इस उपागम के अन्तर्गत शिक्षा-सामग्रियों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के सन्दर्भ में परीक्षण क्रियाओं का प्रयोग करके किया जाता है।

शैक्षणिक उपागम वस्तुत: उन गतिविधियों और व्यवहारों का प्रतिनिधित्व करता है जो शिक्षण कार्य के दौरान अध्यापक और छात्र के मध्य होता है। निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति, यह उपागम शिक्षक-छात्र सह-सम्बन्धों के आधार पर करना चाहता है। इसके अन्तर्गत

शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण सामग्री, शिक्षण तकनीक आदि के साथ-साथ शिक्षण व्यवहार और उपयुक्त शैक्षिक वातावरण को भी अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। सीखने की संरचना का निर्माण इस उपागम का केन्द्रीय विषय है।

शैक्षिक उपागम की प्रवृत्तियाँ

शैक्षणिक उपागम में निम्नलिखित मुख्य प्रवृत्तियाँ होती हैं

- यह उपागम अधिगम गतिविधियों को नियन्त्रित करने के लिए एक सशक्त माध्यम प्रदान करता है।
- इसके अन्तर्गत अनुदेशन गतिविधियों पर नियन्त्रण करने के लिए पर्याप्त अवसर की गुंजाइश रहती है।
- यह पाठ्यचर्या उद्देश्यों के सम्बन्ध में संज्ञानात्मक उद्देश्यों का विश्लेषण करता है और इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संश्लेषण, विश्लेषण और मूल्यांकन प्रविधियों को अपनाता है।
- यह उपागम शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत एक सस्ता साधन प्रदान करता है, क्योंकि इसके अन्तर्गत सीमित संसाधन के रूप में एक शिक्षक बहुत से छात्रों को सिखा सकता है।
- यह उपागम छात्रों की सक्षमता की तुलना में विषय सामग्री को अधिक महत्त्व देता है। अतः यह एक विषय-केन्द्रित अवधारणा है।
- इस उपागम के अनुसार शिक्षक किसी शैक्षणिक संस्था की ओर से अपना शिक्षण-कार्य वित्तीय प्रतिबद्धता के साथ करते हैं।
- पाठ्यचर्या और अनुदेशन विकास प्रक्रिया के सन्दर्भ में यह सक्षमता आधारित उपागम की तुलना में एक लचीला उपागम है।
- भारतीय शिक्षण व्यवस्था में इस उपागम का सर्वाधिक उपयोग हुआ है। शिक्षा की पारम्परिक पद्धति इसी उपागम पर आधारित है।
- पाठ्यचर्या और अनुदेशन व्यवस्था के अन्तर्गत यह उपागम मौखिक संवादी और क्रियाकलापों को अधिक महत्त्व नहीं देता है।
- शिक्षा की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के सन्दर्भ में शैक्षणिक उपागम अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाता, क्योंकि यह एक आत्मकेन्द्रित अवधारणा न होकर विषय केन्द्रित अवधारणा है।

2. सक्षमता आधारित उपागम

शिक्षा एक गत्यात्मक अवधारणा है। अतः इसके अन्तर्गत उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षण गतिविधियाँ, तकनीकें और उद्देश्य समय-समय पर बदलते रहें। इन उद्देश्यों का निर्धारण समाज की आवश्यकता और राज्य में उपस्थित लोकतान्त्रिक व्यवस्था के आधार पर होना चाहिए। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा का स्वरूप विषय केन्द्रित न होकर विषयी (छात्र) केन्द्रित हो। चूँकि शिक्षा वस्तुतः समाज के व्यावहारिक परिवर्तन का माध्यम है। अतः यह आवश्यक

www.studyofeducation.com

है कि शिक्षा कार्यक्रमों और शिक्षा सामग्रियों के निर्धारण में छात्र की सक्षमता और दक्षता का पूर्ण ध्यान रखा जाए। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा तैयार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क में शिक्षकों और छात्रों की सक्षमता को शिक्षा के एक प्रमुख प्रतिमान के रूप में स्वीकार किया गया है।

पाठ्यचर्या और अनुदेशन का सक्षमता आधारित उपागम कुछ निश्चित नियमों और सिद्धान्तों को अपनाता है।

इन नियमों और सिद्धान्तों का विनियमन, औपचारिक विचार-विमर्श और शिक्षक के माध्यम से किया जाता है। सरल शब्दों में कहें तो यह उपागम अध्यापक छात्र समूह व्यवस्था के भीतर चर्चा का सशक्त माध्यम प्रदान करता है। सक्षमता आधारित उपागम यद्यपि अपनी क्रियात्मक प्रविधि में कुछ निश्चित मार्गदर्शक सिद्धान्तों को अपनाता है, किन्तु यह इन सिद्धान्तों के आवश्यक रूप से बँधता नहीं है, बल्कि यह शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु छात्रों को स्वैच्छिक निर्णयन का अधिकार भी प्रदान करता है। सक्षमता आधारित उपागम, पूर्व में निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों की विवेचना मात्र सन्तुष्ट नहीं होता, बल्कि यह बदलती आवश्यकताओं के अनुसार शैक्षणिक गतिविधियों और उनके उद्देश्यों में भी परिवर्तन की मार करता है।

www.studyeducation.com

सक्षमता आधारित उपागम की प्रवृत्तियाँ

सक्षमता आधारित उपागम की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित है

- यह उपागम शिक्षण कला में निपुणता और प्रभावशीलता को बढ़ाने हेतु दक्षता आधारित अनुदेशन कार्यक्रमों का प्रावधान करता है।
- इस उपागम के अन्तर्गत केवल शिक्षा की परम्परावादी मान्यताओं की स्वीकार नहीं किया जाता, बल्कि वर्तमान समाज में विद्यमान सांस्कृतिक-सामाजिक समस्याओं, शिक्षा के अवसरों की प्राप्ति आदि पर भी ध्यान केन्द्रित किया जाता है।
- इसमें शिक्षा की प्रसारवादी अवधारणा के साथ-साथ नव-परिवर्तनवादी अवधारणा पर भी कार्य किया जाता है। यह शिक्षा की आवश्यकता के साथ उत्तरदायित्व पर भी बल देता है।
- सक्षमता आधारित उपागम शिक्षा के पारम्परिक उद्देश्यों-संज्ञानात्मक, बोधात्मक और भावात्मक तक ही सीमित नहीं रहता। इसके अन्तर्गत शिक्षा के दो अन्य उद्देश्यों-अन्वेषणात्मक और परिमाणात्मक को भी सम्मिलित किया जाता है।
- अन्वेषणात्मक उद्देश्य छात्रों को ज्ञान के प्रति जिज्ञासु और क्रियाशील बनाता है।
- जबकि परिमाणात्मक उद्देश्य शिक्षक के निर्देशन में छात्रों के निष्पादन स्तर को व्यक्त करता है।
- सक्षमता आधारित उपागम, सामान्य रुप से पाँच प्रकार की सक्षमताओं-संज्ञान आधारित सक्षमता, प्रदर्शन आधारित सक्षमता, परिणाम आधारित सक्षमता, प्रभाव आधारित सक्षमता और अन्वेषण आधारित सक्षमता, को स्वीकार करता है।

- सक्षमता आधारित उपागम यह स्वीकार करता है कि पाठ्यचर्या और अनुदेशन कार्यक्रमों द्वारा छात्रों और अध्यापकों के व्यवहार, कुशलता और ज्ञान में परिवर्तन लाया जा सकता है।
- शिक्षण की पूर्व मान्यता के रूप में यह उपागम स्वीकार करता है कि पाठ्यचर्या और अनुदेशन सामग्रियों के निर्धारण से पूर्व अध्यापकों को उसकी एक रुपरेखा बनानी चाहिए।
- यह उपागम व्यावहारिक संवादों, स्वयं निर्देशन सामग्रियों, समूह केन्द्रित परिचर्चाओं, सूचनाओं के संवितरण आदि के द्वारा सक्षमता के विकास पर बल देता है।
- शैक्षणिक उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बन्ध में सक्षमता आधारित उपा शिक्षकों के उत्तरदायित्व और जवाबदेही का समर्थन करता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के मॉडल (Models of Curriculum Evaluation)

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के सन्दर्भ में विशेषज्ञों ने विभिन्न मॉडलों को प्रस्तुत किया आनदण्डो को परिभाषित करते हैं। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के सम्बन्ध में मूल्यों का है। ये सभी मॉडल किसी-न-किसी प्रकार से पाठ्यचर्या मूल्यांकन से सम्बन्धित निर्धारण, परिणामों की उपादेयता, पाठ्य सामग्री की रुपरेखा, निर्णयन प्रक्रिया का स्वरुप आदि प्रश्नों के लिए ये मॉडल्स कुछ निर्धारित मानदण्डों की स्थापना करते हैं। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न मॉडल निम्नलिखित हैं

टॉयलर का मॉडल

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के सम्बन्ध में टॉयलर का मॉडल एक उद्देश्य केन्द्रित मॉडल है। यह मॉडल पाठ्यचर्या मूल्यांकन के सर्वाधिक पुराने माडलों में से एक टॉयलर द्वारा वर्ष 1949 में 'पाठ्यचर्या और शिक्षा के मूल सिद्धान्त' नामक एक लेख प्रकाशित किया गया था। इसी लेख में टॉयलर ने अपने इस मॉडल को प्रस्तुत किया था। टॉयलर का उद्देश्य केन्द्रित मॉडल पाठ्यचर्या मूल्यांकन के सन्दर्भ में तार्किक दृष्टिकोण अपनाना है। यह मॉडल व्यवस्थित ढंग से अनेक चरणों में पाठ्यचर्या मूल्यांकन प्रस्तुत करता है।

ये सभी चरण निम्नलिखित रुप में बिन्दुवार किए जा सकते हैं

- सर्वप्रथम पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की रुपरेखा को तैयार करना चाहिए। उसके पश्चात् इन उद्देश्यों की प्राप्ति से सम्बन्धित सामग्री तथा सम्भावित छात्र व्यवहार को निर्दिष्ट करना चाहिए।
- उन स्थितियों का निर्माण करना चाहिए, जिसमें इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु छात्रों को सुनिश्चित अवसर प्राप्त हो सकें।
- मौखिक भाषा सम्प्रेषणों के उत्पन्न होने की स्थितियों की पहचान करनी चाहिए।
- उपयुक्त मूल्यांकन उपकरणों का निर्माण करना चाहिए।
- निष्पक्षता, वैधानिकता, विश्वसनीयता और वैधता के लिए उपकरणों की जाँच करनी चाहिए।

- उपकरणों से प्राप्त परिणामों की तुलना और विश्लेषण करना चाहिए। पाठ्यचर्या विश्लेषण के द्वारा परिणामों की कमजोरियों का निर्धारण करना चाहिए।
- पाठ्यचर्या विश्लेषण से प्राप्त शिक्षा उद्देश्यों की स्पष्ट पहचान करनी चाहिए।
- पाठ्यचर्या में आवश्यक संशोधन करने के लिए परिणामों का उपयोग करना चाहिए।

टॉयलर के मॉडल को अपनाने के लाभ

- यह मॉडल समझने और लागू करने में अपेक्षाकृत सरल है।
- यह मॉडल छात्रों के प्रदर्शन के साथ पाठ्यचर्या की मजबूती और कमजोरियों को ध्यान केन्द्रित करता है।
- यह मूल्यांकन, विश्लेषण और सुधार का सतत प्रयास है।

टॉयलर के मॉडल को अपनाने के बाधाएँ

- टॉयलर मॉडल सुझाव नहीं देता कि उद्देश्यों के सन्दर्भ में स्वयं का मूल्यांकन कैसे किया जाए।
- यह पाँडल पागकों को जोड़ने और उन विकसित किए जाने का सुझाव नहीं देता है।
- यह मॉडल पाठ्यचर्या विकास और मुल्यांकन में रचनात्पकता को सीमित करने हेतु पूर्व निर्धारित कथनों की प्यीकृति पर बल देता है। अतः यह मॉडल प्रारम्भिक और वर्तमान मूल्यांकन आवश्यकताओं को नजरअन्दाज करता है।

स्टेक का मॉडल

रॉबर्ट स्टेक द्वारा वर्ष 1969 में यह मॉडल प्रस्तुत किया गया था। टेक का मॉडल पाठ्यचर्या मूल्यांकन के सम्बन्ध में शिक्षा और अधिगम सम्बन्धी पूर्व धारणाओं को उद्देश्यों से सम्बन्धित करता है। स्टेक द्वारा प्रस्तावित मॉडल में पाठ्यक्रम मूल्यांकन के तीन चरणों को अपनाया गया है

1. पूर्ववर्ती चरण 2. लेन-देन चरण 3. परिणाम

पूर्ववर्ती चरण में अनुदेशन के पिछले परिणामों से सम्बन्धित उपस्थित परिस्थितियों को शामिल किया जाता है। लेन-देन चरण में शिक्षक और छात्रों के मध्य, लेखक और पाठक के मध्य हुई वार्ता को शामिल किया जाता है। परिणाम के अन्तर्गत पाठ्यचर्या के प्रभाव का आकलन किया जाता है।

www.studyofeducation.com

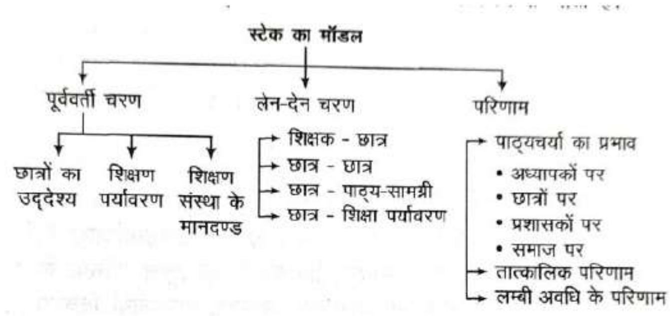

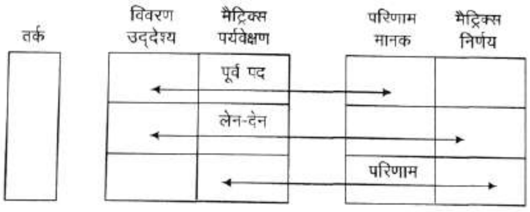

स्टेक मॉडल का मैट्रिक्स प्रारूप

स्टेक द्वारा प्रतिपादित मॉडल को निम्नलिखित मैट्रिक्स द्वारा प्रदर्शित किया जा सकता है

स्टेक मॉडल के लाभ एवं सीमाएँ

- स्टेक मॉडल के लाभ निम्नलिखित हैं
- स्टेक मॉडल विभिन्न व्यक्तियों की पाठ्यचर्या विश्लेषण का एक व्यापक आधार प्रदान करता है।
- यह मॉडल समाज में उनकी सूचनाओं की उपलब्धि के आधार पर परिणामों का निर्धारण करता है।
- यह मॉडल टॉयलर की भाँति उद्देश्य केन्द्रित नहीं है। यह मॉडल प्रोग्रामों की गतिविधियों को उनके उद्देश्य से अधिक महत्त्व देता है।
- पाठ्यचर्या विकास और मूल्यांकन के सन्दर्भ में यह मॉडल अन्य मॉडलों की तुलना में वृहद् स्वरूप रखता है, क्योंकि स्टेक का मॉडल पूर्ववर्ती अवस्था के साथ मध्यवर्ती और अन्तिम अवस्था अर्थात् तीनों अवस्थाओं पर ध्यान केन्द्रित करता है।

स्टेक मॉडल के सीमाएँ

- यह मॉडल मूल्यों के सन्दर्भ में द्वन्द्व को बढ़ावा देता है, क्योंकि किस पाठ्यचर्या विकास का मूल्य किस प्रकार का होना चाहिए। इस तथ्य पर स्टेक का मॉडल कोई प्रकाश नहीं डालता।
- यह पाठ्यचर्या परिणामों को अनदेखा करता है।
- यह उद्देश्य केन्द्रित न होकर प्रक्रिया आधारित मॉडल है।

www.studyoeducation.com

स्क्रीवेन का मॉडल

स्क्रीवेन द्वारा वर्ष 1973 में इसका प्रतिपादन किया गया था। स्क्रीवेन का मॉडल उद्देश्य मुक्त अवधारणा पर आधारित है। इस मॉडल के अनुसार पाठ्यचर्या मूल्यांकन को उसके उद्देश्यों या परिणामों से मुक्त होकर सम्पादित करना चाहिए। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के सन्दर्भ में उसके परिणामों के सम्बन्ध में स्क्रीवेन का कथन है कि "लक्ष्य केवल प्रत्याशित प्रभावों का उप-समुच्चय है।"

स्क्रीवेन ने इन प्रभावों को दो वर्गों में विभाजित किया है-प्रयोजनात्मक प्रभाव तथा गैर-प्रयोजनात्मक प्रभाव। स्क्रीवेन के अनुसार, पाठ्यचर्या अधिगम विकास तथा मूल्यांकन में ये दोनों प्रभाव और इनसे उत्पन्न परिणाम उसकी उत्पादक सामग्री से मुक्त होते हैं। स्क्रीवेन ने पाठ्यचर्या मूल्यांकन की दो प्रमुख अवधारणाओं को स्वीकार किया है। ये दोनों अवधारणाएँ निम्नलिखित है

रचनात्मक मूल्यांकन

रचनात्मक मूल्यांकन पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया के दौरान किया जाता है, जबकि योगात्मक मूल्यांकन का सम्बन्ध पाठ्यचर्या मूल्यांकन प्रक्रिया के अन्तिम परिणामों से है। रचनात्मक मूल्यांकन अवस्था, पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया के दौरान उसके स्वरुप में बदलाव करने में सहायता करती है। यह मूल्यांकन प्रक्रिया की प्रारम्भिक अवस्था होती है। पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया के दौरान कार्यक्रमों के घटकों में परिवर्तन तथा इसके सिद्धान्तों के अवयवों में परिवर्तन के लिए रचनात्मक मूल्यांकन एक सशक्त माध्यम परिणाम प्रस्तुत करता है।

www.studyofeducation.com

योगात्मक मूल्यांकन

योगात्मक मूल्यांकन का सम्बन्ध पाठ्यचर्या मूल्यांकन की अन्तिम अवस्था से है। यह मूल्यांकन, मूल्यांकन प्रक्रिया के गुणों-अवगुणों को स्पष्ट करता है। पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन प्रभावी रुप से हुआ है अथवा नहीं, इस प्रश्न पर भी योगात्मक मूल्यांकन विचार करता है।

योगात्मक मूल्यांकन के अन्तर्गत समग्र रुप से इस तथ्य पर विचार किया जाता है कि पाठ्यचर्या सामग्री का विकास और उसका क्रियात्मक सम्प्रेषण, प्रभावी रुप से हुआ है अथवा नहीं। अपने लक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए यह मॉडल अपने घटकों का प्रयोग स्वतन्त्र रुप से करता है। इसे संकलनात्मक मूल्यांकन भी कहा जाता है।

स्क्रीवेन के मॉडल के अनुसार पाठ्यचर्या मूल्यांकन निम्नलिखित आधारों पर किया जाता है

- वैधता
- विश्वसनीयता
- वस्तुनिष्ठता
- महत्त्व

- सामयिकता
- प्रासंगिकता
- व्यापकता
- दक्षता

किर्कपैट्रिक का मॉडल

किर्कपैट्रिक द्वारा इस मॉडल का प्रतिपादन वर्ष 1994 में किया गया था। यह मॉडल पाठ्यचर्या मूल्यांकन के सम्बन्ध में चार विभिन्न अवस्थाओं की स्थापना करता है, प्रत्येक उत्तरवर्ती अवस्था अपनी पूर्ववर्ती अवस्था द्वारा प्रदान की गई सूचनाओं के द्वारा संचालित होती है। इस मॉडल के अनुसार मूल्यांकन प्रक्रिया की शुरुवात निचले स्तर से होती है तथा उत्तरोत्तर विकास प्रक्रिया द्वारा यह अन्तिम अवस्था तक पहुँच जाती है। किर्कपैट्रिक द्वारा प्रतिपादित चार अवस्थाएँ निम्नलिखित है

प्रतिक्रिया

मूल्यांकन की इस अवस्था में यह गणना की जाती है कि छात्र पाठ्यचर्या विकास कार्यक्रमों के दौरान किस प्रकार की प्रतिक्रिया प्रदर्शित करता है। छात्रों की प्रतिक्रिया इस तथ्य पर निर्भर करती है कि पाठ्यचर्या सामग्री का प्रारुप कैसा है? क्या पाठ्यचर्या सामग्री, शिक्षण कार्य में प्रासंगिक है अथवा नहीं। मूल्यांकन की इस अवस्था को 'स्माइलशीट' (Smile Sheet) भी कहा गया है। किर्कपैट्रिक के अनुसार, प्रत्येक पाठ्यचर्या प्रोग्राम का मूल्यांकन इस अवस्था में आवश्यक रुप में करना चाहिए।

अधिगम

पाठ्यचर्या सामग्री के सन्दर्भ में यह अवस्था छात्रों के समाधान और सन्तोष सम्बन्धित है। इस अवस्था का महत्त्व इसलिए है कि यह अवस्था छात्रों के लि. केवल पूर्वनिर्धारित पाठ्यसामग्री के उद्देश्यों की प्राप्ति तक ही सीमित नहीं कर बल्कि यह उन छात्रों में कौशल, ज्ञान और अभिवृत्ति निर्माण की मांग भी करती है।

अन्तरण

इस अवस्था में पाठ्यचर्या द्वारा छात्रों के व्यवहार में हुए परिवर्तन को देखा जाता है। पूर्वावस्था में प्राप्त ज्ञान, कौशल, अभिवृत्ति आदि के द्वारा छात्र किस सीमा तक पाठ्यचर्या उद्देश्यों की प्राप्ति करने में सहायक बने हैं, इस प्रकाशन पर भी यह अवस्था विचार करती है। वस्तुतः यह अवस्था छात्रों द्वारा प्राप्त किए अभिकौशलो के व्यावहारिक रुप में प्राप्ति की अवस्था है।

परिणाम

यह अवस्था उद्देश्यों को केन्द्र में रखकर पाठ्यचर्या विकास कार्यक्रमों का मूल्यांकन करती है। यह अवस्था पाठ्यचर्या मूल्यांकन को गुणवत्ता सुधार परिमाणात्मक अभिवृद्धि, उच्च लाभ, उच्च उत्पादकता आदि सन्दर्भो में ग्रहण करती में है। इस अवस्था का सम्बन्ध पाठ्य विकास कार्यक्रमों में किए गए निवेश से प्राप्त वांछनीय उद्देश्यों की प्राप्ति से है।

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या में परिवर्तन

पाठ्यचर्या परिवर्तन का अर्थ

पाठ्यचर्या परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। दिन-प्रतिदिन होने वाले सामाजिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, पारिवारिक एवं आर्थिक परिवर्तनों के कारण पाठ्यक्रम में भी परिवर्तन करना आवश्यक माना जाता है। पाठ्यचर्या को एक दिशा एवं साधन माना जाता है। इसके माध्यम से कक्षा की समस्त क्रियाएँ, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ तथा मूल्यांकन की समस्त प्रक्रिया पाठ्यचर्या के परिणामस्वरुप ही नियोजित की जाती हैं। यह केवल विद्यालय शिक्षण विषयों तक ही सीमित नहीं होती है, बल्कि विद्यालय में नियोजित एवं सम्पादित सभी क्रियाओं को भी इसमें सम्मिलित करती है। पाठ्यचर्या निर्माण की क्रिया एक बार सम्पन्न होने के बाद समाप्त नहीं होती है, क्योंकि इसमें निरन्तर परिवर्तन करना आवश्यक माना जाता है। इस प्रकार पाठ्यचर्या निर्माण एक निरन्तर चलने वाली क्रिया है।

पाठ्यक्रम परिवर्तन का स्वरुप चक्रीय होता है। इसका तात्पर्य है कि इसका अन्त नहीं होता है, बल्कि ये निरन्तर चलती रहती है। पाठ्यक्रम के निर्माण के बाद इसे लागू करने पर ही छात्रों के मूल्यांकन तथा परीक्षण से ज्ञात होता है कि किस प्रकार के सुधार की आवश्यकता है।

इस सोपान की क्रियाओं को प्रमुख रुप से दो प्रकार की परिस्थितियों में विभाजित किया जाता है

1. आन्तरिक परिस्थितियाँ आन्तरिक परिस्थिति का सम्बन्ध उन सभी घटकों तथा क्रियाओं से होता है, जिनका प्रयोग पाठ्यक्रम निर्माण में किया जाता है। इस सोपान में आन्तरिक परिस्थितियों के विश्लेषण में शिक्षक, छात्र, विद्यालय या कक्षा का वातावरण, प्राचार्य की भूमिका, विद्यालय भवन एवं पाठ्य सहगामी क्रिया के लिए साधन उपलब्धता को ध्यान में रखा जाता है।
2. बाह्य परिस्थितियाँ बाह्य परिस्थितियों के अन्तर्गत सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सत्ता परिवर्तन को ध्यान में रखा जाता है।

आन्तरिक परिस्थितियों के विश्लेषण से पाठ्यचर्या सुधार के लिए दिशा मिलती है, जबकि बाह्य परिस्थितियों के विश्लेषण से विकास एवं नए पाठ्यक्रम को आरम्भ करने में दिशा प्राप्त होती है।

पाठ्यचर्या मानसिक योग्यताओं, कौशलों, अभिवृत्तियों, अभिरुचियो तथा मूल्यों विकास का साधन है। प्रत्येक पाठ्यवस्तु का अपना स्वरुप होता है, जिसे विषयवस्तु कहा जाता है। परिस्थितियों के अनुकूल इसमें भी परिवर्तन होते रहते हैं। किसी भी शैक्षणिक

www.studyofeducation.com

कार्यक्रम की प्रभावशीलता इस बात से ज्ञात की जाती है कि उद्देश्यो की प्राप्ति किस सीमा तक प्राप्त हुई है। इस कार्य के लिए उपयुक्त मूल्यांकन विधियों का प्रयोग किया जाता है।

मूल्यांकन का उद्देश्य शैक्षिक प्रयासों के फलस्वरुप व्यवहार में आए परिवर्तन की प्रकृति, दिशा तथा सीमा सम्बन्धी प्रमाण प्रस्तुत करना है। इस प्रमाण का प्रयोग पाठ्यचर्या प्रक्रिया के किसी पक्ष को सुधारने में किया जा सकता है। पाठ्यचर्या में सुधार की प्रक्रिया ही परिवर्तन कहलाती है। पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया को सुधारने के उद्देश्य से जो मूल्यांकन किया जाता है, उसे रचनात्मक या निर्माणात्मक मूल्यांकन कहते हैं।

पाठ्यचर्या परिवर्तन के प्रकार

पाठ्यक्रम में किए जाने वाले परिवर्तन पर विचार करने हेतु विशेषज्ञों को यह विचार करना चाहिए कि उन्हें पाठ्यक्रम में किस प्रकार के परिवर्तन करने चाहिए। जिस प्रकार का परिवर्तन होता है उससे यह प्रमाणित होता है कि हितधारक किस प्रकार की प्रतिक्रिया दे सकते हैं। अनेक प्रकार के बदलावों में विभिन्न विशेषज्ञों के शामिल होने की शक्ति का व्यापक प्रभाव पड़ता है। बेनिस के अनुसार, किसी भी पाठ्यक्रम में परिवर्तन तीन प्रकार से किया जा सकता है |

नियोजित परिवर्तन

यह परिवर्तन एक सुनियोजित योजना पर आधारित होता है। इस प्रकार के परिवर्तन में एक विशेषज्ञ समूहों द्वारा जिनके पास परिवर्तन करने की शक्ति प्राप्त होती है, व्यापक विमर्श किया जाता है तथा विद्यमान वस्तुस्थिति या परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जाता है। इस प्रकार के परिवर्तन में सभी विशेषज्ञ लोगों की आवश्यकताओं को समझते हैं, साथ ही योजनाकारों को यह पूर्ण ज्ञात होता है कि पाठ्यचर्या में गुणात्मक सुधार हेतु किस प्रकार के परिवर्तन किए जाएँ। इस प्रकार के परिवर्तन के लिए सर्वप्रथम परिवर्तन सम्बन्धी रुपरेखा तैयार की जाती है। तत्पश्चात् व्यापक समीक्षा एवं मूल्यांकन के बाद ही पाठ्यक्रम में व्यापक परिवर्तन किया जाता है। नियोजन परिवर्तन मुख्यतः समझौते पर आधारित नीतियाँ होती हैं। कभी-कभी सरकार के द्वारा ऐसी समितियाँ गठित की जाती हैं, जो पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन सम्बन्धित सुझाव प्रस्तुत करती हैं। ऐसा माना जाता है कि यह सुझाव का सबसे पसन्दीदा प्रकार है। इसमें विशेषज्ञ सदस्य अपने विचार रखते हैं और व्यापक विचार-विमर्श कर पाठ्यक्रम में, समकालीन स्थिति के अनुसार परिवर्तन करते हैं। -

सहभागिता परिवर्तन

इस परिवर्तन में सभी लोगों की संयुक्त भागीदारी से परिवर्तन किया जाता है। इस दृष्टिकोण में उन सभी के मध्य समान मात्रा में शक्ति सम्मिलित होती है, जिनकी परिवर्तन के प्रति विशेष रुचि होती है, परन्तु संचार एवं निष्पादन की समस्या बनी रहती है। क्रियान्वयन के लिए प्रक्रिया के सन्दर्भ में व्यापक रुप से सोचना या विचार करना एक बाधा उत्पन्न करती है। अतः विचार को विकसित नहीं किया जा सकता। इस प्रकार की समस्या उन लोगों की ओर है, जो परिवर्तन के प्रति इच्छुक तो हैं, परन्तु अनिश्चितता

www.studyofeducation.com

से ग्रसित भी हैं। पाठ्यक्रमों का पालन करने की उम्मीद या व्यापक विचार-विमर्श के द्वारा किया गया परिवर्तन दुर्भाग्यवश शिक्षा में एक अत्यन्त सामान्य प्रकार का परिवर्तन है। अकसर सरकारें या प्रशासनिक अधिकारी एक पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन करते हैं।

तत्पश्चात् अध्यापक शिक्षण के दौरान इन पाठ्यक्रमों का अनुसरण करते हैं कहा जाता है कि इनपुट के बिना विफलता एक उच्च जोखिम के समान । क्योंकि लोगों को प्रेरित होने के लिए स्वामित्व (Ownership) आवश्यकता होती है।सहभागिता परिवर्तन में आपसी मतभेद की भावना नीरसता को उत्पन्न करती है। सफलता हेतु परिवर्तन में शिक्षकों से प्रतिबद्धता के साथ-साथ उम्मीदों का स्पष्ट संचार भी शामिल सत्ता साझा करने स्पष्ट दिशा प्रदान करने से इन सामान्य बाधाओं को बदलने से राकन सहायता मिल सकती है।

बलपूर्वक परिवर्तन

इस प्रकार गैर-राजनीतिक पाठ्यक्रम में किया जाने वाला परिवर्तन, बलपूर्वक परिवर्तन का परिणाम बताया जाता है। इस प्रकार के परिवर्तन से शक्ति का गम्भीर असन्तुलन उत्पन्न होता है। इस प्रकार के परिवर्तन में एक समूह लक्ष्यों को निर्धारित करता है और उसी शक्ति निहित होती है। इसके अतिरिक्त अन्य सभी समूहों को बाहर रखा जाता है। परिवर्तन को अलोकतान्त्रिक परिवर्तन कहा जाता है। इस शक्तिहीन समूहों के हित को अनदेखा किया जाता है। बलपूर्वक परिवर्तन में पाठ्यक्रम को गुणात्मकता पर नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है तथा स्वहित के भावना से अभिभूत होता है। ऐसे परिवर्तन, विशेष समुदाय वर्ग, दल या संगठन के प्रभाव में भी किए जा सकते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन अनैच्छिक एवं अस्थायी भी हो सकते हैं।

पाठ्यक्रम में परिवर्तन की प्रक्रिया

इवेल के अनुसार, पाठ्यक्रम में परिवर्तन विशिष्ट परिस्थितियों में एकल रणनीति के अन्तर्गत बिना सघन समझ के छोटे स्तरों पर तथ्यात्मक रुप में, वास्तविक अधिगम के अनुसार किया जाता है। **लाचीवर और टारडिफ** के अनुसार, पाठ्यक्रम में परिवर्तन पाँच स्तरीय तार्किक प्रक्रिया के अन्तर्गत किया जाता है एवं सन्दर्भों का विश्लेषण करके।

1. वर्तमान प्रस्ताव प्रकटीकरण करके।
2. महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के लक्ष्यों का
3. संसाधनों की प्रमुखता एवं रणनीतियों को विकसित करके।
4. निर्धारित पाठ्यक्रम परिवर्तन को लागू करके।
5. जाँच पड़ताल प्रक्रिया यन्त्र एवं प्रक्रिया को स्थापित करके।

पाठ्यक्रम में परिवर्तन का मुख्य उद्देश्य परिस्थितियों के अनुरूप पाठ्यक्रम की रूपरेखा क्रियान्वित करना है, ताकि छात्रों को परिस्थितियों के अनुरुप विषय से अवगत कराया जा सके। पाठ्यक्रम में परिवर्तन छात्रों के रचनात्मक विकास को प्रोत्साहित करता है।

www.studyofeducation.com

पाठ्यक्रम परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक

पाठ्यक्रम परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं

प्रभावपूर्ण एवं स्पष्टवादी व्यक्तित्व
वित्तीय दबाव सहित संसाधनों की उपलब्धता
कर्मचारियों की उपलब्धता एवं कार्य का बोझ
विद्यार्थियों का वर्तमान एवं दूरदर्शी दृष्टिकोण
विद्यार्थियों की सक्षमता एवं सीमाएँ तथा अन्तर्ग्रहण विचार
बालशिक्षाशास्त्र पर विचार-विमर्श एवं शैक्षणिक योग्यता
विश्वविद्यालय एवं सरकार की आवश्यकता तथा नियमन
पेशेवर आधिकारिक मान्यता की आवश्यकता एवं सिलेबस को पेशेवर संस्थान द्वारा निर्मित करना
शैक्षणिक फैशन सहित इच्छा के अनुरुप संस्थानों को स्थापित करना

प्रचलित पारम्परिक शिक्षा स्थान पर अभिनूतन शिक्षा प्रणाली को लागू करने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम में परिवर्तन किया जाता है। प्रभावपूर्ण एवं स्पष्टवादी व्यक्तित्व पाठ्यक्रम परिवर्तन को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक माना जाता है। स्पष्टवादी दृष्टिकोण से पाठ्यक्रम को अधिक रचनात्मक बनाया जा सकता है। प्रभावपूर्ण एवं स्पष्टवादी व्यक्तित्व के धनी वर्ग की सोच अधिक गहरी होती है, वे एक ऐसे पाठ्यकम का निर्माण करना चाहते हैं जो सहज, सरल एवं सामान्य हो जिसे सरलता से समझा जा सके। अत: ऐसे लोग अपनी रचनात्मक सोच एवं समझ से एक प्रगतिशील पाठ्यक्रम का निर्माण, वित्तीय दबाव सहित संसाधनों की उपलब्धता भी पाठ्यक्रम परिवर्तन को प्रभावित करके करते हैं। वित्तीय मजबूती निर्णय क्षमता को सुक बनाता है, जो शैक्षणिक प्रणाली को प्रभावित करता है। उच्च स्तरीय शिक्षा ग्रहण करना उन्हीं के लिए सम्भव है जो आर्थिक दृष्टिकोण से मजबूत होते है।
व्यवस्था के

विद्यालय या विश्वविद्यालयों में उपलब्ध संसाधन शिक्षा ग्रहण क्षमता को प्रभावित करते हैं। विश्वविद्यालय में विद्यमान विभागों की उपलब्धता जो एक प्रकार से संसाधन की श्रेणी में आता है, पाठ्यक्रम प्रणाली को प्रभावित करता है। इसी प्रकार विद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में विद्यमान कर्मचारियों की उपलब्धता एवं कार्य का बोझ भी पाठ्यक्रम को प्रभावित करता है। विद्यार्थियों का वर्तमान एवं दूरदर्शी दृष्टिकोण तथा विद्यार्थियों की सक्षमता एवं सीमाएँ तथा अन्तर्ग्रहण विचार भी पाठ्यक्रम परिवर्तन को प्रभावित करते हैं। पाठ्यक्रम का स्वरुप उसी प्रकार रेखांकित किया जाता है, जो विद्यार्थियों में अधिगम के प्रति अभिरुचि उत्पन्न कर सके।

www.studyofeducation.com

पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय विद्यार्थियों के वर्तमान एवं दूरदर्शी दृष्टिकोण का ध्यान रखना अनिवार्य है। विश्वविद्यालय एवं सरकार की नीतियाँ भी पाठ्यक्रम परिवर्तन को प्रभावित करती हैं। सरकार समय-समय पर पाठ्यक्रम में परिवर्तन करने के उद्देश्य से आयोग एवं समितियों को गठित करती है। वर्ष 1948 में गठित विश्वविद्यालय आयोग, 1963-64 में गठित कोठारी आयोग, माध्यमिक शिक्षा में • सुधार हेतु मुदालियर आयोग का गठन किया गया। इसके अतिरिक्त उच्च शिक्षा में सुधार करने हेतु यशपाल समिति का गठन किया गया।

इसके अतिरिक्त विविध वर्षों में शिक्षा नीति घोषित की गई। इन आयोगों द्वारा दिए गए सुझावों के आधार पर भारत में शिक्षा प्रणाली को विकसित किया गया। शिक्षा को व्यावहारिक एवं पेशेवर बनाने के उद्देश्य से भी समय-समय पर अनेक सिफारिशें की गईं। इसी के बदले में पाठ्यक्रम में भी व्यापक परिवर्तन किए गए, ताकि शिक्षा को अधिक व्यावहारिक एवं पेशेवर बनाया जा सके। पाठ्यक्रम की परिवर्तनशीलता में सामाजिक मान्यताओं, राजनीतिक प्रभाव, आर्थिक स्थिति, समसामयिक घटनाओं, चरित्र-व्यक्तित्व, सांस्कृतिक प्रभाव एवं वैश्विक नीतियों का भी विशेष प्रभाव पड़ता है। पाठ्यक्रम में उन्हीं विषयों या परिघटनाओं को शामिल किया जाता है, जो वर्तमान समय में राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर घटित होती हैं। इसलिए पाठ्यक्रम को गतिशील माना जाता है, जो समय के साथ सदैव बदलता रहता है।

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या परिवर्तन के उपागम (Approaches to Curriculum Change)

पाठ्यचर्या परिवर्तन उपागम पाठ्यचर्या के व्यापक अध्ययन करने की एक विधि है। इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम की एक्यूरेसी की जाँच की जाती है, डिजाइन को क्रियान्वित किया जाता है एवं विचार प्रक्रिया के बारे में अध्ययन किया जाता है। पाठ्यक्रम को लागू करने और लागू करने के मूल्यांकन में पाठ्यक्रम प्रशिक्षक को एक से अधिक दृष्टिकोण का प्रयोग करना होता है। पाठ्यक्रम को किसी भी शैक्षणिक संस्था का हृदय माना जाता है, जिसका सामान्य अर्थ यह है कि स्कूल या विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम के बिना संचालित नहीं हो सकता है। औपचारिक शिक्षा में इसक महत्त्व के साथ हमारे समाज में होने वाले परिवर्तन के कारण पाठयक्रम एक गतिशील प्रक्रिया बन गई है। योजना, क्रियान्वयन एवं पायांकन का पाठ्यक्रम उपागम में विशेष रुप से उपयोग किया जाता है।

टैक्स्टबक लेखक या निर्देशात्मक विषय निर्माता विविध प्रकार के पाठ्यक्रम उपागम का उपयोग करते है। उपागम के माध्यम से पादयचर्या में अभिरुचि एवं परिस्थितियों के अनुरुप संशोधन किया जाता है। परियम और वेबस्टर के अनुसार, उपागम कुछ करने, सोचने एवं फाओं के निर्वहन का माध्यम है। इसके माध्यम से सुधार एवं परिवर्तन करना माल हो जाता है।

पाठ्यक्रम परिवर्तन उपागमों को चार भागों में विभाजित किया जाता है

1. व्यवहारजन्य उपागम (Behavioural Approach) व्यवहारवादी सिद्धान्तों के नियम पर आधारित है, जो लक्ष्य एवं उद्देश्य पर विशेष बल देता है। इस उपागम के अन्तर्गत अधिगम उद्देश्यों के साथ विषयवस्तु एवं विभिन्न गतिविधियों को भी शामिल किया जाता है। उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की शर्तों के साथ परिणाम आधारित अधिगम का मूल्यांकन किया जाता है। इसके माध्यम से लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु सक्षमता को बढ़ाया जाता है। **फ्रेडरिक टेलर** के अनुसार, प्रस्ताव करने वाला भी व्यवहारजन्य उपागम का भाग होता है। शिक्षा में व्यवहारजन्य उपागम शैक्षणिक नियोजन के साथ प्रारम्भ होता है, जो उद्देश्य एवं लक्ष्यों को निर्धारित करता है। पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि व्यवहार में परिवर्तन परिणाम आधारित अधिगम के मूल्यांकन के अनुसार हो।

2. प्रबन्धकीय उपागम (Managerial Approach) 1950 एवं 1960 के दशक में काफी प्रचलित हुआ। इस उपागम में प्रधानाचार्य पाठ्यक्रम, निर्देशात्मक प्रमुख एवं जनरल मैनेजर की भूमिका में होता है। जनरल मैनेजर की भूमिका में वह प्रमुखता एवं नीतियों को स्थापित करता है, परिवर्तन एवं नवाचार के निर्देशन हेतु नीतियाँ बनाता है, साथ ही निर्देशन एवं पाठ्यचर्या की योजना भी बनाता है एवं उन्हें संगठित करता है। स्कूल प्रशासन विषय-वस्तु के सन्दर्भ में क्रियान्वयन एवं संगठन पर विशेष ध्यान देता है, साथ ही पाठ्यक्रम में व्यापक सुधार के आवश्यक कार्य करता है। पाठ्यक्रम मैनेजर नियमित रुप से पाठ्यक्रम में होने वाले परिवर्तन तथा नवाचार का अवलोकन करते हैं। इसके अतिरिक्त मैनेजर स्कूल के संसाधनों का प्रयोग विद्यालय के पुनर्निर्माण में करते हैं।

ओमस्टीन एवं **हॉकिन्स** ने पाठ्यचर्या निरीक्षण की भूमिका को बताते हुए कहा कि पाठ्यचर्या निरीक्षक स्कूल के शैक्षणिक लक्ष्यों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, साथ ही विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कभी-कभी अन्य शिक्षक एवं माता-पिता एवं अन्य स्टोक होल्डर्स भी इसमें मुख्य भूमिका निभाते हैं। निरीक्षक ग्रेड लेवल द्वारा डिजाइन कार्यक्रम का अध्ययन स्कूल कैलेण्डर व कक्षा योजना को क्रियान्वित किया जाता है। पाठ्यक्रम निरीक्षक विषय क्षेत्र, ग्रेड लेवल, अध्यापकों के लिए निर्देशन एवं पाठ्यक्रम का निर्देशन करता है। टैक्स्टबुक के चयन एवं मूल्यांकन में भी निरीक्षक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम निरीक्षक अध्यापकों का निरीक्षण, पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में अध्यापकों की सहायता, नवाचार एवं परिवर्तन के प्रति पाठ्यक्रम को प्रोत्साहित तथा निर्देशात्मक मूल्यांकन एवं पाठ्यक्रम के लिए मानक इत्यादि विकसित करता है।

के आकलन द्वारा

3. प्रणाली उपागम (System Approach) प्रणाली सिद्धान्त द्वारा प्रभावित होता है। इस उपागम में जिले के सभी विद्यालयों को शामिल कर यह ज्ञात किया जाता है कि ये सभी आपस में किस प्रकार समन्वय स्थापित करते हैं। इस उपागम द्वारा संगठनात्मक चार्ट प्रस्तुत किया जाता है, जो प्रणाली उपागम को प्रस्तुत करता है। लाइन स्टाफ के व्यक्तिगत सम्बन्धों को दर्शाता है तथा यह दिखाया जाता है कि निर्णय कैसे लिया गया।

www.studyaeducation.com

जॉर्ज बीयूचैम्प के अनुसार, शिक्षा के प्रणाली उपागम में निम्नलिखित तत्त्व शामिल है, जिनका समान महत्त्व है

- प्रशासन
- पाठ्यक्रम
- निर्देशात्मक
- मूल्यांकन
- काउंसिलिंग

4. मानववादी उपागम (Humanistic Approach) पाठ्यक्रम परिवर्तन उपागमों में मानववादी उपागम महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इसके अनुसार पाठ्यक्रम परिवर्तन उपागम प्रगतिशील दार्शनिक को जड़े हैं। यह उपागम बालक केन्द्रित गतिविधियों पर आधारित है। इसके अन्तर्गत औपचारिक या नियोजित पाठ्यक्रम पर विचार किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें अनौपचारिक एवं गुप्त पाठ्यक्रमों का भी अध्ययन किया जाता है। इस उपागम में सभी बालकों को शामिल किया जाता है एवं विश्वास किया जाता है कि पाठ्यक्रम में, वैयक्तिक का कुल विकास मुख्य विचारों पर निर्भर करता है। मानववादी उपागम के अनुसार अधिगमकर्ता पाठ्यक्रम का मुख्य केन्द्र होता है।

विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा शैक्षणिक प्रशासकों की भूमिका

पाठ्यचर्या परिवर्तन तथा परिष्कार में विद्यार्थियों, अध्यापकों तथा शैक्षणिक प्रशासकों की भूमिका निम्न प्रकार है

विद्यार्थियों की भूमिका

पाठ्यचर्या परिवर्तन तथा परिष्कार में विद्यार्थियों की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण होती है। छात्र म्मेदारी तब सिद्ध होती है जब छात्र अपनी शैक्षणिक सफलता के लिए जवाबदेह होते हैं तथा परिस्थितियों की पहचान कर अपनी शिक्षा में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। विद्यार्थी अपनी जिम्मेदारी का प्रदर्शन उस समय करते हैं जब वे विकल्प निर्मित करते हैं तथा कार्यवाही करते हैं जो उन्हें अपने शैक्षिक लक्ष्यों की ओर ले जाता है। छात्रों को अपने स्वयं से सीखने की सफलता में योगदान करने का विश्वास किया जाता है। एक छात्र का कर्तव्य है कि वह नियमित रुप से सीखने हेतु अवसरों में भाग ले। साथ ही उसकी सीख के लिए बढ़ती जिम्मेदारियों को स्वीकार करे।

एक छात्र अधिगमकर्ता की भूमिका निभाता है, जो अधिगम सम्बन्धित गतिविधियों में निरन्तर क्रियाशील रहता है। अधिगमकर्ता के रुप में छात्र अपनी गतिविधियों के दायरे को संवाद एवं अन्तर्सम्बन्धों के माध्यम से दिन-प्रतिदिन मौखिक प्रस्तुतीकरण, विचार-विमर्श, विशेष भूमिका एवं प्रायोगिक शोध अनुसन्धान अधिगम क्रिया द्वारा परिमार्जित करता है। अधिगमकर्ता लिखित रुप से अपने कार्यों का आकलन करता है एवं कला सम्बन्धित कार्य, प्रतिवेदन एवं प्रोजेक्ट का निर्माण करता है। छात्रों की ये गतिविधियाँ

www.studyofeducation.com

पाठ्यक्रम परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। छात्र अपने ज्ञान, समझ, कुशलता एवं सक्षमता का प्रदर्शन करते हैं, साथ ही ये अपने स्वयं के आकलन द्वारा अपने अधिगम का मूल्यांकन करते हैं इस मूल्यांकन से पाठ्यक्रम में परिवर्तन को बल मिलता है|

छात्रों को पाठ्यक्रम का विशेष 'क्लाइण्ट' माना जाता है। पाठ्यक्रम के द्वारा गत प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित होते हैं, इसलिए यह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम निर्माण एवं क्रियान्वयन में छात्र गतिविधियों को भी शामिल किया जाए।

- पाठ्यक्रम परिवर्तन में छात्रों की भूमिका को स्वीकार करना चाहिए।
- नवाचार के लिए उन्हें स्वयं को तैयार करना चाहिए।
- पेशेवर विकास के लिए परिवर्तन का उपयोग करना चाहिए।

पाठ्यक्रमों का अनुसरण छात्रों को ही करना पड़ता है, इसलिए यह अनिवार्य है, कि पाठ्यक्रमों के विकास एवं क्रियान्वयन में छात्रों की गतिविधियों को शामिल किया जाए।

www.studyofeducation.com

अध्यापक की भूमिका

एक शिक्षक को पाठ्यक्रम का हृदय माना जाता है। शिक्षक व्यापक पैमाने पर अपने वास्तविक अधिगम अनुभवों के साथ कक्षा एवं खेल के मैदान में जाता है। शिक्षक की भूमिका पाठ्यक्रम निर्माण में महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। वह प्रतिदिन अध्याय योजना (लेसन प्लान), यूनिट योजना एवं वार्षिक योजना के आधार पर पाठ्यक्रम का फ्रेमवर्क (रूपरेखा) तैयार करता है। इसी के अनुसार का पाठ्यक्रम में हर सम्भव परिवर्तन करता है। शिक्षक अपने सृजनात्मक अनुभव के माध्यम से अधिगमकर्ता के लक्ष्यों, आवश्यकताओं एवं इच्छा को प्रकट करता है, ताकि विद्यार्थी शिक्षक के अनुभव से सीख सकें। शिक्षक पाठ्यक्रम के निर्माण एवं परिवर्तन के माध्यम इसमें गुणात्मक सुधार करता है। वह पाठ्यक्रम को संशोधित करता है, उसका नवीन डिजाइन क्रियान्वित करता है, पाठ्यक्रम को क्रियाशील बनाता है, ताकि अधिगमकर्ता के गुणों को विकसित किया जा सके। शिक्षक टैक्स्टबुक कमेटी का सदस्य होता है, जिसकी भूमिका रचनात्मक होती है। इसके अतिरिक्त वह विषय चयन बोर्ड, स्कूल मूल्यांकन समिति का भी सदस्य होता है। वह स्वयं भी किताब लेखन में भाग लेता है। शिक्षक को स्कूल पाठ्यक्रम का शिल्पकार कहा जाता है। शिक्षक अपने सहपाठियों के साथ अपने अनुभवों को साझा करता है तथा छात्रों के अनुभवों की प्रतिपुष्टि प्राप्त करता है। शिक्षक पाठ्यक्रमों के निर्माण एवं उसमें परिवर्तन सम्बन्धित कार्यों को संगठनात्मक एवं समन्वयकारी तरीके से पूर्ण करता है।

शैक्षणिक प्रशासकों की भूमिका

पाठ्यक्रमों के निर्माण, परिवर्तन एवं सुधार में शैक्षणिक प्रशासकों (Educational Administrators) की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण होती है। शैक्षणिक प्रशासक यह सुनिश्चित करता है कि शैक्षणिक नीतियों एवं लक्ष्यों को इस प्रकार निर्धारित किया जाए ताकि पाठ्यक्रम छात्रों के प्रति अभिरुचिपूर्ण हो। पाठ्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन के माध्यम से शैक्षणिक प्रशासक इसके लक्ष्यों को सरल बनाने में प्रासंगिक भूमिका निभाता है। प्रशासनिक अधिकारी विभिन्न स्तरों पर विभिन्न कार्यक्रमों के तहत निर्धारित प्रमुखताओं

को क्रियान्वित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शैक्षणिक निरीक्षक पाठ्यक्रम विकास में क्रियाशील भूमिका निभाता है। पाठ्यक्रम क्रियान्वयन में वह गाइडलाइन्स करता है, पाठ्यक्रम का विशेष मूल्यांकन करता है एवं पाठ्यक्रम में हर सम्भव सुधार करता है।

शैक्षणिक प्रशासक यदि विषय विशेषज्ञ है तो वह पाठ्यक्रम सुनिश्चित करने में, सिलेबस का फ्रेम तैयार करने में एवं टैक्स्टबुक तथा हैण्डबुक लिखने में भी भूमिका निभाता है। शैक्षणिक प्रशासक की भूमिका बहुआयामी एवं रचनात्मक होती है। दिन-प्रतिदिन वह गतिविधियों के आधार पर पाठ्यक्रम में सुधार हेतु आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करता है। शैक्षणिक प्रशासक स्कूल के पाठ्यक्रम में एक आकार प्रदान करता है, क्योंकि ये ऐसे लोग हैं जो स्कूलों के दृष्टिकोणा, दर्शन, मिशन और उद्देश्यों के निर्माण में जिम्मेदार हैं। वे शिक्षण कर्मियों एवं स्कूल कार्यक्रम के मूल्यांकन में हर सम्भव आवश्यक नेतृत्व करते हैं। इस प्रकार पाठ्यकम परिवर्तन एवं परिष्कार में छात्र, शिक्षक एवं शैक्षणिक प्रशासक की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। इन तीनों को शामिल कर स्कूल विश्वविद्यालय के लिए समय, गुणवत्तापूर्ण एवं अभिनूतन पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा सकता है।

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या शोध का विषय क्षेत्र (Scope of Curriculum Research)

पाठ्यचर्या शोध का विषय क्षेत्र पाठ्यक्रम के विस्तृत दायरे को प्रस्तुत करता है, जिसमें सामग्री और कौशल को समाहित किया जाता है। एक शिक्षक को यह आशा होती है कि उनके निर्देशन को भी इसमें शामिल किया जाए। इस प्रकार से पाठ्यक्रम का विषय क्षेत्र एवं परिणाम एक शिक्षक को उपयुक्त अधिगम के लिए ब्लूप्रिण्ट प्रदान करता है। पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों के व्यवहार को परिवर्तन करने वाला बताया जाता है। ऐसे पाठ्यक्रम स्कूल एवं छात्रों के व्यवहार के अनुरुप बनाए जाते हैं। वर्ष 1963 में गेज ने इस सन्दर्भ में कहा कि पाठ्यचर्या शोध का विषय क्षेत्र का उद्देश्य गतिविधियों को समझने, भविष्यवाणी करने और घटनाओं को एकत्रित एवं नियन्त्रित करने की क्षमता को बढ़ाना है। किसी पाठ्यचर्या अभिकल्प में एक संगठनात्मक आयाम होता है, जो यह बताता है कि किस सामग्री या कौशलता को कक्षा में पढ़ाया जाना चाहिए और कैसे उन्हें समय-समय पर निर्देशात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

पाठ्यचर्या शोध एक कठिन प्रक्रिया है, क्योंकि पाठ्यचर्या शिक्षा सम्बन्धित प्रत्येक क्षेत्र को महत्त्वपूर्ण मानता है, परन्तु कुछ विशेष क्षेत्र विशिष्ट होते हैं, जिसका विशेष महत्त्व है। पाठ्यचर्या के चार ऐसे प्रमुख क्षेत्र हैं, जिनमें शोध किया जाता है। इसके माध्यम से शिक्षक एक क्रियाशील अभिकर्ता बन जाता है। तत्पश्चात् शिक्षक विशिष्ट समस्याओं के समाधान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में विविध समस्याओं के समाधान के दौरान पाठ्यक्रमकर्ता को दो महत्त्वपूर्ण समस्याओं का सामना करना पड़ता है। पहला संगठन एवं उद्देश्यों के बारे में स्थिति या उत्तर है, यह कहने की सम्भावना है इत्यादि। शैक्षिक विकास कार्यक्रम में इसके उत्तर का प्रयोग हमारे लिए महत्त्वपूर्ण समस्या है।

दूसरा यह है कि पाठ्यक्रम शोध में एक लेखक में वैकल्पिक इच्छा का अधिक होना निर्धारित करता है कि पाठ्यक्रम निर्णय का महत्त्वपूर्ण क्षेत्र यही है, इसलिए हमें इसका वर्णन करने का प्रयास करना चाहिए साथ ही प्रक्रिया एवं विधि की जाँच करनी चाहिए, जिसके माध्यम से विश्वासपूर्वक निर्णय का क्षेत्र बनाया जा सके।

पाठ्यक्रम में क्षेत्र का अध्ययन निम्नलिखित है

- शैक्षणिक उद्देश्यों का प्रमुख क्षेत्र और शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक एवं विद्यार्थियों द्वारा उसका प्रयोग
- अधिगम अनुभव का संगठन एवं समस्याओं का चयन
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के अन्तरंग भाग में मूल्यांकन की समस्या होती है।
- शैक्षणिक कार्यक्रम की कुल पाठ्यक्रम योजना या पाठ्यक्रम संरचना की प्रकृति की सामान्य समस्या।

ये इस तथ्य को दर्शाते हैं कि इस प्रकार की समस्या कोई नवीन नहीं है, बल्कि सार्वभौमिक है। पाठ्यक्रम में उल्लेखित पपण्या व्यापक एवं सार्वभौमिक हैं यह सर्वविवादित है। हालांकि ये पाठयक्रम पर्व शिक्षण में निरन्तर जिम्मेदारीपूर्ण एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अन्तर्गत पपी अध्यापक दिन-प्रतिदिन अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हैं।

कुछ गम्भीर परिस्थितियों में शिक्षकों को अनिवार्य रुप से अपना पूर्ण सहयोग देना चाहिए, परन्तु दुर्भाग्यवश, ये लोग भी लथु स्तरीय शोथ क्षेत्र को प्रदर्शित करते हैं, जहाँ शोध किया जा रहा है। पाठ्यक्रम शोध के माध्यम से इस संशोधन किए जाते हैं। पाठ्यक्रम अनुसन्धान उत्पन्न करने हेतु फ्रेमवर्क प्रस्तावित किया जाता है। डनकिन और बिडल का शिश्रण चर का मॉडल बीयूचैप्प के पाठ्यक्रम प्रणाली नियोजन कार्यों के साथ संश्लेषित किया गया है।

www.studyofeducation.com

पाठ्यचर्या अध्ययनों में शोध के प्रकार

पाठ्यचर्या अध्ययनों में शोध कार्य एक महत्त्वपूर्ण कार्य माना जाता है। प्रत्येक शोधकर्ता द्वारा अपने शोध कार्य की योजना बनाने तथा उसे क्रियान्वित करने में पूर्व अपनी समस्या से सम्बन्धित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का सावधानीपूर्वक अध्ययन किया जाता है। तत्पश्चात् अलग-अलग चरणों में शोध प्रक्रिया को प्रारम्य करता है। उपयुक्त अध्ययन के लिए शोधकर्ता को पुस्तकालय तथा उसके अनेक साधनों से पर्याप्त परिचय भी आवश्यक है। तभी विशिष्ट ज्ञान हेतु प्रभावी शोध सम्भव हो सकता है।

पाठ्यक्रम अध्ययनों में शोध के प्रकार से तात्पर्य उस अनुसन्धान से है जो पाठ्यक्रम के क्षेत्र में शिक्षण सम्बन्धित कार्यों के लिए किया जाता है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य, पाठ्यक्रमों विभिन्न आयामों, पहलुओं, प्रक्रियाओं आदि के विषय में नवीन ज्ञान सृजन, वर्तमान ज्ञान की सत्यता का परीक्षण, उसका विकास एवं भावी योजनाओं की दिशाओं का निर्धारण किया जाता है।

टैवर्स ने पाठ्यक्रम सम्बन्धित शिक्षा अनुसन्धान को एक ऐसी क्रिया माना, जिसका उद्देश्य सम्बन्धित विषयों पर खोज करके ज्ञान का विकास एवं संगठन करना होता है। उनके अनुसार शिक्षा के विभिन्न पहलुओं के विषय में संगठित वैज्ञानिक ज्ञान पुंज का विकास अत्यन्त आवश्यक माना जाता है। इसी के आधार पर अध्यापक यह निर्धारित करते हैं कि छात्रों में वांछनीय व्यवहारों के विकास के लिए किस प्रकार से पाठ्यक्रमों का निर्माण करना आवश्यक है।

बौबिट ने पाठ्यचर्या को सामाजिक इंजीनियरिंग का क्षेत्र बताया। उनके अनुसार पाठ्यक्रम के निर्माण में दो लक्षणों का विशेष रुप से उल्लेख किया जाता है। वैज्ञानिक विशेषज्ञ अपने इस विशेष ज्ञान के आधार पर कि समाज के वयस्क सदस्यों में क्या गुण होने चाहिए एवं कौन-से अनुभव ऐसे गुण उत्पन्न करेंगे, जो पाठ्यक्रमों के निर्माण हेतु न्यायसंगत होंगे, पाठ्यक्रम के ऐसे कार्य अनुभव के रुप में परिभाषित हैं, जो छात्र को अपेक्षित वयस्क बनने के लिए उनके पास होने चाहिए।

बौबिट ने पाठ्यक्रम को लोगों के चरित्र निर्माण करने वाले कार्यों एवं अनुभवों की ठोस वास्तविकता के स्थान पर एक आदर्श के रुप में परिभाषित किया है। परन्तु जॉन डीवी के विचार इससे अलग थे। हालाँकि बौबिट और डीवी के पाठ्यक्रम के सन्दर्भ में आदर्शवादी समझ शब्द के वर्तमान प्रतिबन्धित उपभोगों से अलग है।

पाठ्यक्रम के लेखक एवं शोधकर्ता इसे पाठ्यक्रम शोध के दौरान एकसमान तथ्यपरक समझ के रुप में देखते हैं। शोध एक प्रक्रिया है, जिसका मुख्य उद्देश्य समस्याओं का अध्ययन कर नवीन तथ्य की खोज, नवीन सत्यों की स्थापना एवं नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना है। शोध को एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया माना जाता है। इससे नवीन ज्ञान में निरन्तर वृद्धि होती है। सभी प्रकार शोध समस्या केन्द्रित होते हैं।

www.studyofeducation.com

सामान्यतः पर पाठ्यक्रम शोध को तीन भागों में विभाजित किया जाता है
1. मौलिक पाठ्यक्रम शोध
2. व्यावहारिक पाठ्यक्रम शोध
3. क्रियात्मक पाठ्यक्रम शोध

रस्क के अनुसार, "शोध एक दृष्टिकोण है, जाँच-परख का तरीका और मानसिकता है।"

शोध को प्रेरित करने वाले प्रमुख तत्त्वों में शामिल हैं

- अज्ञात को जानने की जिज्ञासा।
- वर्तमान गहन समस्या के कारणों और प्रभावों को जानने तथा समझने की इच्छा।
- भावुकता से परे होकर वास्तविक कारणों को समझना एवं जानना।
- नवीन खोजें और पुरानी वैज्ञानिक प्रक्रियाओं या विधियों को जाँचने की इच्छा।

शोध का महत्त्व

शोध के महत्व निम्नलिखित हैं

- शोध ज्ञान का विस्तार करता है।
- मानव समाज की समस्याओं के समाधान का रास्ता सुझाता है।
- बदलती परिस्थितियों में तथ्यों की व्याख्या और पुनर्व्याख्या सिखाता है।
- शोध से तार्किक और समीक्षा की दृष्टि मिलती है।

शोध के महत्त्व का विवरण निम्न है

मौलिक शोध

इसे विशुद्ध पाठ्यक्रम शोध भी कहा जाता है। मौलिक शोध के अन्तर्गत पाठ्यक्रम के गुणात्मक सुधार पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके अन्तर्गत नए सिद्धान्त की स्थापना पर विशेष बल दिया जाता है। मौलिक शोध के अन्तर्गत पाठ्यक्रम को अधिगममुक्त बनाया जाता है, ताकि छात्र तथ्यों को सरलता से सीख सकें। ऐसे शोध मुख्यतः छात्र केन्द्रित होते हैं, ताकि छात्रों को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन किया जा सके। इस पाठ्यक्रम के निर्माण में अध्यापकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। अध्यापक विभिन्न दृष्टिकोणों से सभी परिस्थितियों का अध्ययन कर, आवश्यकता के अनुकूल पाठ्यक्रम में विषयों को सम्मिलित किया जाता है। पाठ्यक्रम में ऐसे विषयों या ज्ञान को शामिल किया जाता है, जो समकालीन हों एवं छात्रों के हितबद्ध हों।

शिक्षण की गुणात्मकता में प्रभावी एवं प्रासंगिक परिवर्तन के लिए मौलिक शोध प्रमुख भूमिका निभाता है। इससे पाठ्यक्रम को अभिरुचिपूर्ण बनाया जाता है, ताकि अधिगम के प्रति छात्रों में उद्दीपन की भावना उत्पन्न हो सके। मौलिक शोध के अन्तर्गत सर्वप्रथम समस्याओं की पहचान की जाती है। तत्पश्चात् समीक्षा कर, समस्याओं के समाधान हेतु उचित समाधान की खोज की जाती है।

मौलिक शोध सैद्धान्तिक मूल्यों पर आधारित शोध प्रक्रिया है, जिसके अन्तर्गत नवीन सिद्धान्तों का सृजन एवं पुराने सिद्धान्तों की समीक्षा करके उसमें परिवर्तन किए जाते हैं।

व्यावहारिक पाठ्यक्रम शोध

इस शोध के अन्तर्गत किसी विशेष समस्या के समाधान हेतु शोध प्रक्रिया पूरी की जाती है। व्यावहारिक शोध के अन्तर्गत पाठ्यक्रम में विशेष सुधार किया जाता है, ताकि शिक्षणकार्य में छात्रों की बुनियादी समस्याओं का निदान हो सके। व्यावहारिक शोध प्रक्रिया द्वारा पाठ्यक्रम में मूलभूत परिवर्तन किया जाता है, ताकि अधिगम हेतु उसे सरल बनाया जा सके।

www.studyofeducation.com

- इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम के स्वरुप में मौलिक बदलाव किया जाता है।
- जटिल तथ्यों को सरल एवं सामान्य बनाया जाता है, जटिल विषय वस्तु के स्थान पर ऐसी विषय-वस्तु को शामिल किया जाता है, जो अध्यापक एवं छात्र दोनों के लिए प्रासंगिक हो।
- प्रायोगिक प्रणाली को अपनाने हेतु विशेष बल दिया जाता है।
- इस शोध प्रणाली द्वारा रचनात्मकता पर विशेष बल दिया जाता है।
- प्रासंगिक तथ्यों का संकलन तथा विवेकपूर्ण विश्लेषण और अध्ययन पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- आँकड़ों तथा तथ्यों का संकलन किया जाता है, तथ्यों का विश्लेषण किया जाता है।
- शोध प्रतिवेदन तैयार किया जाता है, जिसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम को नवीन स्वरुप प्रदान किया जाता है।
- व्यावहारिक शोध प्रणाली अन्तर्गत अनौपचारिक शिक्षण को भी, शिक्षण प्रणाली में शामिल करने सम्बन्धी योजना बनाई जाती है।

क्रियात्मक शोध

इस शोध का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है, जिसके द्वारा अभ्यासकर्ता अपने निर्णय एवं क्रियाओं के मार्गदर्शन, संशोधनों तथा मूल्यांकन करने हेतु अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करता है। इस शोध का मूलमन्त्र है-पाठ्यक्रम की समस्या हमारी है और समाधान भी हमारा है। प्रोफेसर स्टीफन एम कोरे को क्रियात्मक शोध का सृजनकर्ता माना जाता है। कोरे का मानना था कि अनुसन्धान ही वह प्रक्रिया है, जिसके आधार पर परिवर्तन लाया जा सकता है।

www.studyofeducation.com

पाठ्यक्रमों में ऐसा शोध 'ऑन द स्पॉट' या 'ऑफ द स्पॉट' होता है। क्रियात्मक शोध करते समय अध्यापक एवं छात्र दोनों के हितों का ध्यान रखना आवश्यक है। इस शोध प्रक्रिया में पाठ्यक्रमों में सुधार ठीक उसी समय किया जाता है, जब समस्या का अनुभव किया जाता है अथवा बाद में भी किया जाता है। इसके लिए व्यापक विचार-विमर्श करना आवश्यक माना जाता है। पाठ्यक्रम में परिवर्तन लाने हेतु क्रियात्मक शोध को महत्त्वपूर्ण विधि माना जाता है।

क्रियात्मक शोध एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें अध्यापक अपनी कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं का आकलन करता है तथा बेहतर कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं की खोज करता है। क्रियात्मक शोध प्रक्रिया द्वारा पाठ्यक्रम को अधिक गुणात्मक एवं प्रभावी बनाने में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त विवरणात्मक, मात्रात्मक, गुणात्मक विश्लेषणात्मक एवं ऐतिहासिक शोध भी पाठ्यक्रम शोध में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विश्लेषणात्मक शोध के अन्तर्गत पाठ्यक्रम को व्यापक विश्लेषणात्मक कर आवश्यकतानुसार शोध कार्य किया जाता है। विश्लेषण के माध्यम से तथ्यों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए जाते हैं।

विवरणात्मक शोध प्रक्रिया के अन्तर्गत पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत किया जाता है। विवरण प्रस्तुती के आधार पर किया जाने वाला शोध प्रक्रिया विवरणात्मक शोध कहा जाता है।

गुणात्मक शोध भी पाठ्यक्रम शोध का एक प्रकार माना जाता है, इसके अन्तर्गत, पाठ्यक्रम में गुणात्मक सुधार किया जाता है।

महत्त्वपूर्ण (ऐतिहासिक) तथ्यों का विश्लेषण कर पाठ्यक्रम में किया जाने वाला परिवर्तन, ऐतिहासिक शोध कहा जाता है। इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए जाते हैं। शोध के दौरान ऐतिहासिक पहलुओं एवं परिणामों पर भी विशेष ध्यान दिया जाता है। इसमें पूर्ववर्ती विषयों का विस्तृत मूल्यांकन किया जाता है।

www.studyofeducation.com